आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 सितम्बर, 2013
वर्ष : 71 ★ अंक : 09 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 सितम्बर, 2013 ★ भाद्रपद, 2070

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

आचार्यप्रवर हीराचन्द्र दीक्षा अर्द्धशताब्दी

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'॥

जय गुरु हीरा

जय गुरु हस्ती

जय गुरु मान

नीति और ईमानदारी से प्राप्त धन समाज में प्रतिष्ठा दिलाता है।

- आचार्य श्री हीरा

U TURN

अहिंसा तीर्थ अभियान

मानवीय आहार शाकाहार

बीमारियों को निमंत्रण मांसाहार से

हृदय रोग, किडनी, माइग्रेन तथा अनेकों दोष
मानसिक बीमारियों के मुख्य कारणों में से
एक है मनुष्य का मांसाहारी होना

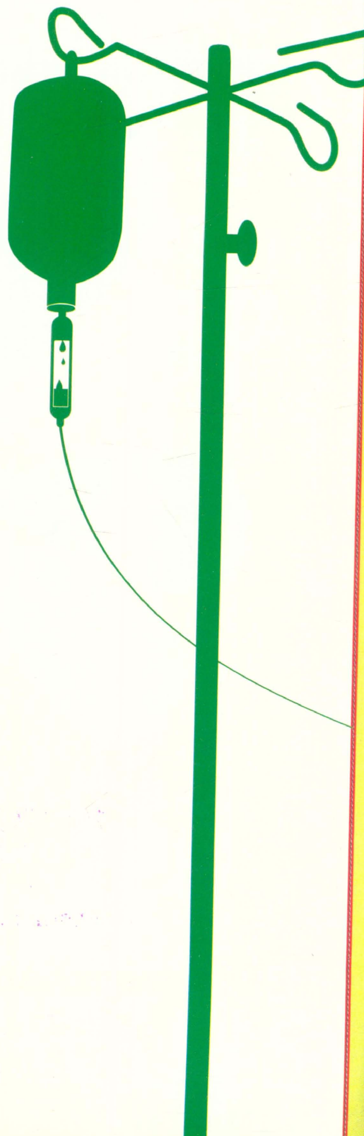

शाकाहार अपनाओ,
संसार में सुख-शांति बरसाओ

रतनलाल सी. बाफना
शाकाहार प्रचारक

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

जलगाव • औरंगाबाद • नासिक

जनहितार्थ प्रकाशित

Jai Guru Hasti

Jai Guru Heera *Jai Guru Maan*

**'पारस' के स्पर्श से, लोहा भी सोना बन आता है।
'स्वप्निका' को शीघ्र भरें, क्योकि उससे
मिथ्यात्वी भी मोक्षार्थी बन जाता है।
परिष्कृत हो पुरुषार्थी बन जाता है।
पुरस्कृत हो प्रोत्साहित बन जाता है....**

DP Exports is leading Indian firm specializing in import, export and manufacture of diamonds and jewellery. We offer a wide range of rough diamonds, along with a specialization in the field of manufacturing polished diamonds and jewellery.

timeless jewels
unmatched quality
flawless craftsmanship

ACHARYA SRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR
SRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA
Koba, Gandhinagar-382 009
Phone: (079) 23276252, 23276204-0

Dharamchand Paraschand Exports

1301, Panchratna, Opera House, Mumbai - 400 004. India.
t: +91 22 2363 0320 / +91 22 4018 5000
f: +91 22 2363 1982 email : dpe90@hotmail.com

30528

।। महावीराया नमः ।।

जय गुरु हीरा जय गुरु हस्ती जय गुरु मान

जिस दिन श्रद्धा जग जायेगी, अनमोल-दुर्लभ परम अंग रूप मानव जीवन को समर्पण करते देर नहीं लगेगी। श्रद्धा है तो प्राण अर्पण भारी नहीं लगेगा।

-आचार्य श्री हीरा

With Best Compliments From :

S. .D. GEMS &
SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga
Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

202, Ratna Deep, Behind Panchratna, 78- J.S.S. Road, Mumbai- 400 004
Ph. : (O) 022-23684091, 23666799 (R) 022-28724429
Fax : 022-40042015 Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Jai Guru Heera Jai Guru Hasti Jai Guru Maan

गुरुद्वय दीक्षा का स्वर्णिम हार, आई 'बंसत' समान बहार।
अनुमोदनीय 'स्वप्निका' सुखकारी, करती जन-जन का उद्धार ।।

With Best Compliments from :

Basant Jain & Associates, Chartered Accountants
BKJ & Associates, Chartered Accountants
BKJ Consulting Private Limited
Megha Properties Private Limited
Ambition Properties Private Limited

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines, Mumbai-400020

बसंत के. जैन

अध्यक्ष : श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

Tel. : (O) 22018793, 22018794 (R) 28810702

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 **संरक्षक**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 **संस्थापक**

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 **प्रकाशक**

विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 **प्रधान सम्पादक**

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 **सह-सम्पादक**

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-21/2012-14
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

एसणासमिओ लज्जू,
गामे अणियओ चरे।
अप्पमत्तो पमत्तेहिं,
पिंडवायं गवेसए।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 6.17

एषणासमित लज्जायुत मुनि,
अनियत ग्रामादिक में विचरे।
हो अप्रमत्त गृहवासी से,
वह पिण्डपात की खोज करे।।

सितम्बर, 2013
वीर निर्वाण संवत्, 2539
भाद्रपद, 2070

वर्ष 71 अंक 9

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
आजीवन देश में : 1000 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
आजीवन विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	लोभ का विज्ञान	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	11
	वाग्वैभव(19)	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	12
प्रवचन-	रौद्र ध्यान की रौद्रता	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	13
	दया सुखां री बेलडी	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	20
इतिहास-	स्थानकवासी परम्परा की विचारधारा	-श्री सौभाग्यमुनिजी	29
शोधालेख -	जैन साहित्य में संगीत	-उपाध्याय श्री रमेशमुनि जी	38
	पंच समवाय सिद्धान्त : एक समीक्षा(3)	-डॉ. श्वेता जैन	42
अध्यात्म -	जीवन-मरण से मुक्ति की मांग क्यों?	-श्री रणजीतसिंह कूमट	48
प्रासङ्गिक -	चातुर्मास प्रवेश	-डॉ. दिलीप धींग	54
युवा-स्तम्भ -	स्वयं की नज़रों में ऊपर उठें	-सुश्री शिवानी मेड़तवाल	57
दीक्षा-अर्द्धशती-	आगमादर्श मेरे आराध्य देव! (3)	-महासती श्री यशप्रभा जी म.सा.	60
	आगमचक्षु संघनायक (3)	-महासती श्री पद्मप्रभा जी म.सा.	63
नारी-स्तम्भ -	परिवार : जीवन-निर्माण का आधार (2)	-उपाध्यायश्री प्रवीणऋषि जी	66
तत्त्व-ज्ञान -	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (83)	-श्री धर्मचन्द जैन	71
स्वास्थ्य-विज्ञान -	बिना दवा हृदय रोगों का प्रभावशाली उपचार	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	74
बाल-स्तम्भ -	कर्मफल-भोग	-आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा.	83
कविता/गीत-	चले जा रहे हैं	-श्री निर्मल जामड़	28
	मारवाड़ की तपस्विनी	-श्रीमती कमला सुराणा	56
	बड़ी धर्म में शक्ति है	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	59
विचार-	जानें शुद्ध शब्द	-सम्पादक	47
	साधना में बाधक और सहायक	-संकलित	70
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	86
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	88
परिणाम-	आ.शिक्षण बोर्ड का परीक्षा परिणाम		115
	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता परिणाम (38-39)		117
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	122

सम्पादकीय

लोभ का विज्ञान

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

लोभ और सन्तोष में सदैव द्वन्द्व चलता रहा है। जो भौतिक विकासवादी हैं वे सन्तोष को विकास में बाधक मानते हैं तथा असन्तोष को कुछ नया करते रहने का प्रेरक घटक मानते हैं। अध्यात्मवादी कहते हैं कि लोभ तो पाप का मूल है, वह कभी सुख एवं शान्ति का आधार नहीं बन सकता। लोभ तो पापस्वरूप है तथा वह व्यक्ति से अनेकविध पाप कराता रहता है एवं अन्त में मनुष्य ठगा सा अनुभव करता है। जो हमें बाह्य सम्पदा प्राप्त है, लोभी उसके भी सुख भोग से वंचित रहता है तथा अपनी शक्ति का व्यय लोभ की पूर्ति में करता रहता है। वह स्वास्थ्य, पारस्परिक सम्बन्धों एवं अपने हित की भी परवाह नहीं करता।

लोभ क्यों उत्पन्न होता है? उसके विज्ञान को जानना आवश्यक है। अनुकूल इच्छाओं की पूर्ति होना प्रत्येक प्राणी को अच्छा लगता है तथा प्रतिकूल परिस्थितियों से बचने की वह सदैव वांछा रखता है। अनुकूल इच्छाएँ जब पूर्ण होती हैं, तो वह स्वयं को सुखी अनुभव करता है। इस सुख की वृद्धि के लिए उसमें पुनः नई इच्छा का जन्म होता है, जिसकी पूर्ति के लिए वह उत्साह से प्रयत्नशील होता है और उसके फल में पुनः अनुकूल सुख चाहता है। सुख प्राप्ति की निरन्तर वांछा या संज्ञा ही लोभ कही जाती है। इस लोभ से मनुष्य ही नहीं सभी प्राणी ग्रस्त हैं।

यद्यपि सभी प्राणी लोभ से आविष्ट हैं, किन्तु मनुष्य एक विचारशील प्राणी है, जो लोभ पर विजय भी प्राप्त कर सकता है तथा उसकी पराकाष्ठा को भी छू सकता है। सुख का यह प्रलोभन ही धन-सम्पत्ति आदि के संग्रह अथवा उनके परिग्रह को जन्म तथा संरक्षण देता है। इस लोभ की प्रक्रिया में अनेक दोष होते रहते हैं। सर्वप्रथम तो अनुकूलता की प्रतीति के कारण मनुष्य उसको उत्पन्न करने में निमित्तभूत वस्तुओं, व्यक्तियों अथवा परिस्थितियों के प्रति राग करता है। यह राग व्यक्ति के चित्त को उन वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति आदि में फँसाए रखता है। इसे ही आसक्ति कहा जाता है। यह राग का ही परिणाम है। जब कोई वस्तु, व्यक्ति एवं परिस्थिति प्राणी को दुःखोत्पादक लगती है अथवा प्रतिकूल लगती है तो वह उसके प्रति द्वेष करता है, वह उससे किनारा करना चाहता है। यदि वह स्थिति न चाहने पर भी आती है, तो व्यक्ति दुःखी होता है, बेचैन होता है, उसके प्रति क्रोध करता है, उसे अपने अस्तित्व पर हमला समझता है। मनुष्य तब इस सत्य से अनभिज्ञ

होता है कि सदैव मनचाहा नहीं होता है तथा अनचाहा लाख टालने पर भी आ टपकता है।

मनचाहा होता रहे तथा अनचाहा कभी न हो, इस धारणा के कारण प्राणी वस्तु, व्यक्ति एवं परिस्थिति के निमित्तों से उत्पन्न सुख-दुःख के चक्र में उलझा रहता है। उसे यह आशा बनी रहती है कि कभी तो ऐसा दिन आएगा जब सबकुछ मनचाहा होता रहेगा। उसकी ऐसी मान्यता को ज्ञानी पुरुष मूढ़ता कहते हैं। यह मूढ़ता मोह की सूचक है। मोह दो प्रकार का होता है- एक दृष्टि मोह और दूसरा आचरण सम्बन्धी मोह। दृष्टि मोह को दूसरे शब्दों में मिथ्यात्व अथवा गलत धारणा/मान्यता कहा जा सकता है। इस गलत धारणा के कारण ही सारे दोष उत्पन्न होते हैं। लोभ भी इसी धारणा के कारण ही उत्पन्न होता है। दृष्टि मोह का ही फल क्रोध, मान, माया और लोभ हैं। शोक, भय, जुगुप्सा आदि भी इसी के परिणाम हैं। लोभ सबसे अधिक प्रभावशाली है, क्योंकि यह अन्य सब कषायों के बाद छूटता है।

दृष्टि मोह के कारण ज्ञान सदैव अज्ञान ही बना रहता है, वह कभी सम्यक् ज्ञान नहीं बन पाता। मनचाहा होता रहेगा एवं अनचाहा कभी नहीं होगा, ऐसा सोच अज्ञान का सूचक है। इस अज्ञान के कारण इन्द्रियजन्य सुखों की लालसा बनी रहती है। मनुष्य उस सुख की आशा के कारण वस्तु, व्यक्ति आदि के पराधीन हो जाता है। पराधीनता को सुख नहीं कहा जा सकता। कई चिन्तक मनुष्य को आशावादी बने रहने की प्रेरणा करते हैं, क्योंकि मनुष्य कई बार अपना मनचाहा न होने पर उदास एवं निराश हो जाता है तथा जीवन में टूटा हुआ अनुभव करता है। जिजीविषा है तो जीवन की धारा चलती रहती है, सुख-दुःख दोनों का आस्वादन वह करता रहता है। दुःख के पश्चात् सुख आने की आशा ही व्यक्ति को जीवन से जोड़े रखती है। आशावादी चिन्तक उसी सुख की आशा का प्रेरक तत्त्व देकर प्राप्त दुःख के बोझ को कम करते हैं। उनका चिन्तन स्थूल एवं सांसारिक प्राणियों के व्यवहार से सम्बद्ध है। अध्यात्मवादी चिन्तक सुख एवं दुःख के वास्तविक स्वरूप को प्रस्तुत करते हैं तथा इनके चक्र से निकलकर शाश्वत सुख अथवा परमानन्द को प्राप्त करने की प्रेरणा करते हैं। वे इन्द्रियजन्य सुखों में आसक्ति के त्याग को इस परम आनन्द का साधन प्रतिपादित करते हैं।

कोई कहे कि अध्यात्मवादी महापुरुष भी शाश्वत सुख का प्रलोभन देते हैं तो यह मानना उचित नहीं है, क्योंकि अध्यात्मवादी पुरुष व्यक्ति की धारणा को सही करने का कार्य करते हैं। उसकी दृष्टि को सम्यक् बनाने की प्रेरणा करते हैं। उनकी मान्यता है कि न मनचाहा सदैव होता है और न अनचाहा टलता है। इसलिए दोनों को परिवर्तनशील समझकर मनुष्य को इनमें समभाव रखना चाहिए। समभाव की साधना के द्वारा वस्तुजन्य

सुख-दुःख की मान्यता को तोड़ा जा सकता है तथा उससे अप्रभावित रहा जा सकता है। आत्मगुणों के विकास का यही मूल आधार है। इस प्रकार का जीवन होने पर बाह्य साधनों से उत्पन्न होने वाले सुख-दुःख व्यक्ति को प्रभावित नहीं करते तथा वह सदैव हर परिस्थिति में अपने आनन्द को अक्षुण्ण रखने में समर्थ होता है, जिसे शाश्वत सुख अथवा वेदान्त की भाषा में परम आनन्द कहा जाता है। परम आनन्द का आकर्षण होने मात्र से कोई उसे प्राप्त नहीं कर सकता, जब तक कि वह आन्तरिक दृष्टि सम्बन्धी मोह को तोड़ नहीं देता है। दृष्टि के मोह को तोड़ने पर ही सत्य का साक्षात्कार होता है।

जब मनुष्य को किसी एक कार्य को करने से लाभ होता है तो उसका लोभ बढ़ता जाता है- **लाहा लोहो पवड्ढइ**। किन्तु व्यापारी यह जानता है कि कभी लाभ भी होता है तो कभी हानि भी। वह दोनों स्थितियों में सहिष्णुता का विकास करता है, अर्थात् लाभ में मद नहीं करता तथा हानि में दुःखी नहीं होता है तो वह कदाचित् लोभ पर भी नियन्त्रण करने में समर्थ होता है। लोभ के कारण बड़े-बड़े काण्डों में लोग फँसे हुए हैं। भ्रष्टाचार भी इस लोभ की प्रवृत्ति के कारण बढ़ता है। लोभ के कारण व्यक्ति अन्धा हो जाता है तथा ठगों के चक्कर में फँसकर अपना मूल्यवान धन लुटा देता है। इस लोभ में व्यक्ति का अज्ञान कारण है।

सारी दुनिया विकास के नाम पर लोभ को प्रोत्साहन दे रही है। लोभ की कोई सीमा नहीं होती, वह आगे से आगे बढ़ता जाता है। लोभ के नशे के कारण व्यक्ति दुःख के सत्य से विमुख रहता है। लोभ से सुख की प्रतीति भले ही होती हो, किन्तु उसका अन्तिम परिणाम दुःख है, सुख-शान्ति नहीं। फिर भी भ्रम के कारण व्यक्ति लोभ को सुख एवं शान्ति का आधार समझता है। इसीलिए लोभ के वशीभूत होकर व्यक्ति धन-संग्रह, वस्तु-संग्रह के लिए लालायित रहता है। यह लोभ ही है जो मानवजाति में परस्पर संघर्ष को बढ़ावा देता है। इसके कारण हर व्यक्ति दूसरे को अपना शिकार बनाना चाहता है। यदि कोई लोभ की पूर्ति में उससे आगे निकलता है तो उसे उसके प्रति द्वेष उत्पन्न होता है। उसका लोभ जनित सुख दुःख में बदल जाता है। वह हिंसापरक अथवा अनीतिपूर्ण उपायों के माध्यम से आगे निकलने के लिए उसकी टांग खींचने की कोशिश करता है। लोभी व्यक्ति अपनी आवश्यकता पर ध्यान नहीं देता कि उसकी वास्तविक जरूरत कितनी है। वह सिर्फ लोभान्ध होता है। जिनके लिए संग्रह करता है, वे भी उसका साथ देंगे या नहीं, इसका भी वह विचार नहीं करता। जैन कर्मसिद्धान्त कहता है कि अपने कृत कर्मों का फल स्वयं को भोगना होता है। इसलिए परिवार जनों के नाम पर क्रूर पापाचरण करना स्वयं को संकट में डालना है।

लोभ का अन्त ज्ञानपूर्वक किये गए संतोष से होता है। लोभ पर यदि कहीं भी अंकुश न लगाया जाए तो संतोष से मिलने वाले सुख एवं शान्ति का आस्वादन कभी नहीं हो सकेगा।

आगम कहता है कि क्रोध प्रेम का नाश करता है, मान विनय का नाश करता है, माया मित्रता का नाश करती है तो लोभ इन सबका नाश करता है। लोभी व्यक्ति से कोई प्रेम नहीं करना चाहता, क्योंकि उसे सदा ठगे जाने की आशंका बनी रहती है। वह लोभ के वशीभूत होकर विनय, सरलता आदि सद्गुणों का नाटक तो कर सकता है, किन्तु उन्हें जीवन में वास्तविक स्थान नहीं देता। लोभी व्यक्ति के परिचित तो अनेक हो सकते हैं, किन्तु उसकी दूसरों से हितकारी मित्रता नहीं हो पाती। उसके लोभ के कारण दूसरे उसे गाली निकालते हैं, एवं बचना चाहते हैं।

जिस पर लोभ की प्रवृत्ति हावी होती है वह हिंसा, झूठ, चोरी, परिग्रह आदि दोषों में उलझ जाता है इसलिए 'लोभमूलानि पापानि' वाक्य भी कहा गया है।

सुख एवं शान्ति की आवश्यकता सबको प्रतीत होती है, उसके लिए भौतिक संसाधन भी किसी सीमा तक सहायक हो सकते हैं, किन्तु उन साधनों को ही सुख-शान्ति का आधार मान लेना एक भ्रम है। इस भ्रम से न केवल एक व्यक्ति, अपितु सम्पूर्ण विश्व के देश ग्रस्त हैं। वे मनुष्य की इच्छाओं को अधिकाधिक बढ़ाकर उसे सुख-शान्ति का स्वप्न दिखा रहे हैं, जबकि वास्तविक सुख-शान्ति की अनुभूति ज्ञानपूर्वक इच्छाओं के नियन्त्रण में है। तृष्णा कभी सुख का आधार नहीं हो सकती, इसीलिए कहा है-

सन्तोषी सदा सुखी, दुःखिया तृष्णावान्।
भावे तो गीता पढ़ो, भावे पढ़ो पुराण।।

लोभ पर लगाम तभी लग सकती है, जब हम अपने चित्त का एवं मनोदशा का अवलोकन करना प्रारम्भ करें तथा लोभ से होने वाली हानियों की सारिणी बनाएँ। लोभ का भाव मानव को अशान्त बनाता है, जबकि उसके हानि-लाभ का मूल्यांकन करने के लिए चित्त का शान्त होना आवश्यक है। चित्त एवं मनोदशा का अध्ययन तभी हो सकता है जब हम आत्मिक शान्ति का अनुभव करें। इसके लिए वीतराग ध्यान साधना का अभ्यास उपयोगी है। लोभ क्यों होता है तथा उस पर लगाम क्यों एवं कैसे लगायी जाती है, इसका चिन्तन तटस्थ बुद्धि से करने पर समाधान स्वतः मिलता जाएगा तथा लोभ की प्रवृत्ति पर अंकुश आ जाएगा। लोभ का यह नियन्त्रण पाँचों इन्द्रियों एवं मन के विषयों पर होता जाएगा। ★

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

णालं ते तव ताणाए वा सरणाए वा, तुमं पि तेसिं णालं ताणाए वा सरणाए वा।- आचारांग, प्रथम श्रुतस्कन्ध, अध्ययन 2, उद्देशक 4

अर्थ-वे परिवारजन तुम्हें त्राण देने में, शरण देने में समर्थ नहीं हैं। तू भी उन्हें त्राण या शरण देने में समर्थ नहीं है।

विवेचनः- मानव सामाजिक प्राणी है। यहाँ पर सब एक-दूसरे के सहयोग से ही जीते हैं। बच्चा जन्म लेते ही माता के आश्रित रहता है। थोड़ा बड़ा होने पर उसे पिता, दादा, दादी आदि सबके सहयोग की आवश्यकता रहती है। इसी प्रकार शिक्षा प्राप्त करने में शिक्षक एवं समाज का सहयोग रहता है। अकेले जीवनयापन करना कठिन है। वृद्धावस्था आने पर व्यक्ति को पुत्र-पौत्रों या परिवारजनों के सहयोग की अपेक्षा रहती है।

यह सब होते हुए भी आचारांग सूत्र साधक को सावधान करता है कि तू यह मत समझ कि परिवारजन तुम्हारा हर जगह, हर बार, हर तरह का त्राण कर सकेंगे, तुम्हें सर्व प्रकार की शरण दे सकेंगे। उनकी अपनी सीमाएँ हैं एवं तुम्हें अपने कर्मों के अनुसार फलभोग करना है। आचारांग सूत्र कहता है कि सबके सुख-दुःख अपने-अपने हैं। स्वकृत कर्मों का फल स्वयं को भोगना होता है। कोई यह अभिमान न करे कि वह किसी को त्राण या शरण देकर किसी को सुखी बना देगा और कोई यह भी अपेक्षा न करे कि उसे हर परिस्थिति में परिजन, धन आदि त्राण या शरण दे सकेंगे। अशरणभावना का यह सूत्र हमें आचारांग सूत्र में प्राप्त होता है। यह संसार की कामना से व्यक्ति को विरक्त एवं अनासक्त बनाने वाला सूत्र है। समाज में सहयोग का भाव रहते हुए भी संसार में न तो आसक्ति हो और न ही अपेक्षा हो, तभी बन्धन से विमुक्ति संभव है। सामाजिक भावना को आधार बनाकर अथवा परिवार के त्राण हेतु व्यक्ति क्रूर कर्म करता है, उन क्रूर कर्मों का फल उसे ही भोगना पड़ता है, परिवारजन को नहीं। अतः परिवार का नाम लेकर अन्याय, अनीति के साथ धन संग्रह करना तथा पाप कर्म करना उचित नहीं। कोई इस भरोसे संसार में आसक्ति बनाए रखता है कि उसकी कामनाओं, वासनाओं या इच्छाओं को कोई संरक्षण देकर उसको सुखी बनाता रहेगा तो आगम की दृष्टि में यह चिन्तन उचित नहीं है। आचारांग का उपर्युक्त वचन दो प्रकार के संदेश दे रहा है- (1) संसार से त्राण, शरण की आशा रखना उचित नहीं, (2) अपने को संसार में त्राण देने वाला एवं शरण देने वाला मानना उचित नहीं। त्राण एवं शरणदाता अरिहंत सिद्ध, साधु एवं धर्म हैं।- **सम्पादक**

अमृत-चिन्तन

वाग्वैभव (19)

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

- "मैंने बहुत खाया, बहुत बिगाड़ा है, आज मुझे अवसर मिला है तो मैं कुछ दूँ" ऐसा सोचने वाला द्रव्य को कर्म-निर्जरा में लगाता है।
- एक बार के सुपात्र दान से जन्म-मरण घटाया जा सकता है, जंगल में मंगल हो सकता है, सूखा बाग हरा-भरा हो सकता है।
- आकांक्षा और नामवरी को छोड़कर निर्जरा के लक्ष्य से दें।
- विशुद्ध भावना से एक बार का दिया हुआ निहाल कर देता है।
- देने वाला गद्‌गद् और लेने वाला कृतकृत्य हो जाए वह है दान।
- लाखों रुपये देकर भी उसका फल नहीं मिलता है और भावना से दिया गया दान अक्षय हो जाता है।
- मधुर वचन के दान से वैर-शमन हो जाता है और शत्रु मित्र बन जाता है।
- जहाँ दया और अनुकंपा नहीं है, वहाँ संघ दीप्तिमान नहीं हो सकता।
- नवकारसी से लगाकर मासखमण आदि जितने भी तप हैं, वे सब रात्रिभोजन त्याग से ही प्रारम्भ माने गये हैं।
- रात में सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति एवं संचरण अधिक हो जाता है, अतः रात में खाना नुकसानकारक है।
- रात में नहीं खाना जैनों की मोटी पहचान है। इसे बनाए रखना चाहिये।
- रात्रिभोजन निषेध होने से धर्म-ध्यान व अन्य कार्यों के लिए समय मिल जाता है।
- मात्र वाचना कर लेना स्वाध्याय नहीं है; पृच्छना, पर्यटना, अनुप्रेक्षा एवं धर्मकथा के साथ स्व का अध्ययन 'स्वाध्याय' है।
- जो अब्रह्म-सेवन का जितना त्याग करेगा, वह अपनी आत्मशक्ति का उतना संवर्धन करने के साथ मन व इन्द्रियों की शक्ति का सही उपयोग कर सकेगा।
- दहेज की मांग एवं वैभव प्रदर्शन को छोड़ें।
- ऐसा लगता है कि लेन-देन की बात के पीछे आदमी अपनी कुलीनता खोता जा रहा है।

-हीरा प्रवचन-पीयूष से संकलित : श्री पी. शिखरमल सुराणा, चेन्नई

प्रवचन

रौद्र ध्यान की रौद्रता

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

आर्त्तध्यान के बाद दूसरा अशुभ ध्यान है- रौद्र ध्यान। यह भी आत्मा का पतन करने वाला एवं उसकी दुर्गति का कारण है। आर्त्तध्यान से भी इसकी अशुभता अधिक है। इस ध्यान में जीव हिंसानुबंधी चिन्तन करता है।

रौद्र का अर्थ है- भयानक, उत्पीड़क। टीकाकारों ने रौद्र शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए लिखा है- **'रोदयत्यपरान् इति रुद्रः'**। जो दूसरों को रुलाता है, रुदन कराता है, वह है रौद्र। हिंसा, असत्य, चोरी आदि के रुद्र परिणाम होने से आत्मा की यह परिणिति 'रौद्र' कहलाती है।

रौद्र-ध्यान की वृत्तियाँ

पूर्व में बताया गया है कि आर्त्तध्यान में राग की प्रधानता रहती है, इस कारण मानसिक वृत्तियों में एक प्रकार की कोमलता होती है। जैसे फूल अनुकूल धूप, हवा, पानी न मिलने पर और प्रतिकूल अर्थात् कड़ी धूप, गर्म हवा आदि का संयोग होने पर कुम्हला जाता है, वैसे ही कोमल चित्तवृत्तियाँ, राग प्रधान-वृत्तियाँ आर्त्तध्यान में होती हैं। किन्तु उन वृत्तियों में जब तीव्रता आ जाती है तो राग के स्थान पर द्वेष उमड़ पड़ता है, कोमल भावनाएँ क्रूरता में बदल जाती हैं। विषयानुरक्त चित्त हिंसा, झूठ आदि दुर्वत्तियों का आश्रय लेकर आक्रामक रूप धारण कर लेता है, तब वह रौद्रध्यान कहलाता है। रौद्रध्यान आने पर आत्मा संयम से पतित हो जाती है।

रौद्रध्यान वाले की चित्तवृत्तियाँ क्रूर एवं कठोर होती हैं। लोहे का गोला जैसे आग में पड़कर अग्नि-स्वरूप बन जाता है, दाहक हो जाता है, छूने वाले को जला डालता है, वैसी ही वृत्ति रौद्र ध्यानी में होती है। वह स्वयं की विषयानुरक्ति के कारण स्वयं तो जलकर उत्तापक बनता ही है, किंतु दूसरों को भी जलाता रहता है। अपनी पीड़ा की आग से स्वयं भी जलता है और दूसरों को भी जलाता है। आर्त्तध्यान वाला अपने कष्ट में स्वयं जलता है, रौद्रध्यान वाला अपने साथ, अपने कारण दूसरों को भी जलाता है। जैसे किसी आदमी के घर में आग लग गई, तो वह चिल्लाता है- "आओ! बचाओ! मेरा घर जल रहा है, हाय-मेरा सर्वस्व स्वाहा हो रहा है।" इस प्रकार क्रन्दन करता है और दूसरों को सहायता के लिए पुकारता है। यह आर्त्तध्यान की परिणति है। अब कोई सोचता है कि मेरे घर में आग लग गई

तो लग गई, लेकिन उसकी जलती चिनगारी पड़ौसी के घर में भी फैंक दूँ। मेरा घर जलेगा तो साथ में इसका भी जलेगा फिर बड़ा मजा आयेगा। एक घर की जगह दो घर जलेंगे, एक की जगह दोनों रोयेंगे। इस प्रकार क्रूरता के भाव लाकर वह अपने घर की आग से दूसरों के घर भी जलाकर राख कर डालता है और फिर आनन्दित होता है। यह रौद्र ध्यान की परिणति है।

रौद्रध्यान की चित्त वृत्तियों का विश्लेषण करते हुए आवश्यक चूर्णि में बताया है-

परवसणं अहिनंदइ निरवेक्खो, निद्दओ निरणुतावो।
हरिसिज्जइ कयपावो, रौद्दज्झाणोवगय-चित्तो।।

-आवश्यकचूर्णि, अध्ययन 4

दूसरे को दुःखी एवं संतप्त देखने की इच्छा रखना, दूसरों की पीड़ा और दर्द से बेपरवाह रहना, हिंसा आदि करते समय मन में कुछ भी अनुकंपा व दया नहीं आना, किसी का अहित व नुकसान करके भी मन में पश्चात्ताप नहीं होना तथा पाप करके प्रसन्न होना- ये सब रौद्र ध्यानगत चित्त की वृत्तियाँ हैं। इस प्रकार की भाव परिणति से जाना जा सकता है कि यह आत्मा रौद्र ध्यान वाला है।

प्रायः देखा जाता है कि काम, मोह या राग के उदय से मनुष्य आकुल तो होता है, किन्तु भयानक रूप धारण नहीं करता। जब द्वेष या क्रोध का उदय होता है तो मनुष्य राक्षस सा विकराल बन जाता है। काम के उद्रेक में प्रायः क्रोध की उत्पत्ति नहीं होती, क्योंकि कामी तो अपना कार्य साधना चाहता है, अपनी इच्छापूर्ति करना चाहता है, चूंकि क्रोध काम बिगाड़ देता है, इसलिए उसमें नम्रता, खुशामद और चापलूसी होती है, काम और मोह में मीठी छुरी चलती है। कामी सोचता है- गुड देने से भी काम बनता हो तो ज़हर क्यों दिया जाय। किंतु क्रोध में इस प्रकार का विचार नहीं रह सकता। वह तो एक घाव दो टूक करना जानता है। क्रोध में मधुरता की जगह तीक्ष्णता होती है। नम्रता की जगह अहंकार होता है। क्रोधी आदमी सूई का काम भी तलवार से करना चाहता है। क्रोध के समय मनुष्य यह नहीं सोचता कि वह क्या करने जा रहा है, उसका परिणाम क्या होगा? उस समय तो उग्र रूप धारण कर जो भी साधन हाथ में आता है उसी का प्रयोग कर बैठता है। क्रोध में उन्मत्त व्यक्ति स्वयं भी आत्महत्या कर लेता है, अपना सिर फोड़ लेता है। उसके सामने कोई रहा तो उस पर भी प्रहार कर खून-खराबा कर डालता है। ऐसे-ऐसे प्रसंग भी देखने में आते हैं कि क्रोध में आकर लोग अपने बच्चों को पीट डालते हैं और ऐसे पीटते हैं कि हड्डी-पसली टूट जाती है। एक माँ ने क्रोध में आकर अपने छोटे बच्चे को जो गोद में बैठा रो रहा था व माँ को परेशान कर रहा था, चूल्हे की जलती लकड़ी लेकर हाथ जला डाला। किसी

माँ ने बच्चे के सिर पर चिमटा दे मारा और फिर पट्टी बंधवाने, दवा लगाने, डॉक्टरों और अस्पतालों के चक्कर भी लगाने पड़ते है। तो यह सब क्रोध में विवेक लुप्त हो जाने पर होता है। जो समस्या बातचीत से सुलझ सकती है, उसके लिए भी वह हिंसा और झूठ का आश्रय ले लेता है। बहुत बार आप सुनते हैं कि दो-पाँच पैसों के लिए झगड़ा हुआ, और बढ़ता-बढ़ता इतना बढ़ गया कि एक दूसरे का खून कर डाला। इस प्रकार की चित्तवृत्तियाँ रौद्र ध्यान की परिचायक हैं।

रौद्रध्यान के भेद

रुद्र-चित्तवृत्ति रौद्र-ध्यान का रूप लेती है, कभी वह हिंसा से अनुबंधित होती है, कभी असत्य से, कभी चौर्यकर्म से, एवं कभी स्व-संरक्षण की वृत्ति से। इस कारण रौद्रध्यान के चार प्रकार हो जाते हैं। जिस चित्तवृत्ति का जैसा अनुबंध होगा, जैसा आलम्बन होगा उसी प्रकार का रौद्रध्यान भी उत्पन्न हो जायेगा। इस दृष्टि से शास्त्र में रौद्रध्यान के चार प्रकार बताये गए हैं- रोद्दे झाणे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा-हिंसाणुबंधी, मोसाणुबंधी, तेणाणुबंधी, संरक्खणानुबंधी। - स्थानांग 4.4

रौद्र ध्यान के चार प्रकार हैं- 1. हिंसानुबंधी, 2. मृषानुबंधी, 3. स्तेनानुबंधी और 4. संरक्षणानुबंधी।

रौद्र ध्यान का पहला प्रकार है- हिंसानुबंधी। हिंसा के कारण या हिंसा के संकल्पों से जागृत होने वाली चित्तवृत्ति जब सतत-चिन्तन धारा का रूप पकड़ लेती है तब वह 'रौद्र ध्यान' का रूप धारण करती है। यह स्मरण रखिए कि क्रोध, द्वेष आदि के क्रूर भाव जब तक भाव एवं विचार रूप हैं तब तक वे दुष्ट संकल्प हैं, दुर्ध्यान नहीं। जब उनमें तीव्रता एवं एकाग्रता आ जाती है, रौद्र विचारों में प्राणी गहरा डूब जाता है तब वह दुर्ध्यान किं वा रौद्र ध्यान कहलाता है।

हिंसानुबंधी रौद्र ध्यान होने पर मनुष्य हिंसा की प्रवृत्ति में विवेक शून्य होकर चलता है। फिर उसे यह विवेक नहीं रहता कि जैसी मेरी आत्मा है, वैसी इसकी भी आत्मा है। मुझे दुःख, पीड़ा एवं प्राण-वध अप्रिय है, वैसे दूसरों को भी अप्रिय है। मेरे पांव में शूल लगने पर मुझे असह्य पीड़ा होती है, तो दूसरे के शरीर पर चाकू, छुरी या तलवार का घाव करने पर उसे कितनी भीषण पीड़ा होती होगी? ये विचार तो विवेक दशा का प्रकाश है। हिंसा भाव जगने पर विवेक पर पर्दा पड़ जाता है। उसके मन में न अपने दुःख की कल्पना रहती है, और न पराये दुःख की। नरक के कष्टों की बात भी वह उस समय भूल जाता है कि हिंसा के घोर फल होते हैं। हिंसा करने वाला स्वयं अपने हाथ से अपनी मृत्यु को निमंत्रण देता है, कष्ट व पीड़ाओं को बुलाता है और अपने हाथ से नरक का द्वार खोलता है। शास्त्र में कहा

है- 'एस खलु मारे, एस खलु नरए...।' (आचारांग 1.2) अर्थात् यह हिंसा स्वयं ही मृत्यु है, यह हिंसा स्वयं नरक का रूप है। नरक का कारण है।

पापावहरे......महब्भयो...। (प्रश्नव्याकरण, 1.1) किसी का प्राणवध करना महा भयंकर पाप है।

हिंसा से अनुरंजित चित्त वाला व्यक्ति इन विवेक वचनों को भुला देता है। शास्त्रों का प्रकाश सामने होते हुए भी आँख मूंदकर अंधकार कर लेता है और उस अंधकार में ठोकरें खाने लगता है। अपने ही हाथों से अपने पाँवों पर कुल्हाड़ी चलाने लगता है।

हिंसा के कारण और रूप

हिंसा का स्वरूप बताते हुए जैन आचार्यों ने कहा है- **''प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं-हिंसा''**- तत्वार्थ सूत्र

प्रमत्त योग के कारण किसी के प्राण का नियोजन, उपघात एवं पीड़ा देना-हिंसा है।

इस व्याख्या में हिंसा के सूक्ष्मतम कारण को पकड़ा गया है। हिंसा एक कार्य है, प्रवृत्ति है, उस कार्य का कारण भी कोई होना चाहिए, क्योंकि कारण के बिना कार्य नहीं हो सकता। यह सार्वभौम प्राकृतिक नियम है। तो हिंसा रूप कार्य का कारण क्या है? इस पर सूक्ष्मता के साथ विचार करके आचार्य ने कहा है- 'प्रमत्तयोग' हिंसा का मूल कारण है। प्रमाद को कर्म आने का द्वार कहा गया है-''पमायं कम्ममाहंसु'' प्रमाद ही कर्म है, क्योंकि कर्म भी आत्मा की शुभ-अशुभ परिणति हैं और उसका कारण ही प्रमाद है। प्रमाद क्या है? इसके उत्तर में जैन सूत्रों ने बताया है- राग-द्वेष, विषय-कषाय रूप परिणाम प्रमाद है। इन परिणामों के कारण जो प्रवृत्ति होती है, वह हिंसा आदि का रूप लेती है। अतः हिंसा का मूल कारण हमारे समक्ष आता है- राग और द्वेष। **'रागो य दोसो वि य कम्मबीयं'** राग और द्वेष ये ही दो कर्म के बीज हैं। कुछ व्यक्ति राग के वशीभूत होकर हिंसा करते हैं, कुछ द्वेष के वशीभूत होकर। चार कषायों में लोभ और माया को रागात्मक माना गया है, क्रोध और मान को द्वेषात्मक। कुछ मनुष्य लोभ के वशीभूत होकर हिंसा करते हैं। धन के लिए, परिवार के लिए, यश के लिए, प्रतिष्ठा के लिए, पद के लिए और इस प्रकार के हजारों सूक्ष्म लोभ हैं, जिनके कारण मनुष्य हिंसा करने पर उतारू होता है। लोभ की भावना जब प्रबल होती है तो वह त्रस-स्थावर आदि तिर्यंच जीवों की तो क्या, मनुष्यों तक की हत्या कर डालता है। संसार में जो बड़े-बड़े युद्ध हुए हैं, उनका मुख्य कारण लोभ रहा है। लोभ की पूर्ति न होने पर वह द्वेष का रूप धारण कर लेता है।

युद्धों के रौद्ररूप

महाभारत के युद्ध में 18 दिन में अठारह अक्षौहिणी सेना का विनाश क्यों हुआ?

कुरुक्षेत्र की भूमि मनुष्यों के रक्त से लाल क्यों हुई? युधिष्ठिर और दुर्योधन कोई जन्मजात दुश्मन थे? नहीं वे तो भाई-भाई थे। साथ में खेले, साथ में पढ़े, साथ में बड़े हुए और आखिर एक-दूसरे के सर्वनाश को तत्पर हो गए। क्यों? राज्य का लोभ था। दुर्योधन सोचता था- "इस पृथ्वीमंडल पर तो एक छत्र मेरा शासन रहना चाहिए। युधिष्ठिर और अर्जुन को शासन के लिए गाँव तो क्या, सूई की नोंक जितनी भूमि भी नहीं दूँगा।" बस यह राज्य का, भूमि का प्रश्न विकराल रूप ले गया और भयंकर नर संहार हुआ।

भगवान महावीर के युग में जिसे अभी ढाई हजार वर्ष ही हुए हैं, कोणिक-चेटक का कितना भयंकर युद्ध हुआ। चेटक कौन था? कोणिक का नाना। और युद्ध का कारण दो भाई हल-विहल कुमार और उनका दिव्य हार एवं सिंचानक हाथी। हार और हाथी के लिए भाई-भाई और नाना-दोहिता में भयंकर संग्राम हुआ, महाशिलाकंटक और रथमूशल नामक इन दो युद्धों में क्रमशः 84 लाख एवं 86 लाख मनुष्यों के रक्त से भूमि को लाल कर दिया गया। इस तरह सत्ता, भूमि और वस्तु के लोभ में अंधा होकर मनुष्य इतना रूद्र रूप धारण कर लेता है।

साधारण मनुष्य अपने दैनिक जीवन में युद्ध जैसी हिंसा का आश्रय नहीं लेता, किंतु वह लोभ के कारण कभी-कभी बड़ा क्रूर रूप धारण कर लेता है। मनुष्यों की हत्या भले ही न करता हो, किंतु छोटे-मोटे जीवों का विनाश और क्षय करने में वह बड़ा निर्दय बन जाता है।

एक धान्य का व्यापारी मंहगाई की राह देखता हुआ वर्षों तक कोठारों में अनाज भर कर रखता है। वह सोचता है, अकाल पड़े, वर्षा कम हो, तो अनाज में तेजी आये और मुझे एक के दो मिलें। कोठारों में अनाज पड़ा-पड़ा घुन जाता है, उसमें कीड़े (घुन) पड़ जाते हैं, इस तरह वह अगणित जीवों की हत्या करता है।

एक डॉक्टर है, वह क्या सोचता है- गाँव में लोग स्वस्थ हैं, दवा की जरूरत नहीं पड़ती तो वह विचार करता है यह गाँव अच्छा नहीं है। यहाँ कुछ कमाई नहीं, धंधा नहीं चलता। अरे भाई! जहाँ लोग स्वस्थ रहें वह गाँव तो बहुत अच्छा माना जाता है और तुम मानते हो कि यह गाँव अच्छा नहीं? जहाँ लोग बीमार हो, बीमारी फैली हो, वहाँ डॉक्टर सोचता है, बस अब चांदी ही चांदी है। यह कितनी क्रूर और दुष्ट भावना है।

एक वकील सोचता है- लोग प्रेम से रहेंगे, परस्पर झगड़ेंगे नहीं, तो अपना धंधा कैसे चलेगा? लोगों में झगड़े खड़े हों, सच्चे नहीं तो झूठे झगड़े ही खड़े किये जायं और फिर वे दौड़कर अपने पास आयेंगे तो दक्षिणा मिलेगी।

इस प्रकार की चिंतनधारा रौद्र ध्यान में होती है और वह इसके प्रथम प्रकार हिंसानुबंधी

रौद्र ध्यान में गिनी जाती है।

घी और चमड़े का व्यापारी

जिन व्यापारों में, उद्योगों में ज्यादा हिंसा होती हो, तथा जिनमें परिणामों की रौद्रता अधिक आती हो, वे व्यापार श्रावक के लिए वर्जनीय कहे गये हैं, क्योंकि उनके विस्तार के लिए मनुष्य जो चिन्तन करता है, उसमें प्रायः अपने लाभ के लिए दूसरों के अहित की भावना रहती है। वह दूसरों की हिंसा, और मृत्यु की भी कामना करके अपना लाभ चाहता है।

एक पुरानी लोक कथा है कि एक बार एक घी का व्यापारी किसी दूसरे गाँव घी खरीदने को गया। रास्ते में उसे एक दूसरा व्यापारी मिला। दोनों में परिचय हुआ। उसने पूछा- "आप किस कार्य के लिए परदेश जा रहे हैं"? व्यापारी ने बताया- "मैं चमड़े का व्यापारी हूँ, चमड़ा खरीदने के लिए अमुक गाँव जा रहा हूँ।"

पहले व्यापारी ने कहा- मैं भी उसी गाँव जा रहा हूँ, मुझे घी खरीदना है। अच्छा हुआ रास्ते में दोनों का साथ हो गया। एक से दो भले। दोनों व्यापारी रास्ते में एक गाँव में ठहरे। वहाँ एक बूढी श्राविका रहती थी जो आये-गये यात्रियों को शुद्ध सात्विक भोजन खिलाती थी। दोनों यात्री वहाँ पहुँचे। बुढ़िया ने दोनों का व्यापार पूछा। एक ने कहा- "मैं घी खरीदने जा रहा हूँ। दूसरे ने बताया- मैं चमड़े का व्यापारी हूँ, चमड़ा खरीदने जा रहा हूँ।"

बुढ़िया ने घी के व्यापारी को घर में भीतर बैठाया, स्वागत किया, गादी पाटे लगाये और आदरपूर्वक खाना खिलाया तथा चमड़े के व्यापारी को बाहर दरवाजे में ही बिठाकर खाना खिला दिया। दोनों व्यापारी आगे चले गये। अपना कार्य करके वापस लौटे तो उसी बुढ़िया के घर दोनों ठहरे। बुढ़िया ने पूछा-"अपना-अपना माल खरीद लिया?" दोनों ने ही कहा- "हाँ, हमने अपना-अपना माल खरीद लिया।" इस बार बुढ़िया ने घी के व्यापारी का बिल्कुल ही स्वागत नहीं किया, उसे घर के बाहर चौकी पर बिठाया, वहीं खाना परोसा और चमड़े के व्यापारी का बड़ा आदर किया, उसे घर के भीतर बिठाया और स्वागत-सत्कार के साथ भोजन कराया। यह पहले से उलटा व्यवहार देखकर चमड़े के व्यापारी ने बुढ़िया से पूछा- "मांजी! यह क्या बात है? पहले तुमने उस घी के व्यापारी का स्वागत-सत्कार किया, वह तो ठीक था। क्योंकि वह ऊँचा व्यापारी था, लेकिन इस बार उसे बाहर बिठाया और मेरा स्वागत किया इसका क्या कारण? मैं तो चमड़े का व्यापारी हूँ।"

बुढ़िया ने कहा-"बेटा! व्यापार तो कुछ भी करो, भावना अच्छी चाहिए। जिसकी भावना अच्छी और ऊँची हो, वही ऊँचा है।"

चमड़े के व्यापारी ने पूछा- ''इसका क्या मतलब है, भावना किसकी ऊँची, किसकी नीची, तुम्हें क्या मालूम?''

बुढ़िया ने कहा- ''घी खरीदने के लिए जाते समय वह सोचता था, वर्षा अच्छी हो, जमाना अच्छा हो, पशुओं को खाने को खूब मिले तो घी भी खूब होगा। घी ज्यादा होगा तो मंदा रहेगा, सस्ता मिलेगा। और तुम उस समय सोचते थे कि इस बार अकाल पड़े, पशु खूब मरे तो ठीक रहे, चमड़ा मंदा रहेगा तो सस्ता मिलेगा। कहो बेटा! यह बात ठीक है?''

दोनों व्यापारियों ने कहा-''मांजी! बात तो तुम्हारी ठीक है।''

बुढ़िया ने आगे बताया- ''अब माल खरीदकर लाते समय उससे विपरीत भावना हो रही है कि नहीं? घी का व्यापारी सोचता है। अब घी में तेजी कैसे आये? पशुओं में कोई बीमारी फैल जाये, पशु मरने लगे तो घी का उत्पादन कम हो जायेगा और तब मैं घी का मुँहमाँगा भाव लूँ और तुम सोचते हो पशु स्वस्थ रहे, खूब खाए-पीए कोई बीमारी न आये, पशु मरे नहीं, तो चमड़ा भी कम मिलेगा और तब मुझे चमड़े में खूब मुनाफा होगा।''

दोनों ही व्यापारियों ने स्वीकार किया- ''बात तो तुम्हारी सही है, मन में विचार तो ये ही उठ रहे हैं।''

बुढ़िया ने कहा- ''घी के व्यापारी के विचार निम्न स्तर के हैं, इसलिए मैंने उसका स्वागत नहीं किया, तुम्हारे विचार अच्छे हैं, इसलिए तुम्हें भीतर बैठाया, आदर-सम्मान दिया।''

इस लोक कथा से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि अपने तुच्छ स्वार्थ तथा लाभ के लोभ में मनुष्य कितना क्रूर चिन्तन करने लगता है। दूसरा कोई मरे, चाहे जीये। उसे फिकर नहीं, बस उसका व्यापार चमकना चाहिए। राजस्थानी में एक कहावत है- ''बींद मरो बीनणी मरो, ब्राह्मण रो टको तैयार है।''

भाव जैसा प्रभाव

दुनिया चाहे जहन्नुम में जाए, अपना उल्लू सीधा होना चाहिए। अपनी चांदी बननी चाहिए। चाहे भले ही संसार में प्रलय मच जाये। इस प्रकार का रौद्र चिंतन अनेक मनुष्यों में देखा जाता है। वे यह नहीं सोच पाते कि जैसा तुम दूसरों के विषय में सोच रहे हो, वैसा कोई तुम्हारे विषय में सोचे तो? तुम्हें कैसा लगेगा। कितना क्रोध आयेगा? तो फिर दूसरों के विषय में इतने क्रूर और बेपरवाह क्यों बन जाते हो? याद रखो! यदि तुम्हारे मन में दूसरे के प्रति हिंसा व अनिष्ट की भावना होगी, तो उसके मन में भी वैसे ही विचार तुम्हारे प्रति जग उठेंगे।

प्रवचन

दया सुखां री बेलड़ी

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा 02 सितम्बर 1996 को महावीर भवन, लाखन कोटड़ी, अजमेर में दिये गये प्रवचन का आशुलेखन श्री धर्मपाल मेहता, अजमेर तथा संपादन श्री पुखराज मोहनोत, जोधपुर द्वारा किया गया है।-सम्पादक

तीर्थंकर भगवान् महावीर की आदेय अनुपम वाणी स्थानांगसूत्र के माध्यम से संग्रहनय की अपेक्षा से एक-एक तत्त्व का निरूपण कर रही है। एक सूत्र कहा जा रहा है- 'प्राणातिपात-विरमण्'। जिस तरह पाप के स्वरूप का कथन करते हुए हिंसा को 'प्राणातिपात' कहा गया है, ठीक इसी तरह धर्म का कथन करते हुए ''प्राणातिपात-विरमण'' कहा गया है। यह सूत्र बताता है कि जीव को हिंसा का त्याग करके अहिंसा धर्म अपनाना श्रेयस्कर है।

प्रश्नव्याकरण सूत्र में अहिंसा की महिमा का विवेचन करते हुए उल्लेख आता है- **''एसा सा भगवई अहिंसा, जा सा भीयाणं विव सरणं''** -कहा जा रहा है कि यह जो अहिंसा-भगवती है, वह संसार के समस्त प्राणियों के लिये शरणभूत है। यह अभयप्रदात्री है। वस्तुतः अहिंसा अत्यन्त गरिमामयी है। वह मातृस्वरूपा है। माता जिस प्रकार अपनी सन्तानों का संरक्षण करती है उसी प्रकार अहिंसा सभी का रक्षण-संरक्षण करती है। जो डरे हुए हैं, भयभीत हैं, उनके भय का हरण कर उन्हें निर्भय बनाने वाली अहिंसा ही है।

अनिष्ट की आशंका जीवन में हलचल मचा देती है, पर यदि पता लगे कि ऐसा कुछ नहीं होने वाला है तो भीतर में शांति और संतोष परिव्याप्त होना साधारण बात है। आपको ज्ञात हो कि पड़ौसी के महीने-दो महीने के भीतर ही मारकेश की दशा आने वाली है तो आपकी हालत भी पतली हो सकती है, मन में अशांति व्याप्त हो सकती है, खलबली-सी मच सकती है, पर फिर जब ध्यान में आता है कि मेरे साथ ऐसा कुछ भी तो नहीं है, बस यह विचार आते ही मन शांत बन जायेगा। कई बार पूर्व सूचना मिलती है कि बाढ़ आने वाली है, आग लग सकती है, आतंकवादियों या चोर-डाकुओं का उपद्रव हो सकता है तो क्या होगा? घबराहट होगी, चिन्ता से चेहरे पीले पड़ जायेंगे। ऐसे समय में यदि यह कहा जाता है कि-'अरे! चिन्ता कैसी? क्यों घबराते हो? मारने वाले से बचाने वाला अपना पुण्य बड़ा होता है। अनहोनी हो नहीं सकती और होनी को कोई टाल नहीं सकता। फिर भय कैसा?'

सुनकर अशांत मन शांत बन जाता है, भय बहुत सीमा तक कम हो जाता है। मन में रह-रहकर यही चिन्तन चलता है-"जो होगा सो देखा जायेगा।"

आपको एक बात ध्यान में लेनी है। यह जो अन्तर में समायी अशांति है, भय का जो भूत भीतर बैठा है, उसे दूर करने के लिए स्वयं को अहिंसक एवं दयावान बनना होगा। ऐसी दया ही भयभीत होने वाले जागतिक प्राणियों के लिये शरणभूत है।

जब तेज प्यास लगी हो, होठ सूख रहे हों, जीभ बाहर आ रही हो, प्राण कंठ में आ रहे हों, पलकें झपकना भी बन्द हो रही हों और चारों तरफ कहीं भी पानी का कोई स्थान न हो, ऐसे समय में कोई व्यक्ति एक लोटा ठण्डा, मीठा, स्वादिष्ट पानी पिला दे तो क्या होगा? प्राणियों में प्राण आ जायेंगे, नया जीवन मिल जायेगा उस प्यासे व्यक्ति को। इसी तरह अहिंसा समस्त प्राणियों की प्राणरक्षिका है।

एक सेठ यात्रा पर गाड़ी लेकर निकल रहे थे। उन्होंने गाड़ीवान से कहा- 'देखो! मटकी का ध्यान रखना।' गाड़ीवान ने तुरन्त कहा- ' हाँ सेठ जी! मुझे आपने कह दिया था। मैंने ध्यान से मटकी रख दी है।' कुछ देर पश्चात् सेठजी फिर गाड़ीवान को मटकी का ध्यान रखने की बात कहते हैं। गाड़ीवान सुनकर उन्हें पुनः आश्वासन देकर कहता है- 'आप निश्चिंत रहें। मटकी संभाल कर रखी हुई है। पूरी सुरक्षित है।'

यात्रा प्रारम्भ हुई। समय बीतता गया। गर्मी के दिन थे। दोपहर बाद तपन तेज हो गई। सेठजी को प्यास लगी। सेठजी ने गाड़ीवान से कहा- 'प्यास लग रही है, मटकी से पानी पिलाना।'

गाड़ीवान गाड़ी चलाते हुए सेठ जी की बात सुनकर कहता है- 'सेठ साहब! मटकी तो है, पर खाली मटकी है। पानी तो उसमें नहीं है।'

सेठजी कहते हैं-'क्या कहा? खाली मटकी? पानी नहीं है? अरे तो मेरी प्यास का क्या होगा? बिना पानी के मटकी क्या करेगी?'

गाड़ीवान बोला-'सेठ साहब! आपने मटकी का ध्यान रखने के लिए कहा, तो मैंने मटकी का पूरा ध्यान रखा। नई, कोरी मटकी लाया। मेरे पास ही उसे उलटी करके रख दिया। देख लीजिए मटकी पूरी तरह सुरक्षित है। पानी के लिए तो आपने कुछ कहा ही नहीं।'

सेठ साहब की प्यास बढ़ती जा रही थी। गाड़ीवान का कथन सुनकर उस सेठ ने अपना सिर पीट लिया। अब प्यास कैसे बुझे? नई मटकी, कोरी मटकी पर पानी नहीं। गाड़ीवान की भी क्या गलती? उसकी जैसी अक्ल, वैसा उसने कर दिया। मटकी का ध्यान रखने की बात कही, मटकी का ध्यान रखा ही है।

हम भी तो वैसा ही कर रहे हैं। ध्यान किसका रखना चाहिए, पर ध्यान किसी और का रख रहे हैं। शरीर का ध्यान रखने में हम आत्मा को भूल बैठे हैं। मूल तो आत्मा है, पर शरीर को सजाने-संवारने में अधिक समय दिया जा रहा है। मानव की यह देह, यह खोली, यह शरीर दुर्लभ है, पर क्यों है दुर्लभ? दुर्लभ इस दृष्टि से कि इसी देह से मोक्ष मिलाया जा सकता है, जन्म-मरण मिटाया जा सकता है, कर्म-बंधन काटा जा सकता है। सजाना, संवारना है आत्मा को। तप और संयम आदि से ही आत्मोद्धार होता है, पर कहाँ है तप, कहाँ है संयम? हमने अपनी आत्मा का कितना विकास किया है, इसका सतत चिन्तन आवश्यक है। देह तो कोरी मटकी है, पानी तो आत्मा ही है।

सेठ साहब की प्यास बढ़ने लगी। मारे प्यास के उनका जीव घबराने लगा। उनकी तो जान पर आ बनी। ऐसा लगा कि कुछ और समय निकल गया, पर पानी नहीं मिला तो श्वासें रुक जायेंगी। ठिकाना नहीं इन श्वासों का। चलते-चलते जाने कब रुक जायें? लगा कि जैसे प्राण-पखेरू उड़ना चाहते हैं तभी कोई व्यक्ति आकर कहता है- ''मेरे पास पानी है। मैं तुम्हें पानी पिला सकता हूँ, पर बदले में तुम्हें अपनी सारी सम्पत्ति मुझे देनी होगी।'' करना क्या चाहिए सेठ को? सम्पत्ति अधिक मूल्यवान या पानी? इस समय तो पानी ही अधिक मूल्यवान है। पानी है तो प्राण है। प्राण रहे तो कितनी ही सम्पत्ति और अर्जित करना संभव है। अतः सेठ अपने प्राणों की रक्षा के लिए अपनी सारी सम्पत्ति देने के लिए तैयार हो जायेगा। बात सेठ की चल रही है, पर सेठ की जगह यदि कोई राजा हो तो ऐसी दशा आने पर पानी के लिए अपना समस्त राज्य भी उसे दे देगा। यहाँ सवाल है प्राणों की रक्षा का, अपना जीवन बचाने का। जब सवाल जीवन का हो, प्राण-रक्षा का हो तो एक लोटे पानी में भी पूरे जीवन की खुशियों का समावेश हो जाता है। ऐसे समय में तो पीने को पानी चाहिए, बदले में राज-पाट या सम्पत्ति कुछ भी जाये तो भले ही जाये।

पानी जहाँ आसानी से उपलब्ध हो जाता है, वहाँ पानी की कीमत कौन आँकता है। जब तक जान पर बनी नहीं है, तब तक भोजन, पानी, वायु या अन्य कुछ भी हो, उनकी कीमत प्राणी नहीं समझ पाता। जब जान पर बन आती है तो एक लोटे पानी में खुशियों का सागर नज़र आने लगता है। प्यासे को कह दे कोई कि पानी तो नहीं है यहाँ पर। मेरे पास तो कीमती हीरे हैं, मूल्यवान माणक-मोती हैं। तुम चाहो तो मैं तुम्हें ये सब दे सकता हूँ। जितना तुम चाहो ले लो। जितना तुम ले जा सकते हो, ले जाओ। पर प्यास से जिसके प्राण निकले जा रहे हैं, उसे उस समय पानी के अतिरिक्त कुछ भी नहीं सुहायेगा। प्यासे के लिए पानी में खुशी है, भूखे के लिए भोजन में खुशी है। उसके आगे आपसे कहूँ-' जो भवसागर में डूब रहे हैं उनके लिए अहिंसा- दया जहाज के तुल्य है, नौका के समान है।'

अहिंसा और दया, दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू कहे जा सकते हैं। जहाँ दया है,

वहाँ अहिंसा अवश्यमेव है और जहाँ दया नहीं वहाँ अहिंसा भी नहीं हो सकती। दया का महत्त्व आध्यात्मिक क्षेत्र में अहिंसा से कम नहीं आंका जाना चाहिये। आप कहते भी हैं-

दया सुखां री बेलड़ी, दया सुखां री खान।
अनन्त जीव मुगते गया, दया तणो फल जान।।

अनंत-सुखों का मूल दया है, दया ही सुखों की खान है। दया के परिणामस्वरूप ही अब तक अनंत-अनंत जीव अपने सर्व कर्मबंधन काटकर, जन्म-मरण के अनंत चक्र को सदैव के लिए नष्ट कर मोक्ष की प्राप्ति कर चुके हैं। हिंसा नरक का कारण है। **'अनंत जीव नरके गया हिंसा तणो फल जान'**। जबकि दया मुक्ति का कारण है-**'अनंत जीव मुगते गया दया तणो फल जान।'** इस कथन से स्पष्ट है कि दया ही अहिंसा है और अहिंसा ही दया है। दया सम्यग्दर्शन की दात्री है, दया महाव्रती-जीवन में प्रवेश दिलाने वाली है, दया कर्म-बंधनों को तोड़ने वाली है। जीव ने जितना सत्य गुण, ब्रह्मचर्य गुण, अपरिग्रह गुण या अन्य किसी भी गुण द्वारा धर्म ग्रहण कर जीवन का विकास किया है तो उसमें कहीं न कहीं दया का हाथ अवश्य है। दया के आधार से जीव आध्यात्मिक विकास करता हुआ भवसागर से तिर जाता है। अतः दया को धर्म का मूल बताया है। आध्यात्मिक विकास की पहली सीढ़ी दया ही है। यह दया माता ही तो भगवती अहिंसा है, जो यदि घट में विराजमान है तो एक धर्मशील सर्वप्रकारेण धर्म कर सकता है। संत कवि माधवमुनि ने कहा है-

दया पालो बुधजन प्राणी, स्वर्ग अपवर्ग सौख्यदानी,
चाहो जो भवदधि से तरना तो, प्रतिदिन दया धर्म करना।
यही दया मुनि माधव की शिक्षा, करो सब जीवन की रक्षा।।

आप लोग यहाँ, हम संतों के पास आते हैं। हम संतों के पास आप सभी को देने के लिए एक सन्देश है-''दया पालो।'' आप यहाँ आते हैं तब भी हमारे मुँह से यहीं सुनेंगे-'दया पालो।' आप जाते हैं यहाँ से तब भी हम संत यही कहेंगे-'दया पालो।' ये दो शब्द ही हैं, जो आपके लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं। दया से सम्यग्दर्शन की प्राप्ति संभव हो जाती है, एक दया से महाव्रतों में प्रवेश मिल जाता है और वही दया कर्म-बंधनों का नाश कराने की क्षमता प्रदान करती है। दया के सम्बन्ध में उल्लेख मिलता है-

दयामूलो भवेद्धर्मो, दया प्राण्यनुकम्पनम्।
दयायाः परिरक्षार्थं गुणा शेषाः प्रकीर्तिता।।

अर्थात् धर्म का मूल दया है। दया का अर्थ है प्राणियों पर अनुकम्पा का भाव रखना। सत्य, क्षमा आदि जितने भी सद्धर्म संबंधी गुण हैं, वे दया की रक्षा के लिये हैं।

जिनके अंतर में करुणा, अनुकम्पा, दया की भावना का विस्तार है, वे अहिंसा की दिशा में कर्तव्य भावना से कुछ न कुछ कर रहे हैं। अनेक व्यक्ति ऐसे मिल जायेंगे जो कैसी भी परिस्थिति उत्पन्न होने पर भी अपनी ओर से हिंसा नहीं करते। दशवैकालिक-सूत्र के छट्ठे अध्ययन की नौवीं गाथा में कहा है- ''अहिंसा निउणा दिट्ठा, सव्वभूएसु संजमो।'' अर्थात् सभी प्राणियों के प्रति स्वयं को संयत रखना, यही अहिंसा का पूर्ण दर्शन है।

जिनेश्वर का धर्म संयम एवं मर्यादा का धर्म है। यही कारण है कि व्यक्ति ज्यों-ज्यों धर्म-मार्ग में आगे बढ़ता है, वह सांसारिक कर्म से अपने आपको मर्यादित करता हुआ हिंसा से बचने के लिए पूर्ण प्रयत्नशील बनने की दिशा में बढ़ता रहता है। शास्त्र कहते हैं कि-''नहीं मारना'' -यह निषेधात्मक रूप है अहिंसा का और 'मरते हुए को बचाना' यह सकारात्मक रूप है। इससे ही कहा गया- 'अहिंसा परमो धर्मः' तथा 'दया धर्म का मूल।'

वर्तमान समय में दया की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। न जाने कितने-कितने और कैसे-कैसे तरीकों से आज हिंसाएँ की जा रही हैं। थोड़े-से ऐन्द्रियक विषय-वासना सम्बन्धी सुख की प्राप्ति के लिए आज का आम आदमी न जाने क्यों विश्व के वन्य एवं अन्य प्राणियों को मारते हुए जरा भी नहीं हिचकिचाता, एक क्षण के लिए भी हिंसा के विषय में नहीं सोचता। चिकित्सा-सम्बन्धी शिक्षा के क्षेत्र में, दवाओं के निर्माण के क्षेत्र में, प्रसाधन-सामग्री में, फैशन व प्रदर्शन के लिए, जिह्वा के स्वाद के लिए तथा और भी जाने किन-किन कारणों से आज का मानव प्रतिदिन लाखों पशु-पक्षियों की हत्या कर निर्दयतापूर्वक उनके खून से अपने हाथ रंग रहा है। एक पत्रिका है-'हिंसा-विरोध'। उसमें पढ़ा था कि मात्र परीक्षणों के लिए प्रतिमाह लाखों निरीह-मूक पशुओं का वध कर दिया जाता है।

वस्तुओं के प्रति आसक्ति ने कितनी ही बार धरती को मानव के खून से रंगा है। हार और हाथी की आसक्ति के कारण हुए युद्ध में एक करोड़ अस्सी लाख सैनिक मारे गये थे और हाथ क्या लगा? दो विशाल राज्यों की सेनाओं को युद्ध करना पड़ा, पर पाया क्या? कुछ भी तो नहीं। मारवाड़ में कहावत है- 'हाथ भी जले और होले भी न सिके।' होली तक गेहूं की फसल कट जाती है। अनेक परिवार होली के जलने पर उसकी आग में गेहूं की बालियाँ सेकते हैं, जिन्हें होले कहा जाता है। प्रथा है यह। पर कई बार होले तो सिकते नहीं, हाथ आग में जल जाते हैं। इस युद्ध में भी यही हुआ। हाथी तो आग में कूदकर जल गया और हार को देवता ले गए।

मगधाधिपति राजा श्रेणिक और महारानी चेलना का पुत्र कूणिक जब बड़ा हुआ तो उसने षड्यंत्र कर अपने पिता श्रेणिक को बन्दी बनाकर कारागार में डाल दिया। वह स्वयं

मगध का अधिपति बन गया। यह कार्य उसने अपने अन्य दस भाइयों के सहयोग से किया। राजा श्रेणिक ने बंदी होने से पूर्व अपने पुत्र हल्ल एवं विहल्ल को सेचनक हाथी और देवनामी (देवप्रदत्त) हार दिया था। कूणिक के राजा बन जाने पर उसकी रानी पद्मावती ने उस हार और हाथी को हथियाना चाहा। इसके लिए उसने कूणिक से हठ किया। पहले तो कूणिक ने मना कर दिया, पर त्रियाहठ के सामने वह टिक न सका। रानी की मांग पर उसने हल्ल-विहल्ल कुमार के पास कहलवाया कि वे हार और हाथी सुपुर्द कर दें। हल्ल-विहल्ल ने कहला दिया कि हार और हाथी चाहते हैं तो अपना आधा राज्य दे दें।

कूणिक के हाथ में सत्ता थी, सेना थी। वह आधा राज्य क्यों देता। उसने जबरदस्ती हार व हाथी छीनने का विचार कर लिया। इधर हल्ल-विहल्ल ने सोचा कि अब यहाँ रहना ठीक नहीं होगा। अपने ऊपर कूणिक द्वारा बल प्रयोग की आशंका को भांपते हुए अपने परिवार सहित नाना चेटक की शरण में वे वैशाली आ गये।

मगध नरेश कूणिक को जब यह पता लगा तो वह बहुत क्रोधित हुआ। उसने अपने नाना राजा चेटक के दरबार में राजदूत भेजकर कहलवाया कि हल्ल और विहल्ल उसके राज्य के भगोड़े हैं, अतः उन्हें और हार व हाथी के साथ तुरन्त मगध के सुपुर्द करें।

राजा चेटक न्यायप्रिय था। उसने कहलवाया कि हल्ल और विहल्ल ने यहाँ शरण ली है। वैशाली की परम्परा के अनुसार शरणागत की रक्षा यहाँ का कर्त्तव्य है। मगध चाहे तो आधा राज्य उन्हें देकर उनसे संधि कर सकता है।

चेटक के इस कथन ने कूणिक के क्रोध को और बढ़ा दिया। उसने अपने दस ही भाइयों व उनकी सेना तथा मगध की विशाल सेना को लेकर वैशाली की ओर कूच कर दिया। चेटक राजा ने सुना तो वे भी नौ मल्ली तथा नौ लिच्छवी राजाओं की सेनाओं के साथ कूणिक की सेना के सामने आ डटे। बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। दस दिन तक युद्ध चला। कूणिक के एक-एक कर दस ही भाई मौत के मुँह में चले गये। युद्ध में एक करोड़ अस्सी लाख सैनिकों का रक्त बहा। भयंकर हिंसा! कारण क्या? हार और हाथी में आसक्ति! चीजें छोटी पर आसक्ति के इस रूप को क्या कहें? अनन्त काल से आसक्ति ने युद्धों को जन्म दिया है और हिंसा का भयंकर खेल रचा है। युद्ध के तीन ही कारण रहे हैं और आज भी हैं- धन, सुन्दर नारी और जमीन। दूसरे शब्दों में कहें तो 'जर, जोरू और जमीं'। किसी भी जाति, समाज या राज्य का इतिहास उठाकर देख लें, सर्वत्र इन्हीं तीन कारणों से भयंकर युद्धों का, महाभयानक हिंसा का विवरण मिलता है। आसक्ति, अहंकार और सत्ता के लिए कितने-कितने भयंकर युद्ध हुए हैं? ऐसा भी नहीं कि राज्य व सत्ता के लिए युद्ध करने वालों के पास सत्ता की कोई कमी हो अथवा रानियों या सुन्दर राजकुमारियों के लिए युद्ध में

लाखों सैनिकों के प्राण होम कर देने वाले हिंसक राजाओं के राजमहलों में रानियाँ नहीं थी। हजारों रानियाँ और विशाल राज्य के राज्याधीशों ने भी 'अभी और चाहिए' की कामना में हिंसा का ताण्डव किया है। यह आसक्ति ही हिंसा की, युद्धों की जड़ है।

आज मांसाहारियों के लिए अपेक्षित मांस की उपलब्धता बनाये रखने हेतु करोड़ों पशुओं का कत्ल किया जा रहा है। विश्व के अनेक राष्ट्रों में, भारतवर्ष में भी वैज्ञानिक ढंग से मशीनों से त्वरित गति से पशुओं का कत्ल करने वाले आधुनिक कत्लखाने दिन-ब-दिन बढ़ते ही जा रहे हैं। जो इन कत्लखानों को चला रहे हैं, वे कैसे वहाँ तक पशुओं को ले जाते हैं, कैसे उन्हें वहाँ रखा जाता है और फिर उनको कैसे वहाँ कत्ल किया जाता है? यह सब इतना दर्दनाक होता है कि देख, सुनकर रोंगटे खड़े हो जाना सहज बात है।

श्रावक जीवन की आराधना के लिए आवश्यकता है कि अनर्थ के पाप कार्यों से बचा जाए। जीवन की आवश्यकतापूर्ति में एक-एक कदम सोच-विचारकर, विवेक के साथ, फूंक-फूंक कर रखे जाने की आवश्यकता है। एक कैमरा होता है। कैमरे का काम है, सामने जैसा आए उसे हूबहू वैसा ही अपने में कैद कर ले, चित्रित कर ले। जिस क्षण का फोटो लिया जाता है, उस क्षण के हावभाव उसमें वैसे ही आ जाते हैं। जिन क्षणों में आप जैसा सोच रहे हैं, वैसा ही लेखा-जोखा आपका भी हो रहा है। आगे-पीछे आपको उसे भोगना ही पड़ेगा। इसीलिए शास्त्र कहता है कि यदि तुमने सम्यग्दर्शन को जाना है, आत्मा और परमात्मा का स्वरूप समझा है तो निरर्थक हिंसाओं का त्याग कर दो।

धर्म के नाम पर कितनी-कितनी हिंसाएँ हो रही हैं, कितना मिथ्यात्व पनप रहा है, कितनी बलियाँ चढ़ाई जा रही हैं। किन-किन जगहों पर कैसे-कैसे रिवाज, कैसी-कैसी परम्पराएँ, कैसी-कैसी कुप्रथाएँ हैं। इन्हें कभी बंद करने की बात कही जाए तो लोग कहते हैं कि यह सब परिवार, समाज, संसार का व्यवहार है। कुछ लोग कहते हैं कि हम तो करते नहीं, मात्र देखने जाते हैं। बिचारा निरीह पशु मारा जा रहा है, मारकर बलि चढ़ाई जा रही है और आप लोग देख रहे हैं। क्या है यह? तमाशा है क्या आपके लिए? इस तरह हिंसा में रस लेना और समर्थन करना भी भयंकर पाप है। दया यदि दिल में है तो इस तरह की हिंसा देखी नहीं जा सकती। आचारांग-सूत्र में प्रभु फरमाते हैं-

जेवऽन्ने एएहि काएहिं दंडं समारंभंति।
तेंसि पि.... वयं ....लज्जामो।।

-आचारांगसूत्र, 1.8.1

अर्थात् यदि कोई अन्य व्यक्ति भी धर्म के नाम पर जीवों की हिंसा करते हैं तो हम इससे भी लज्जानुभूति करते हैं।

'झूठ नहीं बोलना' धर्म है तो क्या सच बोलना धर्म नहीं है? झूठ नहीं बोलने में धर्म है तो सत्य बोलना उससे बड़ा धर्म है। इसी प्रकार नहीं मारना धर्म है, अहिंसा है तो जो मरते हुए को बचाना भी धर्म है। साधु तीन करण तीन योग से हिंसा के त्यागी होते हैं, अतः साधु के लिए कुछ मर्यादाएँ होती हैं। पर श्रावकों को जीवरक्षा की विशेष छूट है। कुछ लोग जब जीवों को बचाने का अवसर आता है तो वहाँ से खिसक जाते हैं। क्या यह मानवता है? क्या इससे मानवीय गुणों का ह्रास नहीं हो रहा? वस्तुतः यह मानवता और सहृदयता का ह्रास है। शास्त्र कह रहे हैं कि-"मानव! इन प्राणों की बहुत बड़ी कीमत है। अतः प्राणियों को मारना नहीं चाहिए और साथ ही मरते हुओं को बचाना भी चाहिए। श्रावक-धर्म के पालन करने वाले कम से कम अनर्थ हिंसा से तो अपना बचाव करें ही, साथ ही जीव-रक्षा का भी विवेक रखें, क्योंकि जीवों की रक्षा करना भी धर्म है। यह दया धर्म है जो भवसागर से पार उतारने वाला है। यदि ऐसा नहीं होता तो भगवान महावीर इसे पाप कह देते। परन्तु भगवान ने तो अन्न देना, पानी देना आदि को पुण्य बताया है। मैं मूल दृष्टि को लेकर कह रहा हूँ कि प्राणों की बहुत बड़ी कीमत है। अहिंसा बहुत बड़ा धर्म है। इसके सहारे अन्य सब धर्म टिके हुए हैं। अतः कहा गया कि इस अहिंसा धर्म की रक्षा करो। कहा गया है-

सव्वओ वि नईओ कमेण जह सायरम्मि निवडंति।
तह भगवइ-अहिंसाए सव्वेधम्मा सम्मिलंति।।

तात्पर्य यह है कि जैसे सभी नदियाँ क्रमशः समुद्र में विलीन हो जाती हैं, वैसे ही सारे ही धर्म अहिंसा में समा जाते हैं। दशवैकालिक सूत्र में भगवान ने फरमाया है-"**सव्वे जीवा वि इच्छंति जीविउं, न मरिज्जिउं।**" समस्त प्राणी जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। आचारांग में भी कहा गया है-"**सव्वेसिं जीवियं पियं, नाइवाएज्ज कंचणं।**" कुछ भी हो, सबको जीवन प्रिय है, अतः किसी भी प्राणी की हिंसा मत करो।

जैसे आपको अपने प्राण प्रिय हैं, उसी प्रकार सभी जीवों को जीवन सुहाता है, प्राण अच्छे लगते हैं, जीना प्रियकर लगता है। मरना कोई पसन्द नहीं करता। सुख सभी जीव चाहते हैं, दुःख कोई नहीं चाहता। "**सुहसाया दुक्खपडिकूला।**" इसलिए प्रयत्न यह किया जाना चाहिए कि आपके द्वारा किसी को दुःख नहीं मिले, पीड़ा की प्राप्ति न हो, अपितु आप सभी को सुख दें, आपसे सभी को सुख की प्राप्ति हो। पीड़ित की पीड़ा को दूर करें। रोगी की सेवा-शुश्रूषा, औषधदान आदि से उसे स्वस्थ एवं प्रसन्न बनाएं। कोई भूखा है तो उसकी भूख मिटाने के लिए भोजनादि से उसकी वेदना समाप्त करें। पर यदि इन अवस्थाओं में कोई यह कहता है कि हम क्या करें? उनके भाग्य में ऐसा ही लिखा है, क्या किया जा सकता है? संसार में कई दुःख पाते हैं और कई मरते हैं, किस-किस की पीड़ा

मिटाएँ, किस-किस की रक्षा करें? यह सूत्र भगवान महावीर का नहीं है। मरते हुए प्राणी को बचाने, पीड़ित की पीड़ा मिटाने, दुःखी को सुखी बनाने का प्रयास करना ही चाहिए।

आज पारिवारिक जीवन में आपस में प्रेम की कमी से भी अहिंसा का सही स्वरूप हमारे सामने नहीं आ रहा है। परिवार और समाज में प्राणी-रक्षा की भावना जागृत की जानी चाहिए। परिवार के सदस्यों में श्रद्धा का जागरण करके, उन्हें विपरीत आचरण से हटाकर व्रत व मर्यादा के रास्ते पर लगाकर और जीवों का रक्षण करते हुए चलेंगे तो दया की आराधना होगी। यह आराधना ही एक दिन कर्म-बंधनों को काटकर जीव को सिद्ध, बुद्ध व मुक्त बनाएगी। ■

चले जा रहे हैं

श्री निर्मल जामड़

चले जा रहे हैं, चले जा रहे हैं,
चले जा रहे हैं, ना कोई ठिकाना,
कहाँ से हम आये, कहाँ हमको जाना.................।।1।।
ना सोचा कभी हमने, हम कौन हैं,
ज़माने से पूछा तो, सब मौन हैं,
समय की गति को, नहीं पहचाना। चले जा रहे हैं.......।।2।।
न ही चैन मिलता, न ही चैन चाहते,
मिला वो तो कम है, अभी और चाहते,
यह मन का सुख है, इसे ना बढ़ाना। चले जा रहे हैं......।।3।।
जिसे तोड़ना था, उसी को सँवारा,
बनाया है मोह को, राजा हमारा।
छोड़ेंगे कब, इससे रिश्ता निभाना। चले जा रहे हैं.......।।4।।
कहाँ काम आते हैं, ये रिश्ते-नाते,
कर्म जब हमारे, उदय में आते,
इन्हें भोगने में, न चलता बहाना। चले जा रहे हैं........।।5।।
बदलना है हमको, यह सोचें अभी से,
प्रामाणिक हो जीवन, ज्ञानाचरण से।
गुरु सद्गति का, अनोखा खज़ाना। चले जा रहे हैं......।।6।।

-2/175, जवाहरनगर, जयपुर-302004 (राज.)

इतिहास

स्थानकवासी परम्परा की विचारधारा

श्री सौभाग्यमुनि 'कुमुद'

भारतवर्ष में जैन धर्म की जो धाराएँ प्रवाहित हैं उनमें स्थानकवासी जैन धारा का अपना महत्त्व है। आम जनता में ऐसी धारणा फैली हुई है कि इस मत के व्यक्ति जहाँ धर्माराधना करते हैं उसे धर्मस्थानक कहते हैं। उस धर्मस्थानक से जुड़ने के कारण ये स्थानकवासी हैं। इसके समकक्ष एक और शब्द चलता है- देहरावासी। यह शब्द मूर्तिपूजक समुदाय के लिए प्रयुक्त है। उससे भिन्नता व्यक्त करने के लिए भी स्थानकवासी शब्द उक्त अर्थ में चल पड़ा। 'वासी' का अर्थ है बसना- निवास करना। मन्दिर अर्थात् देहरा उससे जुड़कर रहे तो 'देहरावासी' शब्द आया। उससे समतुल्य स्थानक के साथ वासी शब्द जोड़कर 'स्थानकवासी' शब्द बन गया जो आज पूरे जैनसमाज में प्रचलित और मान्य है।

मैं यह नहीं कहता कि भगवान महावीर के धर्मशासन का नाम प्राचीन काल में स्थानकवासी रहा, किन्तु यह अवश्य प्रतिपादित करता हूँ कि अर्वाचीन नाम होते हुए भी ज्ञानियों ने जो इसकी अर्थवत्ता स्थापित की है, वह भगवान महावीर की आध्यात्मिक विचारधारा के बहुत निकट है। सामान्यतया स्थानक एक विशेष भवन को कहा जाता है, किन्तु शास्त्रों में और प्राचीन परंपरा में स्थानक आत्मा का वाचक भी है। इसीलिए गुणस्थानक की व्याख्या में आत्मा को **'स्थानक'** कहकर व्यक्त किया है। आत्मा में ही गुण हो सकते हैं, अतः गुणस्थान यह आत्मा के विविध स्तर की ही व्याख्या है।

वैसे परंपरा से साधु-साध्वी को ठाणा कहते हैं। ठाणा का अर्थ है 'स्थानक', अर्थात् आत्मा। साधु का नाम-गोत्र महत्त्व का नहीं रहता, वह ये सब छोड़ आया, वह अब वह मात्र आत्मा है, स्थानक है अतः 'ठाणा' शब्द बोला जाता है, कितने ठाणा अर्थात् कितनी आत्माएँ आदि।

जब 'स्थानक' का अर्थ आत्मा रहा तो 'स्थानकवासी' शब्द का पूरा अर्थ ही बदल गया। यहाँ भवन आदि अर्थ समाप्त होकर 'स्थानक' आत्मा के अर्थ में रह गया। 'वासी' का अर्थ भी जब किसी भवन से निवास करना नहीं रहा, उसका अर्थ होगा आत्मा में निवास करना अर्थात् आत्मभावों में रमण करना, आत्मा में बना रहना। परमात्मा भगवान महावीर का मार्ग आत्मवादी है। जिनशासन में आत्मभाव से बाहर जीना परभाव कहलाता है, स्वभाव तो आत्मभाव ही है। आत्मभाव में रमण करने वाला स्थानकवासी कहा जाए तो

यह उपयुक्त ही है।

स्थानकवासी एक विचारधारा

स्थानकवासी को एक संप्रदाय मान लिया गया, यह तो लौकिक व्यवहार की विधि है। किसी एक विचारधारा और समान आचरणवाले कुछ व्यक्ति मिल जाते हैं, तो संप्रदाय मान लिया जाता है। ऐसा व्यवहार में होता है। यह कोई विवाद का विषय नहीं है, किन्तु यह बात अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि असल में यह पंथ नहीं है, न संप्रदाय है, यह एक विचारधारा है।

एक ऐसी विचारधारा जो चेतना पर केन्द्रित रहती है। विश्व में अनेक विचारधाराओं के आधार पर संप्रदायों और मत-मतान्तरों का उदय हुआ है। स्थानकवासी मत भी एक विचारधारा का विशिष्ट रूप है, वह विचारधारा आत्मामूलक विचारधारा है।

शास्त्रों में बारम्बार आत्मा से जुड़े हुए अनेक उल्लेख मिलते हैं, यथा- ''आत्मा को जानो।''

''आत्मा ही सुख-दुःख का कर्ता है।'' ''आत्मा में ही स्थित होकर पाप-प्रवृत्तियों से युद्ध करो।'' ''बाहर किसी से युद्ध क्यों करते हो, स्वयं आत्मा में दुर्वृत्तियों से युद्ध करो।'' आत्मा को जानो, उसे जान लिया तो समझो सब जान लिया आदि।

यदि परमात्मा महावीर की समस्त प्ररूपणाओं का अध्ययन करें तो एक ही तथ्य सामने आता है कि आत्मा की विशुद्धि ही उन सारी प्ररूपणाओं का लक्ष्य है। अणुव्रत, महाव्रत, त्याग, तप, पौषध, नियम, आराधना, सभी के पीछे निर्जरा का ध्येय है। निर्जरा यह आत्मशुद्धि के मार्ग में एक उपलब्धि है। निर्जरा की परिपूर्णता फिर मुक्ति का रूप ग्रहण कर लेती है, यह सब आत्मविशुद्धि की ही प्रक्रिया है। स्थानकवासी विचारधारा उसी आत्मविशुद्धि को महत्त्व देकर आगे बढ़ती है। स्थानकवासी की सारी प्रक्रियाओं के पीछे आत्मविशुद्धि का ही ध्येय रहा है। आत्मा वैकारिक परभाव से मुक्त होकर स्वयं में स्वभाव का उदय करे। स्थानकवासियों का यही मूल ध्येय है।

स्थानकवासी विचारधारा एक अन्तर्मुखी विचारधारा है, जिसका झुकाव आत्मा की तरफ ही रहता है, बाह्यवाद यहाँ मान्य नहीं है। अध्यात्म की संपूर्ति में गमनागमन जैसी सामान्य प्रवृत्तियाँ होती हैं, वे भी यहाँ पूरक के रूप में मान्य हैं, मूल के रूप में नहीं। धर्मस्थानक निर्माण, हॉस्पिटल, गौशाला, प्राणिरक्षा के सारे प्रकल्प अल्पहिंसा के बाद जीव दया और परमार्थ के उपार्जन के रूप में ही स्वीकार हैं, इसमें भी यह तो स्पष्ट है कि स्थानकवासियों ने हिंसा को धर्म के रूप में कभी भी मान्य नहीं किया। स्वधर्मि-सेवा के पीछे भी धर्म की अनुमोदना और वात्सल्यभाव ही मुख्य है।

स्थानकवासी – एक दर्शन

उपर्युक्त विवेचन से यह तो समझ में आ ही गया कि स्थानकवासी एक आत्म-जागरण का विशुद्ध अभियान है। आत्मविशुद्धि ही इसका ध्येय है। व्यक्ति चरित्र का निर्माण मत या परंपरा के आधार पर नहीं होकर अध्यात्म से उत्प्रेरित हो, यही इसकी मौलिक अवधारणा है। स्थानकवासी चिंतन अपने आपमें एक दार्शनिक विवेचना है। जो वस्तु जैसा गुणधर्म धारण करती है, उसे उसी रूप में स्वीकार करना यह इसका दार्शनिक आधार है।

जैनशासन में चार निक्षेपों का दार्शनिक स्तर पर बहुत महत्त्व है। उसका संक्षिप्त विवेचन यहाँ प्रस्तुत है-

नाम निक्षेप- नाम के माध्यम से वस्तु का ज्ञान करना।

स्थापना निक्षेप- वस्तु के आकार के द्वारा वस्तु का ज्ञान करना।

द्रव्य निक्षेप- वस्तु के भूतकाल को याद कर वस्तु का ज्ञान करना तथा भविष्य में वह जो भव्य है उसे सोचकर उसका ज्ञान करना।

भाव निक्षेप- वस्तु अपने गुणधर्म सहित उपलब्ध है। उसको तद्गुण धर्म सहित जानकर उसका ज्ञान करना।

इन चार निक्षेपों को ध्यानपूर्वक समझें तो स्पष्ट हो जायेगा कि पूर्ण वस्तु-स्वरूप से जुड़ा हुआ एक ही निक्षेप है, भाव निक्षेप, जिसमें वस्तु उसी रूप में उपस्थित है। उसके विषय में हम हेय या उपादेय का निर्णय कर सकते हैं। किन्तु हेय-उपादेय करना यह निक्षेप में नहीं, निक्षेप ज्ञान तक उपयोगी है।

जहाँ तक नाम, स्थापना और द्रव्य निक्षेपों की बात है, स्पष्ट है कि उनमें कोई यथार्थ नहीं है। नाम-नाम तक, स्थापना आकार तक और द्रव्य भूत, भविष्य की निष्पत्ति की कल्पना पर आधारित है। ये तीनों निक्षेप यथार्थ से बहुत दूर हैं, यथार्थ निक्षेप मात्र भाव-निक्षेप है, जो वस्तु का संपूर्णतः बोध देता है और बुद्धिमानों के हेय-उपादेय का आधार बनता है।

नाम-स्थापना-द्रव्य चाहे तीर्थंकरों या मुनियों से भी जुड़े हुए क्यों न हों, तीनों निक्षेप केवल सीमित ज्ञान के साधन हैं, वे पूजनीय तो हरगिज नहीं हो सकते। तीर्थंकर मुनि भावनिक्षेप के विषय बनकर उपस्थित हैं, तो वे अवश्य उपादेय और पूजनीय हो जाते हैं, क्योंकि वे तद्रूप हमारे सामने हैं।

वे तद्रूप अभी उपलब्ध हैं या तद्रूप हुए या होंगे वे त्रिकालवन्दनीय पूजनीय हो सकते हैं, किन्तु तीन निक्षेप किसी से जुड़े हों वे पूजनीय-वन्दनीय नहीं हो सकते, क्योंकि

तीनों निक्षेपों के वे तद्रूप नहीं हैं।

यहाँ मैं जो कुछ लिख रहा हूँ इसके पीछे किसी मत के खंडन या किसी की निन्दा का तनिक भी भाव नहीं है। यहाँ मात्र स्थानकवासी विचारधारा की दार्शनिक पृष्ठभूमि स्पष्ट करने का भाव है। स्थानकवासी भाव-निक्षेप को पूर्ण मानते हैं, क्योंकि उसमें पदार्थ की परिपूर्णता होती है। कोई ऐसा कहे कि- 'नाम-आकार-द्रव्य से उस पदार्थ का यत्किंचित् बोध तो होता है, इससे स्थानकवासी इन्कार नहीं करते, किन्तु यत्किंचित् ज्ञान का साधन होने से ये निक्षेप वन्दनीय-पूजनीय नहीं हो जाते।

स्कूल के अध्यापक ब्लैकबोर्ड पर आम का आकार बनाकर 'आम' दो अक्षर लिखकर आम का ज्ञान कराता है, इससे वहाँ रसवाला आम फल तो उपलब्ध नहीं हो जाता। ये बातें केवल आंशिक ज्ञान करने तक ही उपयोगी हैं, आगे नहीं।

वस्तु का स्वभाव गुण-पर्यायात्मक है, यह जिनशासन की सुस्पष्ट मान्यता है। स्थानकवासी इसे ही तो स्वीकार करते हैं। वस्तु को तद् रूप में स्वीकार करने की मान्यता ने स्थानकवासियों को अन्य दर्शनों एवं मान्यताओं से पृथक् स्थापित किया है। प्रत्येक वस्तु के अपने गुण-धर्म हैं, उन्हें स्याद्वादशैली से समझना और उसे तद्रूप ही मानना है, यह इसकी सुस्पष्ट दार्शनिकता है। सदियों से लगभग सारे विश्व में गुड्डे-गुड्डी के खेल की तरह 'मान लो' कि यह वह है। वह तो हैं नहीं, किन्तु यह 'मान लो' दो शब्द ऐसे हैं जो बुद्धि को मजबूर करते हैं। यह मजबूरी धीरे-धीरे मस्तिष्क में इतना घर कर जाती है कि उसे वह 'मान लो' ही सत्य दिखाई देने लगता है। स्थानकवासी इस 'मानलो' को स्वीकार नहीं करते। वे कहते हैं कि अर्क (आंकड़ा) का दूध है, उसे मानलो के आधार पर गाय का दूध नहीं मान सकते। जो जैसा है उसे वैसा ही मानो यह स्थानकवासी मत की दार्शनिकता है। जिस पर वे आज भी अडिग हैं।

स्थानकवासियों की शेष दार्शनिक विचार-धाराएँ वही हैं जो जैनशासन में मान्य हैं। स्थानकवासी जैन समाज किस प्रकार समृद्ध हो, इसके लिए कुछ विचार किया जा रहा है।

समाज की समृद्धि के मुख्य पाँच अंग होते हैं, इन्हें पाँच 'सकार' कह दें तो भी अनुचित नहीं होगा। वे पाँच सकार इस प्रकार है- साधु, शास्त्र, संस्थान, संस्कृति और साधना।

1. साधु- साधुसमाज की दृष्टि से स्थानकवासी समाज एक समृद्ध समाज है। इस समाज के पास हजारों साधु-साध्वियों का भरापूरा इतिहास है। वक्ता, गुणी और प्रभावक साधु ही नहीं, साध्वियाँ भी हजारों हो चुकी हैं। अनेक साहित्यकार, विद्वान मुनियों की यहाँ परम्परा रही है। यदि सारा इतिहास संकलित किया जाये तो सैंकड़ों ग्रन्थ तैयार करने होंगे।

वर्तमान में बारह सौ लगभग साधु-साध्वीजी म. तो श्रमण संघ में ही हैं। विभिन्न संप्रदायों और गुजरात संप्रदाय सभी को मिलाकर तीन हजार से चार हजार जितने साधु-साध्वी हैं, जो देश के कोने-कोने में विहार-प्रवास कर रहे हैं।

न केवल जैन समाज अपितु भारतीय आमजन को चरित्रवान बनाने की प्रेरणा इन संत-सतीजी द्वारा सर्वत्र दी जाती है।

जैन साधु-साध्वी स्वभाव से ही परिश्रमी और व्यवहारकुशल होते हैं। पादविहारी होने के कारण छोटे-छोटे गाँवों में भी उनको रुकना ही पड़ता है। वे जहाँ भी रुकते हैं, अपने आवश्यक कार्यों से निवृत्त होकर प्रवचन अवश्य करते हैं। जैन मुनियों के प्रवचन में आबालवृद्ध आम नागरिकों को आने का अधिकार रहता है, वहाँ किसी तरह की कोई रुकावट या छुआछूत नहीं रहती। साधु-साध्वी भी अपने प्रवचनों में जनचरित्र को दुर्व्यसनों से मुक्त करने का ध्येय रखते हैं। ये जैन मुनि एवं साध्वियाँ हैं जो वर्षभर में लाखों व्यक्तियों को व्यसनमुक्त कर देते हैं। वे करुणा, दया, सेवा-सात्विकता, सहनशीलता और सज्जनता जैसे मानवीय गुणों का प्रचार करते हैं। वे अपने प्रवचनों में सभी मत-मतान्तरों के शास्त्रों में से जो भी तत्त्व परक उपदेश हैं उन सबका उपयोग निःसंकोच करते हैं।

जैन मुनि एक संप्रदाय से अवश्य जुड़े हुए होते हैं, किन्तु वे कट्टर सांप्रदायिक नहीं होते। वे संप्रदायों में परस्पर सामंजस्य की कामना करते हैं। जैन कट्टरवादी और झगडालू हो ही नहीं सकते, क्योंकि वे संख्या में अल्प हैं और साधनसंपन्न भी हैं.....झगड़े और दंगा-फसाद से यह समाज हानि में रहेगा, यह सब जानते हैं। एक शान्तिवादी समाज किसी को कहा जा सकता है तो वह जैन समाज है।

इस समाज के अहिंसा के संस्कार ही इतने गहरे हैं कि किसी से मारपीट करना इनके लिए दुष्कर कार्य है। यह सब साधु-समाज की देन है। साधु-समाज तो अन्य सभी को ऐसा करने की प्रेरणा देता है।

पूरे राष्ट्र में जैन साधु-साध्वी लोकशान्ति के लिए प्रयत्नशील हैं। स्थानकवासी समाज के साधु-साध्वी भी इसी साधुसमाज के अंग हैं।

2. शास्त्र और साहित्य- जैनसमाज में यों तो बड़ी संख्या में शास्त्र मान्य हैं, किन्तु बत्तीस आगम प्रमुख हैं। अन्य आगमों की मान्यता खण्डित मान्यता है, किन्तु बत्तीस शास्त्रों की मान्यता अखंड है। यह जरूर है कि दिगम्बर-समाज इन शास्त्रों के नाम तो मानता है, किन्तु विद्यमान शास्त्रों को नहीं मानता।

श्वेताम्बर समाज में ये सर्वमान्य हैं। स्थानकवासी समाज बत्तीस आगमों को ही सर्वाधिक महत्त्व देता है। इन बत्तीस शास्त्रों पर जैन विद्वानों ने अनेक संस्कृत और हिन्दी

टीकाएँ लिखीं, जो बहुत विद्वत्तापूर्ण हैं।

इन आगमों के उपरान्त कोष-ग्रन्थ, जीवनी-साहित्य, प्रवचन-साहित्य, आत्मकथा, उपन्यास, कहानी, गद्यपद्यात्मक साहित्य, पौराणिक चरित्र साहित्य आदि विधाओं में हजारों पुस्तकें प्रकाशन में आ चुकी हैं।

अनुसन्धानात्मक साहित्य भी भरपूर है। सैकड़ों प्रकाशन संस्थाएँ प्रतिदिन नये-नये साहित्य का प्रकाशन कर रही हैं। शताधिक ग्रन्थ लिखने वाले अनेक मुनि और महासती जी स्थानकवासी जैनसमाज को गौरव प्रदान कर रहे हैं।

जीवनस्पर्शी, अध्यात्मप्रधान, वैराग्यप्रद और सच्चरित्र प्रेरक हजारों पुस्तकें छप चुकी हैं और क्रम चल रहा है।

गद्य ही नहीं पद्य में भी यहाँ बहुत बड़ी रचनाएँ हो चुकी हैं और हो रही हैं। साहित्य और शास्त्र की दृष्टि से यह समाज अच्छा समृद्ध है।

3. संस्थान- जैन समाज में जैन स्थानक, उपाश्रय, पौषध-शाला, सामायिक भवन, समता भवन, प्रकाशन संस्थान, गोशालाएँ, चिकित्सालय, छात्रावास, स्कूल-कालेज के रूप में हजारों संस्थान पूरे देश में फैले हुए हैं।

स्थानकवासी समाज के पास भी सहस्राधिक धर्मस्थानकों की शृंखला है। हॉस्पिटल, छात्रावास, कॉलेज, गौशालाओं और प्रकाशन संस्थान आदि के निर्माण से यह समाज बहुत समृद्ध है। दश या इससे अधिक जहाँ भी स्थानकवासी जैन परिवार रहते हैं, वहाँ धर्मस्थानक मिल जायेंगे। सम्पूर्ण भारतवर्ष में जैन धर्मस्थानक लगभग सभी क्षेत्रों में मिल जायेंगे।

जैन धर्मस्थानक असल में बहुआयामी भवन होते हैं। वहाँ साधु-साध्वियों का विहार यात्रा में निवास तो होता ही है, प्रतिदिन धर्म-साधनाएँ भी होती हैं। अनेक स्थानकों में विविध रोग-चिकित्सा हेतु निःशुल्क शिविर लगते रहते हैं। अनेक स्थानकों के साथ स्कूल जुड़े हुए हैं। अनेक गाँवों में तो ग्राम धर्म-सभाएँ भी स्थानक में आयोजित की जाती हैं। गृहस्थों के निवास की अपेक्षा जैन धर्मस्थानक विस्तृत और सुविधासंपन्न हैं।

4. संस्कृति- जैन धर्म एक अहिंसाप्रधान धर्म है, अतः इसकी संस्कृति भी अहिंसा और धर्म से संयुक्त रहती है।

पर्युषणः- जैन धर्म में आठ दिन का पर्युषण महापर्व एक अप्रतिम स्थान रखता है। इन आठ दिनों में जैनबन्धु धर्म साधना, स्वाध्याय और त्याग-तप में रत रहते हैं। संवत्सरी पर्युषण का अन्तिम दिन होता है।

संवत्सरी:- संवत्सरी जैन धर्म में सबसे बड़ा धार्मिक त्यौहार है, उस दिन जैन भाई-बहन यहाँ तक कि बालक-बालिका भी उपवास रखते हैं। उस दिन मुख्यतया शास्त्र-स्वाध्याय, आत्म-आलोचना एवं विशेष प्रतिक्रमण किया जाता है।

क्षमापना:- संवत्सरी के ठीक दूसरे दिन क्षमापना दिवस मनाया जाता है। इसमें छोटे-बड़े सभी आपस में मिलकर अपनी भूलों के लिए क्षमा-याचना करते हैं। इस अवसर पर हजारों जैनेतर बन्धु भी क्षमापना, क्षमायाचना में भाग लेते हैं।

इन पर्वों में जीवदया, जनसेवा एवं दान-पुण्य करने की भी प्रवृत्ति रहती है।

महावीर जयन्ती:- यह पर्व प्रायः अप्रेल में आता है। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी का दिन होता है। जैन व्यक्ति इस त्यौहार को बहुत उत्साह से मनाते हैं। सामूहिक विशाल जुलूस, प्रभात फेरियाँ, विशाल जनसभा आदि आयोजित होते हैं। इस दिन लगभग जैन धर्म के सभी समुदाय एकसाथ हो जाते हैं और मिलजुल कर समूहभोज भी करते हैं। सभी आपस में 'जय जिनेन्द्र' करते हैं और गले मिलते हैं। यह त्यौहार जैनसमाज में सांप्रदायिक सौहार्द का त्यौहार बन गया।

जनसेवा और जीवदया में लाखों की राशि भी घोषित की जाती है। अनाथालयों और अभावग्रस्त विद्यार्थियों की विशेष सेवा की जाती है। जैनसमाज में साधु-साध्वियों के विभिन्न क्षेत्रों में पदार्पण का बड़ा महत्त्व है।

साधु-साध्वीजी जब किसी क्षेत्र में पधारते हैं, तो आबालवृद्ध लगभग सारा समाज उनकी अगवानी के लिए दूर तक सामने जाता है। भाई जयकार लगाते हुए तथा बहनें मंगलगीत गाती हुई मुनिराजों का नगरप्रवेश कराते हैं। मंगलगीतों को चोबीसी कहते हैं। चौबीस तीर्थंकर भगवान की स्तुतियाँ होती हैं। अतः इन्हें चोबीसी कहते हैं।

स्थानकवासी समाज में साधु-साध्वी की अगवानी में ढोल, नगाड़े और बेण्ड-बाजा नहीं बजाया जाता है; केवल जयकारों के साथ मुनियों का स्वागत होता है। मुनियों, साध्वीजी म. की विदाई के अवसर पर भी पूरा समाज दूर तक पहुँचाने जाता है, जयकारे और चौबीसियाँ इस अवसर पर भी होती हैं। यह जैन समाज की पुरानी संस्कृति है।

5. साधना- स्थानकवासी जैन समाज में साधना की प्रधानता है। इस समाज की साधना के मुख्य अंग हैं-संवर, सामायिक, पौषध, उपवास (विविध तप) प्रतिक्रमण, जिन भावभक्ति, स्वाध्याय, स्मरण, वन्दन आदि। बहुत ध्यान से समझिये इस बात को कि स्थानकवासी जैन धर्म की साधनाएँ असल में धर्मसाधना होती है। इस धर्म की किसी साधना में ढ़ोल, नगाड़े, आरती, फूलपत्ती, पेड़, पानी, पहाड़, पत्थर, प्रेत आदि की पूजा

नहीं होती। यह धर्म परमात्मा की भावपूजा में विश्वास करता है। इनका ऐसा मानना है कि साधना के साथ बाह्य प्रवृत्तियों को जोड़ देने पर भक्ति का अन्तर्मुखी स्वरूप नष्ट हो जाता है। वीतराग-आराधना के स्थान पर बाह्य सुर-ताल-लय-डेकोरेशन, फूल, आरती में मन बह जाता है। इनसे भावपूर्ण भक्ति में विक्षेप आता है।

संवर-सामायिक-पौषधः- ये तीनों क्रमशः अल्पकालीन, मुहूर्त्तकालीन और अहः निशिकालीन साधनाएँ हैं। इनमें मन-वचन की प्रवृत्तियों को अमुक अंश तक पाप प्रवृत्ति में जाने से रोका जाता है।

उपवासः- स्थानकवासी जैन धर्म में तप पर बहुत ध्यान दिया जाता है। गंठिसहियं मुट्ठि सहियं अर्थात् अत्यन्त अल्पकालीन तप से लेकर छह मास के तप (अब तो तिविहारतप, दीर्घकालीन भी हो रहे हैं) इस समाज में अनेक मुमुक्षु जन करते रहते हैं।

तप के विषय में सुदृढ़ मान्यता है कि इससे आत्मशुद्धि होती है तथा एक विशेष प्रकार के पूर्व संचित कर्मों का क्षय भी हो जाता है। कर्म-क्षय को जैनभाषा में निर्जराधर्म कहा गया है।

प्रतिक्रमणः- स्थानकवासी जैन समाज में प्रतिक्रमण साधना का बड़ा महत्त्व है। प्रतिक्रमण का अर्थ है अपने कृत पापों का स्मरण कर उनकी आलोचना करना, प्रायश्चित्त रूप में ध्यान करना आदि जैनसाधकों का दैनिक क्रम है।

देवसिय-निशि-पाक्षिक-चातुर्मासिक और सांवत्सरिक ये पाँच प्रतिक्रमण इस धर्म में मान्यता प्राप्त हैं। नाम के साथ ही अर्थ स्पष्ट है। दिवसकृत पाप का प्रतिक्रमण 'दिवसीय' कहलाता है। इसी तरह निशीकृत, पक्ष कृत चातुर्मासकृत एवं वर्षकृत पापों का प्रतिक्रमण भी किया जाता है।

स्थानकों में प्रायः प्रतिदिन सायंकाल को 'देवसिय' और प्रातः 'राइय' प्रतिक्रमण करते हुए साधु-साध्वियों एवं श्रावक-श्राविकाओं को देखा जा सकता है।

स्वाध्याय-जिनभक्ति स्तुति-स्मरण साधनाएँः-

इस मत में ज्ञान और जिन (प्रभु) भक्ति की प्रधानता है, अतः इस मत में स्वाध्याय की आराधना बहुत अधिक की जाती है। साधु-साध्वी ही नहीं, श्रावक-श्राविकाएँ भी नियमित स्वाध्याय करते हैं। स्थानकवासी जैनों में हजारों व्यक्ति जीव-अजीव आदि नवतत्त्व, षड्द्रव्य, तत्त्वार्थ आदि के ज्ञाता हैं। शास्त्रों में से बोल निकालकर स्तोकों (थोड़े में बहुत) का निर्माण कर दिया और वे स्तोक सैंकड़ों की संख्या में हैं, इन्हें कंठस्थ किया जाता है। इस ज्ञान को स्थानकवासी 'जाणपणा' कहते हैं।

जाणपणा रखने वाले कुछ भाई-बहन तो आपको प्रत्येक क्षेत्र में मिल जायेंगे। यह जागपणा भी स्वाध्याय ही है। स्वाध्यायी भी हजारों की संख्या में इस धर्मपरम्परा में विद्यमान है। ये स्वाध्यायी अब तो अन्य ऐसे क्षेत्र, जहाँ साधु-साध्वीजी का वर्षावास नहीं है, वहाँ पर्युषण में आठ दिन प्रवचन करने भी जाते हैं।

प्रतिवर्ष सैकड़ों स्वाध्यायी आठ दिन जिनशासन सेवा में समर्पित रहते हैं। स्वाध्याय के उपरान्त स्थानकवासी जैन स्मरण, जिन स्तुतिगान आदि के साथ प्रभुभक्ति भी प्रतिदिन करते हैं। यह सब अध्यात्मपरक आराधना है। इनमें कोई मांग नहीं होती, केवल प्रभुभक्ति, गुरु-भक्ति और स्मरण, प्रार्थनादि मुँह से यत्नापूर्वक उच्चारण करने के बाद भी भावभक्ति रूप ही होते हैं। इनमें किसी तरह के वाद्य आदि का प्रयोग नहीं किया जाता।

उपसंहार- पूरे जैनसमाज का यदि सूक्ष्मतापूर्ण अध्ययन करें तो स्थानकवासी जैन परम्परा सिद्धान्त, साधना, सेवा आदि विविध-आयामों में बहुत अधिक गुणवत्ता लिए हुए है।

एक सादगीपूर्ण, आडम्बर, मीडियावाद, प्रदर्शन, नेता, पूजा से मुक्त परमात्मा भगवान महावीर प्ररूपित शुद्ध अध्यात्म पर आधारित यह स्थानकवासी जैन परम्परा पिछले सैंकड़ों वर्षों से लाखों लाख चैतन्यवासी मुमुक्षु नर-नारियों के लिए आत्मकल्याण का शुद्ध साधन बना हुआ है।

यह अपनी विशिष्ट शैली के साथ भगवान महावीर के गौरवशाली धर्मशासन की सेवा करते हुए उसे वर्धमान करने में संलग्न है।

बाल-स्तम्भ [जुलाई-2013] का परिणाम

जिनवाणी के जुलाई-2013 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'धन, प्रेम और सफलता' कथा के प्रश्नों के उत्तर 35 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	दीपेश जैन-सवाईमाधोपुर (राज.)	22.5
द्वितीय पुरस्कार-300/-	पायल मेहता-ब्यावर (राज.)	20.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	प्रखर गाँधी-चित्तौड़गढ़(राज.)	19.5
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	पूजा जैन-अलीगढ़-रामपुरा(राज.)	18.5
	तनिष्का बांठिया-छावनी,नागपुर (महा.)	18.5
	आयुषी जैन-जयपुर (राज.)	18.5
	दीप्ति जैन-लाड़पुरा,कोटा (राज.)	18
	सौरभ भण्डारी-पीपाड़ शहर(राज.)	18

शोधालेख

जैन साहित्य में संगीत

उपाध्यायश्री रमेशमुनि जी शास्त्री

संगीत एक विशिष्ट कला है। यह अपने आप में इतनी अधिक परिपूर्ण और चित्ताकर्षक है कि जीवन की उषा वेला से लेकर जीवन की संध्या तक सर्वजन के मन को मोह लेती है और हृदय को हर लेती है। यह न केवल विज्ञ को प्रिय है, अपितु अज्ञ को भी अतिप्रिय है।

जैन साहित्य का तलस्पर्शी अध्येता इस तथ्य से पूर्णतः परिचित है कि कपिल मुनिजी ने उत्तराध्ययन सूत्र के अष्टम अध्ययन को ध्रुवपद में गाकर पाँच सौ तस्करों को स्तेय-कृत्य से सर्वथा विरक्त करके जैनेन्द्री दीक्षा प्रदान की थी।[1] भगवान् ऋषभ देव ने प्रजा के हित के लिये, अभ्युदय के लिये, जन-जीवन में सुख-शान्ति का संचार करने के लिये कलाओं का उपदेश प्रदान किया।[2] उन कलाओं में अर्थात् बहत्तर कलाओं में गीत पंचम कला और चौसठ कलाओं में एकादश कला है।[3] उस युग में स्त्री और पुरुष इन दोनों के लिये प्रस्तुत कला का परिज्ञान करना नितान्त अनिवार्य माना जाता था।

राजा, महाराजा और आभिजात्य वर्ग के मानव ही नहीं, अपितु सामान्य स्तरीय जन भी गीत के प्रति रुचिशील थे। जैसे चित्र और संभूत-ये मातंग पुत्र तिसरय वेणु एवं वीणा को बजाते हुए जब नगर से निकलते थे तब जन-मन मुग्ध हो उठता था। कौमुदी महोत्सव पर भी मानव गीत गाते थे।[4] इसी प्रकार इन्द्र महोत्सव पर भी मानव आनन्द विभोर होकर गीत गाते थे।[5] इसी प्रकार राजा उदयन भी बड़ा संगीतज्ञ था। उसने अतीव मधुर संगीत के माध्यम से एक बार मदोन्मत्त हाथी को वश में कर लिया था। एक बार उज्जयिनी के राजा प्रद्योतन ने राजकुमारी वासवदत्ता को संगीत सिखाने के लिये संगीतज्ञ की नियुक्ति की थी और उसने उसे संगीत की शिक्षा दी थी।[6] सिन्धु-सौवीर के नरेश उद्रायण भी श्रेष्ठ संगीतज्ञ थे। वे स्वयं भी वीणा बजाते और रानी नृत्य करती थी।[7] वह सरसों की राशि पर भी नृत्य करती थी।[8]

इसी सन्दर्भ में यह भी ज्ञातव्य है कि काव्य के चतुर्विध भेदों में संगीत की परिगणना की गई है।[9] वह वाद्य, नाट्य, गेय एवं अभिनय के भेद से चार प्रकार का है। उसमें वीणा, ताल, तालसय और वादित्र को मुख्य स्थान दिया गया है। गीत-कला के उल्लेख के रूप में गीतों

के चार भेद भी प्रतिपादित हुए हैं।[10]

शिष्य ने जिज्ञासा प्रस्तुत की- "प्रभो! स्वर कितने हैं? गीत का प्रादुर्भाव कहाँ से होता है? कहाँ उच्छ्वास ग्रहण किये जाते हैं और गीत के कितने प्रकार हैं?"[11] आचार्यश्री समुचित-समाधान देते हैं- "हे वत्स! सात स्वर हैं और वे नाभि से उत्पन्न होते हैं। शब्द ही उनका मूलभूत स्थान है। छन्द के प्रत्येक चरण में उच्छ्वास ग्रहण किये जाते हैं और गीत का वर्गीकरण तीन प्रकार से हुआ है।"[12] शिष्य पुनः प्रश्न उपस्थित करता है- "हे प्रभो! गीत के तीन प्रकार कौन-कौन से हैं?" आगमकार इसका समाधान भी देते हैं- "गीत प्रारम्भ में मृदु होता है, मध्य में तेज होता है और अन्त में पुनरपि मन्द होता है।[13] शिष्य पुनः जिज्ञासा प्रगट करता है- "हे प्रभो! गीत के कितने दोष हैं? और कितने गुण हैं?" उक्त जिज्ञासा का भी सूत्रकार सुन्दर रूपेण समाधान देते हैं। गीत के छह दोष और आठ गुण हैं। जो इन दोषों का और गुणों का परिज्ञाता होता है वही कला-कोविद सम्यक् प्रकार से गाता है।[14] शिष्य पुनः प्रतिप्रश्न करता है- "भगवन्! वे गीत के छह दोष एवं आठ गुण कौन से हैं?" समाधान किया जाता है- छह दोष इस रूप में प्रतिपादित है-[15]

1. **भीत**- भयभीत मानस से गाना।
2. **द्रुत**- जल्दी-जल्दी गाना।
3. **अपित्थ**- श्वास युक्त शीघ्र गाना अथवा ह्रस्व-स्वर व लघु-स्वर से गाना।
4. **उत्ताल**- अति उत्ताल स्वर से व अवस्थान ताल से गाना।
5. **काक स्वर**- कौए के समान कर्ण-कटु शब्दों से गाना।
6. **अनुनासिक**- अनुनासिक से गाया जाय अर्थात् नाक से गाना।

गीत के आठ गुण हैं[16] और उनका स्वरूप इस प्रकार है-

1. **पूर्ण**- स्वर, लय और कला से युक्त गाना।
2. **रक्त**- पूर्ण तल्लीनता पूर्वक गाना।
3. **अलंकृत**- स्वर-विशेष से अलंकृत गाना।
4. **व्यक्त**- स्पष्ट रूप से गाना, जिससे स्वर और अक्षर साफ-साफ परिज्ञात हो सकें।
5. **अविघुष्ट**- अविपरीत स्वर से गाना।
6. **मधुर**- ऋतुराज वसन्त के आगमन पर जैसे कोकिल मस्त होकर गाती है, वैसे मधुर गाना।
7. **सम**- ताल, वंश और स्वर से समत्व गाना।

8. **सुललित–** कोमल स्वर से गाना।

ये आठों गुण संगीत कला के लिये नितान्त आवश्यक हैं। इनके अतिरिक्त और भी गुण आगमकार ने प्रतिपादित किये हैं, जो इस प्रकार हैं[17]–

1. **उरो विशुद्ध–** जो स्वर वक्षस्थल से विशुद्ध होकर निकलता है, वह उरो विशुद्ध कहलाता है।
2. **कण्ठ विशुद्ध–** जो स्वर भंग न होकर स्पष्ट तथा कोमल रहे, वह कण्ठ विशुद्ध कहलाता है।
3. **शिरो विशुद्ध–** मूर्धा को प्राप्त होकर भी जो स्वर नासिका से मिश्रित नहीं होता है, वह शिरो विशुद्ध है।
4. **मृदुक–** जो राग कोमल स्वर से गाया जाय, वह मृदुक कहलाता है।
5. **रिङ्गित–** जहाँ आलाप के कारण स्वर अठखेलियाँ करता सा प्रतीत हो, वह 'रिङ्गित' कहलाता है।
6. **पदबद्ध–** जहाँ गेय पद विशिष्ट लालित्य युक्त भाषा में निर्मित किये गये हों।
7. **समताल प्रत्युत्क्षेप–** जहाँ नर्तकी का पाद निक्षेप और ताल आदि परस्पर मिलते हों, वह समताल प्रत्युत्क्षेप कहा जाता है।

शिष्य प्रश्न करता है कि– "भगवन्! क्या सभी व्यक्ति एक सदृश गाते हैं अथवा विभिन्न रूप से गाते हैं?" आगमकार समाधान करते हैं कि सभी एक सदृश नहीं गाते हैं। किन्तु अलग–अलग प्रकार से गाते हैं।[18] यह एक अनुभूत स्पष्ट तथ्य है और ध्रुव सत्य है।

यह विदित है कि जैनागमों के पद्यों को 'गाहा' कहा जाता है। उसका संस्कृत रूपान्तर 'गाथा' है। गाथा आर्या नामक छन्द से निबद्ध होती है। वह गेय रूप होती है। गाथाएँ विविध लयों में गाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त यह भी स्पष्ट है कि विकारोत्तेजक गीत कला नहीं है, अपितु विलास है और वह आत्मा को संसार के कानन में इतस्ततः परिभ्रमण कराती है जिसके परिणामस्वरूप जीव दुःखाग्नि से संतप्त होता है। अतएव विकार प्रधान गीत से अपने आपको बचाना आवश्यक है। वास्तव में विषयवर्धक गीतों में नैतिक–चेतना एवं अध्यात्म प्रधान भावना का सर्वथा रूपेण अभाव होता है और उससे जीवन का विकास कथमपि संभव नहीं है।

सारपूर्ण भाषा में यही कहा जा सकता है कि संगीत अन्तर्मन की मधुरिमा है, अन्तरात्मा का स्वर्णिम प्रकाश है और जीवन की सुतरां सौरभ है, समग्र–साहित्य का सारांश है। यदि उसमें भावों का गाम्भीर्य नहीं है, स्वस्थ एवं पवित्र विचार नहीं है, तब वह

केवल शुष्क संगीत है और मनोरंजन का साधन है। जिस संगीत में आत्मानुसन्धान का उन्मुक्त रूपेण उन्मेष है, वह संगीत वस्तुतः संगीत है और आत्मा की अजर-अमर अभिव्यक्ति है। इतना ही नहीं, संगीत जीवन को प्राणवान बना देता है एवं आनन्द का नन्दन-वन है, जिसकी सुमधुर-सौरभ से जन-जन का अन्तर्मन अनुप्राणित और अनुप्रीणित हो जाता है।

संदर्भः-

1. उत्तराध्ययन सूत्र बृहद् वृत्तिपत्र, 289
2. कल्पसूत्र, सुबोधिका टीका सूत्र, 211
3. समवायांग सूत्र, समवाय, 72
4. उत्तराध्ययनसूत्र टीका- 13, पृष्ठ 185
5. निशीथ सूत्र, 19.11.12
6. आवश्यक चूर्णि 3, पृष्ठ 161
7. उत्तराध्ययनसूत्रटीका, 18, पृष्ठ 253
8. आवश्यक चूर्णि, पृष्ठ 555
9. स्थानांग सूत्र, 379
10. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र, पृष्ठ 479
11. (क) स्थानांग सूत्र, 7.3.19.393
    (ख) अनुयोग द्वार सूत्र, गाथा 19
12. (क) स्थानांग सूत्र, 7.3.19.533
    (ख) अनुयोगद्वार सूत्र, गाथा 21
13. (क) स्थानांग सूत्र, 7.3.21.553
    (ख) अनुयोग द्वार सूत्र, गाथा 21
14. (क) स्थानांगसूत्र, 7.3.22.553
    (ख) अनुयोगद्वार सूत्र, गाथा 22
15. (क) स्थानांग सूत्र, 7.3.23.553
    (ख) अनुयोगद्वार सूत्र, 23
16. (क) स्थानांगसूत्र, 7.3.24
    (ख) अनुयोगद्वार सूत्र, 6
17. (क) स्थानांगसूत्र, 7.3.25
    (ख) अनुयोगद्वार सूत्र, 7
18. (क) स्थानांग सूत्र, 7
    (ख) अनुयोगद्वार स्वर लक्षणा गाथा, 12

शोधालेख

पंच समवाय सिद्धान्त : एक समीक्षा (3)

डॉ. श्वेता जैन

पूर्वकृत कर्मवाद : पूर्वकृत कर्म की ऐकान्तिक कारणता सम्बन्धी मत

जीव के पूर्वकृत कर्म ही उसके वर्तमान फल के प्रति कारण होते हैं। जीव के समस्त कार्यों के प्रति पूर्वकृत कर्म ही कारण हैं, अन्य नहीं- यह मान्यता पूर्वकृत कर्मवाद है। ऐकान्तिक रूप से कर्म को कारण कहने वाले कर्मवादी मानते हैं कि जीव कर्म-फल को परिवर्तित करने में समर्थ नहीं होते हैं तथा जैसा कर्म करते हैं वैसा ही फल भोगते हैं। कालवाद, स्वभाववाद एवं नियतिवाद के समान कर्मवाद भी भारतीय चिन्तन में रचा-पचा रहा, किन्तु एकान्त पूर्वकृत कर्म को ही कारण मानने वाले वाद के स्वतन्त्र सम्प्रदाय का कहीं भी कोई उल्लेख प्राप्त नहीं होता है।

कर्मवादी के प्रमुख तर्क

जैनदर्शन में 'कर्मसिद्धान्त' की प्रधानता होते हुए भी एकान्त कर्मवाद का द्वादशारनयचक्र, शास्त्रवार्ता समुच्चय और सन्मतितर्क की तत्त्वबोधविधायिनी टीका में जैनाचार्यों ने उपस्थापन एवं निरसन किया है। आचारांगसूत्र एवं उसकी शीलांक टीका में भी एकान्त कर्मवाद का उपस्थापन हुआ है। एकान्त कर्मवाद के उपस्थापन में जो तर्क दिए गए हैं, वे इस प्रकार हैं-

1. जगत् की विचित्रता का कारण कर्म ही है।
2. पुरुषकार या पुरुषार्थ के द्वारा भी जब कार्य की सिद्धि नहीं होती है तब पूर्वकृत कर्म ही कारण के रूप में सिद्ध होता है।
3. भोक्ता को भोग्य पदार्थ स्वकृत कर्म के अनुसार ही मिलते हैं, अत: भोग्य पदार्थ की प्राप्ति से पुरुष के कर्मों की सिद्धि स्वत: हो जाती है।
4. जीवों का पूर्वार्जित कर्म ही जगत् का उत्पादक होता है। **"जगद्धेतुत्वं कर्मण्येव, इतरेषां पराभिमतहेतूनां व्यभिचारित्वादिति भाव:"** अर्थात् जगत् की कारणता जीव के कर्मों से ही है, क्योंकि अन्यवादियों द्वारा बताए गए कारण व्यभिचरित हो जाते हैं।
5. पूर्वकृत कर्म का फल खजाने में स्थित धन की भाँति होता है, जो समय आने पर उपस्थित होता है। इसी प्रकार हाथ में रखे हुए दीपक के समान बुद्धि की प्रवृत्ति भी

पूर्वकृत कर्मानुसार ही होती है।

कर्म की एकान्त कारणता का निरसन

एकान्त कर्मवाद के निरसन में जैनाचार्यों ने जो तर्क दिए हैं, उनमें से प्रमुख तर्क इस प्रकार हैं-

1. कर्मवादी कर्म को कारण मानते हैं, जबकि वह कर्ता का कार्य है अर्थात् पुरुषार्थ का ही परिणाम है।
2. यदि पुरुषार्थ का महत्त्व नहीं है एवं कर्म से ही सबकुछ होता है तो समस्त शास्त्र की व्यर्थता का प्रसंग उपस्थित होता है। आत्मा और कर्म में परिणाम और परिणामक भाव पाया जाता है।
3. यदि अदृष्ट कर्म को सर्वत्र कारण माना जाय तो मोक्ष के अभाव की आपत्ति होगी, क्योंकि मोक्ष कर्मजन्य नहीं होता है।
4. कर्म से जगत् की विचित्रता सम्भव नहीं है, क्योंकि कर्म कर्ता के अधीन है। एक स्वभाव वाले कर्म से जगत् की विचित्रता रूपी कार्य नहीं हो सकता। यदि कर्म को अनेक स्वभाव वाला स्वीकार किया जाए तो पुरुषकार, स्वभावादि अनेक कारणों को मानने में और इस कर्म को मानने में नाममात्र का भेद रह जाएगा।
5. आत्मा कर्म का आलम्बन है, इस आलम्बन के बिना कर्म अपना कार्य नहीं कर सकता। अधिष्ठायक (आत्मा) को स्वीकार करते ही एकान्त कर्मवाद खण्डित हो जाता है।

भारतीय परम्परा एवं जैनदर्शन में कर्म की कारणता

भारतीय चिन्तन में पूर्वकृत कर्मवाद की जड़ें गहरी हैं। वैदिक वाङ्मय तथा बौद्ध और जैन ग्रन्थ इसके साक्षी हैं। वैदिक संहिताओं में शुभ-अशुभ कर्मों को व्यक्त करने वाले शुभस्पतिः, धियस्पतिः, विचर्षणिः, विश्वचर्षणिः, "विश्वस्य कर्मणो धर्ता" आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। बृहदारण्यकोपनिषद्, कठोपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद्, ऐतरेयोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद् आदि उपनिषदों में कर्म के अनुसार फल-प्राप्ति की पुष्टि करने वाले वाक्य समुपलब्ध हैं। संन्यासोपनिषद् में कहा गया है- "**कर्मणा बध्यते जन्तुर्विद्यया च विमुच्यते।**" ब्रह्मबिन्दूपनिषद् में मन को बंधन एवं मोक्ष का कारण निरूपित किया गया है- "**मन एव मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयोः।**" उपनिषद् वाङ्मय में कर्म के बन्धन पुनर्जन्म और मोक्षादि का सम्यक् प्रतिपादन है।

न्यायदर्शन में कर्म को अदृष्ट के रूप में निरूपित किया गया है। सांख्यदर्शन में धर्म

(सत्कर्म) से ऊपर के लोकों में गमन तथा दुष्कर्म से अधोलोक में गमन अंगीकार किया गया है। मीमांसा दर्शन में प्रतिपादित अपूर्व सिद्धान्त को कर्म सिद्धान्त का पर्याय कहा जा सकता है। बौद्ध दर्शन में कर्म को चैतसिक कहते हुए उसे चित्त के आश्रित माना गया है। कर्म के वहाँ मानसिक, वाचिक और कायिक तीन भेद अंगीकृत हैं, जिन्हें त्रिदण्ड भी कहा गया है। वेदान्त दर्शन के अनुसार बन्धन का मूल कारण अविद्या या अज्ञान है। योगदर्शन में क्लिष्ट वृत्ति के संस्कार को ही कर्म-बन्धन का हेतु माना गया है। योगसूत्र में जाति, आयु और भोग के रूप में कर्म-विपाक की त्रिविधता निरूपित है।

कर्मसिद्धान्त का सबसे अधिक व्यवस्थित निरूपण जैन दर्शन में उपलब्ध है। यह जैन दर्शन का प्रमुख सिद्धान्त है। कर्मसिद्धान्त या कर्मवाद से सम्बद्ध जैन दर्शन में विपुल साहित्य है। श्वेताम्बर परम्परा में प्रज्ञापना सूत्र, व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र, स्थानांग सूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र आदि आगम साहित्य के अतिरिक्त कम्मपयडि, 6 कर्म-ग्रन्थ, पंच-संग्रह आदि अनेक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। दिगम्बर परम्परा में षट्खण्डागम, कसायपाहुड, गोम्मटसार आदि ग्रन्थ अपना अप्रतिम स्थान रखते हैं।

जैनदर्शन में कर्म-सिद्धान्त का जितना व्यवस्थित एवं व्यापक निरूपण उपलब्ध होता है उतना किसी अन्य दर्शन में नहीं। जैन मान्यतानुसार कर्मों के कारण ही जीव संसार में परिभ्रमण करता है। कर्मों का पूर्ण क्षय ही मोक्ष का स्वरूप है। जैनदर्शन में आठ कर्म प्रतिपादित हैं- ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र और अन्तराय। इन आठ कर्मों का स्वरूप एवं इनके बन्ध के हेतुओं आदि का जैन साहित्य में विशद प्रतिपादन हुआ है। कर्म के बंधन में मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग की भूमिका स्वीकार की गई है। इन पाँच बन्ध हेतुओं में भी योग और कषाय को अधिक महत्त्व दिया गया है।

प्रश्न उपस्थित होता है कि जैनदर्शन कर्म-सिद्धान्त का सूक्ष्म विवेचन करके भी कार्य की सिद्धि में उसकी एकान्त कारणता को अंगीकार क्यों नहीं करता? इसका एक कारण यह प्रतीत होता है कि जैनदर्शन व्यापकदृष्टि को लिए हुए है, अत: वह पुरुषार्थ को भी उतना ही महत्त्व देता है, जितना पूर्वकृत कर्म को। बल्कि नूतन कर्मों की रचना वर्तमान पुरुषार्थ से ही होती है। पुरुषार्थ के द्वारा पूर्वबद्ध कर्मों की स्थिति एवं फलदान शक्ति में भी परिवर्तन को जैनदर्शन अंगीकार करता है। पुरुषार्थ के साथ वह काल, स्वभावादि को भी महत्त्व देता है।

पुरुषवाद/पुरुषार्थवाद : पुरुष एवं पुरुषार्थ की ऐकान्तिक कारणता सम्बन्धी मत

कारण-कार्य सिद्धान्त के सन्दर्भ में यह 'पुरुष' शब्द दो प्रकार के भिन्न अर्थों में प्रयुक्त हुआ है- 1. सृष्टिकर्ता पुरुष के अर्थ में, 2. पुरुषकार या पुरुषार्थ के अर्थ में। प्रथम अर्थ में

प्रयुक्त 'पुरुष' शब्द केवल परम पुरुष के अर्थ तक सीमित नहीं रहा, अपितु उसका 'ब्रह्म' और 'ईश्वर' के अर्थ में भी विकास हुआ। पुरुषवाद में 'परम पुरुष' से सृष्टि का सर्जन स्वीकार किया गया है अथवा उसके अन्य विकसित रूपों ब्रह्म या ईश्वर को सृष्टि का कर्ता अंगीकार किया गया है, जो जैन-दर्शन में मान्य नहीं है। जैनदर्शन किसी पुरुष, ब्रह्म या ईश्वर को सृष्टिकर्ता नहीं मानता। अतः सिद्धसेन के बाद के आचार्यों ने 'पुरिसे' के स्थान पर 'पुरिसकिरिया' अर्थात् पुरुषकार और पुरुषार्थ का प्रयोग किया है।

प्राचीन वाङ्मय में कहीं पुरुष को ही समस्त जगत् का कारण स्वीकार किया गया है, तो कहीं उसे ब्रह्म का स्वरूप दिया गया है। कहीं ईश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में सिद्ध किया गया है। जैनदर्शन के अनुसार न ब्रह्मवाद उचित है, न पुरुषवाद उचित है और न ही ईश्वरवाद। इसीलिए जैन दार्शनिकों ने इन तीनों का निरसन करके पुरुषकार या पुरुषार्थ को महत्त्व दिया है। पुरुषवाद को पूर्वपक्ष के रूप में रेखांकित किया जा रहा है-

पुरुषवाद का एकान्त पक्ष

1. घटादि जितने भी कार्य दृष्ट हैं, वे सभी किसी कर्ता के द्वारा ही उत्पन्न हैं। अतः पृथ्वी, पर्वत, नदियाँ आदि का भी कोई कर्ता होना चाहिए, वह सर्वशक्तिमान ईश्वर ही हो सकता है।
2. प्रयत्न से युक्त कोई पुरुष ही निर्माण और संहार कर सकता है। जैसे कि पट की उत्पत्ति और विनाश में दृष्टिगोचर होता है। इसी प्रकार जगत् का संहार प्रयत्न से युक्त पुरुष के बिना संभव नहीं है और तादृश प्रयत्न का आश्रय पुरुष परमेश्वर ही है।
3. जगत् में चेतन और अचेतन जितने पदार्थ हैं, सबका मूल कारण ईश्वर या आत्मा है। सभी पदार्थ ईश्वर के द्वारा रचित हैं। सभी ईश्वर से उत्पन्न हैं। सभी ईश्वर से प्रकाशित हैं। सभी पदार्थ ईश्वर के अनुगामी हैं और ईश्वर का ही आधार रूप से आश्रय लेकर स्थित हैं।

पुरुषवाद का खण्डन-

1. सर्वशक्तिमान ईश्वर पृथ्वी, पर्वत आदि का निर्माण करता है तो वह हमारे अनुकूल स्थानों का ही निर्माण क्यों नहीं करता? क्यों कहीं तो बर्फ के पर्वत, तो कहीं रेगिस्तान, तो कहीं मीठे झरने नदियाँ, तो कहीं खारे समुद्र बनाता है।
2. ईश्वर में ही निर्माण और संहार की शक्ति है तो रचना के समय में जो शक्ति ईश्वर में है उस समय संहार-काल वाली शक्ति कहाँ चली जाती है? क्या दोनों प्रकार के कार्य करने वाले ईश्वर की शक्ति में भेद सम्भव है।
3. जगत् का पिता ईश्वर अपनी सभी सन्तानों के साथ एक सा व्यवहार क्यों नहीं करता?

क्यों संसार में एक प्राणी दु:खी है तो एक प्रसन्न है, एक अमीर है तो एक गरीब है।

जैनदर्शन में पुरुषार्थ को स्वीकृति

पुरुषवाद या ब्रह्मवाद अथवा ईश्वरवाद का पूर्णत: खण्डन कर जैनाचार्यों ने पुरुष की क्रिया या पुरुषार्थ को पंचम कारण के रूप में प्रतिपादित किया है। महान् दार्शनिक हरिभद्रसूरि ने आगम सम्मत 'पुरिस किरियाओ' पद का प्रयोग कर इस सिद्धान्त को पूर्णत: जैन सिद्धान्त के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। उपासकदशांग सूत्र में पुरुष की इन क्रियाओं को उत्थान, कर्म, बल, वीर्य आदि शब्दों से अभिव्यक्त किया गया है। व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्र में भी इनका उल्लेख हुआ है। वहाँ इनका स्वरूप बताते हुए कहा गया है- **''उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे, तं चेव जाव अफासे पन्नत्ते''** अर्थात् उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषकार, पराक्रम- ये सब जीव के उपयोग विशेष हैं तथा अमूर्त होने से वर्ण, गंध, रस, स्पर्श से रहित हैं। उत्थान आदि का क्रमश: स्वरूप निम्नानुसार है-

उत्थान- आत्म-पौरुष की उद्यतता एवं तत्परता।

कर्म- आत्म-पौरुष के साथ की जाने वाली क्रिया।

बल- क्रिया में आत्मशक्ति का प्रयोग।

वीर्य- आत्मशक्ति का प्रेरक रूप सामर्थ्य का अनुभव।

पुरुषकार/पराक्रम- प्रयत्नपूर्वक आत्मपौरुष का प्रयोग।

वीर्यान्तराय कर्म के क्षयोपशम से जीव में आत्मशक्ति का अनुभव होता है, जो उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषार्थ, पराक्रम आदि के रूप में प्रकट होता है।

जैनदर्शन आत्म-स्वातन्त्र्यवादी दर्शन है। इसमें प्रत्येक आत्मा को अपने दु:ख-सुख का कर्ता अंगीकार किया गया है। यहाँ जीव के कर्मों का फल-प्रदाता ईश्वर को नहीं माना गया। कर्मों की ही स्वचालित व्यवस्था अंगीकार की गई है। कर्म ही यथा समय उदय में आकर जीव को फल-प्रदान करते हैं। जैनदर्शन अरिहंत को परमात्मा के रूप में स्वीकार करता है, जो राग-द्वेष से पूर्णत: रहित होता है। ऐसे परमात्मा को सर्वज्ञ अवश्य स्वीकार किया गया है, किन्तु उसे न तो जगत् का स्रष्टा माना गया है और न ही जीवों के कर्म-फल का नियन्ता।

प्रत्येक संसारी आत्मा आत्मकृत पौरुष के द्वारा अष्ट कर्मों के बन्धन से सदा-सदा के लिए मुक्त हो सकता है। यह जैनदर्शन का अद्भुत सिद्धान्त है। सुख-दु:ख या कर्मों को आत्मकृत मानने के कारण जैनदर्शन में पुरुषार्थ, पराक्रम या पुरुषकार का अत्यन्त महत्त्व है। इस दृष्टि से जैनदर्शन को पुरुषार्थवादी दर्शन भी कहा जा सकता है। पुरुष मिथ्यात्वी है

या सम्यक्त्वी, देशविरत है या सर्वविरत, पापाचरण में संलग्न है या धर्माचरण में इत्यादि अवस्थाओं के आधार पर ही पुरुष या जीव की आत्मदशा का विकास अथवा पतन का मापन होता है। इसीलिए भगवान महावीर कहते हैं- **''उट्ठिए नो पमायए'** अर्थात् उठो प्रमाद मत करो। जैनदर्शन के अनुसार जब तक जीव या आत्मा स्वयं राग-द्वेष से रहित होने के कारण अहिंसा, संयम और तप में पराक्रम नहीं करता तब तक वह बन्धन से मुक्त नहीं हो सकता। नवीन कर्म का बंध न करने में मानव का वर्तमान पुरुषार्थ अत्यन्त उपयोगी है। पूर्वबद्ध कर्म यथाकाल उदय में आते हैं। किन्तु जो उनके उदयकाल में राग-द्वेष से रहित होकर समभाव का अभ्यास करता है वह नवीन कर्मों के बन्ध को न्यून कर सकता है। यही नहीं, पूर्वबद्ध कर्मों को संयम और तप की साधना के द्वारा निर्जरित भी कर सकता है। संवर और निर्जरा की साधना मोक्ष की प्राप्ति में प्रमुख कारण है। इस साधना में अन्य कारणों के साथ जीव का पुरुषार्थ प्रधान कारण है। यही भगवान महावीर के उपदेशों का सार भी है। अपने अशुभ भावों को शुभ में परिणत करने का कार्य आत्म-पुरुषार्थ के बिना संभव नहीं है। इस पुरुषार्थ के द्वारा भविष्य में उदय में आने वाले कर्मों को पहले उदय में लाने रूप उदीरणा भी संभव है। मन-वचन-काया तथा पाँच इन्द्रियों पर संयम रखने का दायित्व जीव का ही है। इसमें उसका पुरुषार्थ निहित है। संयम की साधना से, संवर एवं तप की साधना से निर्जरा स्वतः होती है। इसका सजगतापूर्वक आराधन बिना पुरुषार्थ के संभव नहीं है।

जैनदर्शन में समता की साधना हो या अप्रमत्तता की, अहिंसा का आचरण हो या अपरिग्रह का, परीषह-जय का प्रसंग हो या आभ्यन्तर तप के आराधन का, स्वाध्याय का आराधन हो या ध्यान का, सर्वत्र पुरुषकार या पुरुषार्थ की आवश्यकता प्रतिपादित की गई है। पुरुषार्थवादी दर्शन होकर भी इसमें काल, स्वभाव, नियति एवं पूर्वकृत कर्म की कारणता को भी महत्त्व दिया गया है, इसलिए इसे एकान्त पुरुषार्थवादी भी नहीं कहा जा सकता। हाँ, जैन दर्शन में पुरुषार्थ की प्रधानता अवश्य है। **(क्रमशः)**

जानें शुद्ध शब्द

1. 'सतत' शब्द शुद्ध है एवं 'सतत्' शब्द अशुद्ध।
2. 'शत' शब्द शुद्ध है एवं 'शत्' शब्द अशुद्ध।
3. पुनरवलोकन (पुनः+अवलोकन) शब्द शुद्ध है एवं पुनरावलोकन (पुनः+आवलोकन) अशुद्ध।
4. 'जूठा' या 'जूठन' शब्द खाने के शेष रहे भोजन के लिए प्रयुक्त होता है, जबकि 'झूठा' शब्द झूठ बोलने वाले के लिए। -*सम्पादक*

अध्यात्म

जीवन-मरण से मुक्ति की मांग क्यों?

श्री रणजीत सिंह कूमट (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)

सब लोग कहते हैं 'जन्म-मरण' से छुटकारा कब मिलेगा? परन्तु ऐसा क्यों? क्या है जन्म-मरण में जो इसे हेय माना जाता है और इससे निजात या छुटकारा पाना ही जीवन का श्रेष्ठ व अन्तिम लक्ष्य क्यों माना जाता है।

जन्म-मरण की कड़ी के अंत को आध्यात्मिक क्षेत्र में विशेषकर भारतीय दर्शन में 'मुक्ति' अथवा 'मोक्ष' के नाम से जाना जाता है। अतः मोक्ष प्राप्त करना चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) में से एक है और सबसे श्रेष्ठ पुरुषार्थ माना जाता है। धारणा या मान्यता के अनुसार धर्म, अर्थ और काम तो भौतिक या सांसारिक पुरुषार्थ हैं और इससे प्राप्त फल इहलौकिक और क्षायिक (नष्ट होने वाले) हैं जबकि मोक्ष का पुरुषार्थ पारलौकिक है और वह उपलब्धि अक्षय व अव्यय (कभी न नष्ट होने वाली) है।

जन्म ही दुःख- अधिकांश धार्मिक शास्त्रों में उल्लेख आता है कि जन्म ही दुःख है, क्योंकि जन्म के बाद जीवन की कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जन्म के साथ ही बुढ़ापा, बीमारी और मौत का भी आगमन होता है जो दुःखदायी है। अतः जन्म-मरण की कड़ी ही टूट जाय और मुक्ति मिल जाय तो जन्म के बाद होने वाली सब कठिनाइयों का अंत हो जायेगा। न होगा बांस न बजेगी बांसुरी। परन्तु जन्म कैसे दुःखदायी है? बचपन के दिन कितने सुहाने होते हैं? जन्म पर कितनी खुशियाँ मनाई जाती हैं?

लोग कहते हैं जन्म से पूर्व नौ माह जो गर्भाशय में बिताये जाते हैं, वे बहुत कष्टदायी होते हैं। परन्तु किस आधार पर इसे कष्टदायी बताया जाता है? गर्भावास के दिन किसी को याद हैं क्या? कुछ लोगों का मानना है कि गर्भाशय का समय बच्चे का सबसे सुन्दर समय होता है। बच्चे को कुछ नहीं करना होता है और सारी आवश्यकताएँ माँ के गर्भाशय से जुड़ी आँव (Umbilical cord) से पूरी हो जाती है। न उसे सांस लेना है, न खाना खाना है, न मल-मूत्र का त्याग करना है। ऐसी आदर्श स्थिति तो जन्म के बाद कभी मिलती नहीं, फिर इसे कष्टप्रद क्यों मानते हैं? माँ के गर्भ में जो गर्मी और प्यार मिलता है उसे बच्चा बाहर आकर ढूँढता ही रहता है, इसीलिए वह माँ की छाती से अधिक से अधिक चिपका रहता है। कहते हैं कि बच्चे को उल्टा लटकना होता है और यह स्थिति कष्टप्रद है, परन्तु यह उलटे होने की स्थिति तो आखिरी माह में होती है जब उसे बाहर आना होता है, और जो

कष्ट होता है वह माँ को होता है बच्चा तो तैरता हुआ बाहर आता है। इसे कष्टप्रद मानना निराधार है। जन्मते ही बच्चे के रोने को कष्ट का परिचायक मानें तो यह भी भ्रम है। बच्चे को तो रुलाया जाता है और यदि रोये नहीं तो उसके फेंफड़े में हवा कैसे जाएगी? हवा नहीं जाएगी तो उसका दिल का धड़कना बंद हो जायेगा और ऑक्सीजन के अभाव में मस्तिष्क क्षतिग्रस्त हो जायेगा। तीन मिनट में यह सब कुछ नहीं हुआ तो बच्चा मर जायेगा। बाहर आने के बाद सब काम बच्चे को ही करना है तो रोने से ही सब काम होंगे। रोयेगा तो सांस आयेगी, रोयेगा तो माँ दूध देगी, रोयेगा तो माँ देखेगी कि बच्चे ने मल-मूत्र का त्याग कर अपने आप को भिगो तो नहीं लिया है या गन्दा तो नहीं हो गया है। रोना ही उसकी मांग और जरूरतों को पूरी करवाने का साधन है। बच्चा जब दूध पीकर आराम से खेल रहा हो, तब उसकी मस्ती देखने लायक होती है। उसका यह आनन्द अनिवर्चनीय है। वह कितनी मस्ती से हाथ-पाँव मारता है और उसको उस वक्त किसी की परवाह नहीं है। बच्चे की यह नादानी (innocence) और बेपरवाही देखने लायक होती है। उसे किसी की परवाह नहीं, जैसे वह ही शहंशाह हो। इसे कोई कैसे कष्टप्रद बता सकता है? बच्चे की इस मस्ती को सूरदास भी अपनी कविता में पूर्णतः बांध न पाये। बचपन का यह सुख, यह मस्ती हमें जब याद आती है तो बार-बार कहते हैं हाय वे बचपन के दिन फिर कब लौटेंगे? मुश्किल यह है कि ये दिन कभी नहीं लौटते। जिसने बचपन का यह सुख देखा है अथवा याद है वह कभी नहीं कहेगा कि जन्म दुःख है। जन्म एक वरदान है, एक उत्सव है और जीवन में आगे कुछ बनने या करने का मौका देता है। जन्म-मरण से सबकी छुट्टी हो जाय तो यह विश्व की लीला ही समाप्त हो जाएगी। प्रकृति ने इसीलिए यह प्रबंध किया है कि मुक्ति अगर है भी तो सबको न मिले।

बचपन ही क्या जवानी भी कितनी दीवानी और मस्तानी होती है। सब कुछ करने या पाने की उमंग, आसमान छूने की आशा, सबसे आगे निकलने की होड़, शिखरों और समुद्रों को विजय करने की तमन्ना ये सब बहुत कुछ परिभाषित करती है जवानी को। जो भी इन उमंगों, आशाओं और तमन्नाओं के बीच आते हैं उनको मजबूती से हटा दिया जाता है और यही कारण है कि विश्व में जो भी भौतिक, वैज्ञानिक अथवा आध्यात्मिक कीर्तिमान स्थापित हुए हैं वे जवानी के जोश ने ही कायम किये हैं। जवानी भी बचपन की तरह जीवन का स्वर्णिम समय है और इसे जो खो देता है उसे वह वापस नहीं मिलता।

बुढ़ापा दुःख- अब जो थोड़ा दुःखमय समय है वह है बुढ़ापा और बीमारी। इसमें कोई शक नहीं कि बीमारी और बुढ़ापा कष्टप्रद है, परन्तु इसमें भी दृष्टिकोण के अनुसार हम कष्ट की अनुभूति करते हैं। जीवन सारा ही फूलों की सेज हो ऐसा तो नहीं है, न ही पूर्णतया

काँटों की सेज है। जहाँ फूल हैं वहाँ कांटे भी हैं। हम केवल फूल चुनें और काँटों से बच जायें यह संभव नहीं है। दुःख और सुख एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और सुख के पीछे दुःख और दुःख के पीछे सुख, रात और दिन की तरह चलते हैं। यदि हम सुख का स्वागत करते हैं तो दुःख का भी स्वागत करना सीखें। दुःख भी हमें नए अवसर प्रदान करता है और दुःख के प्रभाव से हम अपना विकास करते हैं। दुःख को दुःख मानकर दुःखी होते हैं तो अपना ह्रास करते हैं और उसी को एक अवसर या चुनौती मानकर आगे बढ़ते हैं तो अपना विकास करते हैं। बुढ़ापा आने से पहले उसके स्वागत की तैयारी करने से बुढ़ापा सुखप्रद बन जाता है। नियमित भोजन, व्यायाम, योग, ध्यान आदि से सेहत अच्छी बनी रहती है और बुढ़ापे में यदि सेहत अच्छी है तो बुढ़ापा सुख से कट जाता है। बच्चों को प्यार देने से और प्रतिफल में बच्चों से प्राप्त प्यार से जीवन सरस और मन-भावन बन जाता है। नयी पीढ़ी के सोच को समझकर उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने से पीढ़ियों की खाई (Generation gap) को भी समाप्त किया जा सकता है। बुढ़ापा स्वयं में कोई दुःख नहीं है; हम इसे कैसे जीते हैं इससे निर्धारित होता है कि बुढ़ापा दुःखमय है या सुखमय। हमारी सोच और दृष्टिकोण पर सब कुछ निर्भर करता है। जितना सकारात्मक दृष्टिकोण होगा जीवन उतना ही सरल और सुखमय होगा। यही बात बीमारी पर भी लागू होती है। सकारात्मक दृष्टिकोण से बीमारी भी दूर भागती है बल्कि आने का नाम ही नहीं लेती। नकारात्मक दृष्टिकोण ही हमें दुःखी करता है फिर क्यों जन्म-मरण को दोष दिया जाता है? दोष जन्म-मरण का नहीं है, दोष है हमारे जीने के ढंग का और नकारात्मक सोच का।

मरना दुःख– जन्म को तो दुःख नहीं माना, पर मरना तो दुःख है ही इसे कौन नकार सकता है। मौत को सामने देख कौन नहीं घबराता? बड़े-बड़े शहंशाह, तानाशाह, सम्राट्, अमीर और गरीब सब मौत के नाम से घबराते हैं। मौत कौन चाहता है? जन्म और जीवन सब चाहते हैं, मौत कोई नहीं चाहता- यह स्वाभाविक है। परन्तु यह तो प्रकृति का नियम है कि जो जन्म लेता है उसकी मौत अवश्यम्भावी है। पैदा होता है वही मरता है। इसलिए ज्यादा भयानक या डरावनी मौत है, न कि जन्म। परन्तु मौत से भी डरना क्यों? जो पुनर्जन्म को मानते हैं, उन्हें तो कोई डर होना ही नहीं चाहिये। क्योंकि मौत नये जन्म की दस्तक है। नया जन्म, नया बचपन, नई जवानी और पिछली सब कामनाओं को पूरा करने का नया अवसर। इससे सुन्दर व्यवस्था क्या हो सकती है कि जो कार्य इस जन्म में पूरा न हो सका, उसे अगले जन्म में पूरा कर लो।

गरीबी दुःख– जीवन में कुछ दुःख हैं, जिन्हें देखकर नकारा नहीं जा सकता, यथा- गरीबी, भूखमरी, जाति-भेद, रंग-भेद, धर्म-भेद आदि। समाज की व्यवस्थाओं से शोषण

का कुचक्र ऐसा चलता है कि लोग गरीबी और भुखमरी से उबर नहीं पाते और कुछ तबके अपने जाति-भेद, धर्म-भेद व रंग-भेद के आधार पर निःशक्त लोगों पर अत्याचार करते हैं, हिंसा कर उनको दबाते हैं, प्रताड़ित करते हैं और कई बार नरसंहार भी करते हैं। यह मानवकृत दुःख है और इसका निराकरण हमारे हाथ में है। प्रकृति ने जीवन सुखमय बनाया, परन्तु मानव ने कुछ वर्गों, जातियों, समूहों के लिए दुःखमय बना दिया। इसकी वजह से जन्म-मरण से छुट्टी मांगना जीवन का अपमान करना है। आवश्यकता है सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था को सुधारने की, धार्मिक और सामाजिक मान्यताओं को बदलने की।

महत्त्वपूर्ण क्या है?– जन्म-मरण से छुट्टी पाना अधिक महत्त्वपूर्ण है अथवा जो जीवन पाया है उसे अधिक से अधिक सफल व सार्थक बनाना अधिक महत्त्वपूर्ण है? जन्म-मरण से छुट्टी अर्थात् मोक्ष प्राप्ति का लक्ष्य अधिक महत्त्वपूर्ण है या इस जीवन को आनंदमय एवं मुक्त रूप से जीना अधिक महत्त्वपूर्ण है? मरकर मोक्ष मिलेगा या नहीं इसकी अनिश्चितता तो है ही, इस जीवन को आनन्दमय रूप से नहीं जीया, यह दुःख हमेशा खलेगा। जो जीवन मिला है उसको आनन्द से जीयो और मुक्त होकर जीयो- इस लक्ष्य को धारण करने से हम वर्तमान में सुखी जीवन जी सकते हैं। जीवन को आनन्दमय एवं मुक्त बनाना हमारे हाथ में है।

दुःख का सत्य– दुःख को सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक सत्य माना जाता है। मान्यता है कि दुःख जीवन के साथ लगा है और हमेशा रहता है। जब तक जीवन है दुःख है, अतः जीवन समाप्ति पर दुःख स्वतः समाप्त हो जायेगा। परन्तु ऐसी मान्यता वालों ने दुःख के सत्य को समझा ही नहीं। दुःख सार्वकालिक है, परन्तु इसका 'कारण है' और 'निवारण' भी है। वे भूल जाते हैं कि दुःख स्वतः नहीं आता। हमारी त्रुटियों से आता है और उन त्रुटियों को सुधारने पर दुःख भी समाप्त हो जाता है। दुःख का कारण है हमारा अज्ञान और उससे जनित तृष्णा, राग, द्वेष और कषाय। सबसे बड़ा अज्ञान है कि व्यक्ति अथवा वस्तु जो नाशवान अथवा अनित्य हैं, उन्हें नित्य मानकर उनके प्रति राग-द्वेष और तृष्णा जगाते हैं, उन वस्तुओं व व्यक्तियों के प्रति आसक्ति जताते हैं, यही आसक्ति हमारे दुःख का कारण है। कषाय अर्थात् क्रोध, मान, माया और लोभ के वशीभूत होकर हम अपने मन और मस्तिष्क को विकृत करते हैं और ये ही विकृतियाँ शरीर पर रोग उत्पन्न कर हमारे दुःख का कारण बनती हैं साथ ही जिनके साथ विकृति आधारित व्यवहार होता है उनके साथ राग-द्वेष के बंधन बनाते हैं। जीवन अपने आप में दुःख नहीं है, दुःख हम उत्पन्न करते हैं और दोष जन्म-मरण को देते हैं। जन्म-मरण प्रकृति का विधान है। इससे छुटकारा पाने की बजाय दुःख जो हम उत्पन्न करते हैं उसके कारणों से छुटकारा पायें तो जीवन आनन्दमय बनेगा और जीवन एक उत्सव बन जायेगा। प्रकृति ने देखने, खाने, सुनने व छूने के लिए

इतनी चीजें दी हैं इनका आनन्द उठा सकते हैं, परन्तु उनके प्रति आसक्ति कर संग्रहण में लग जाते हैं तो अपना जीवन भी दुःखी करते हैं और दूसरों का भी करते हैं। संयमित भोग-उपभोग और अनासक्त जीवन आनन्दमय जीवन है और असंयमित भोग-उपभोग और आसक्ति दुःख का जीवन है। सुख अपने आप में खराब नहीं है, परन्तु सुख की दासता और उसके प्रति आसक्ति खराब है। आसक्ति से मुक्त होने की बजाय हम आसक्ति के विषय से नफरत करने लगते हैं। चोरी छोड़ने की बजाय चोर से नफरत करने लगते हैं।

देह और आत्मा का सम्बन्ध- देह और आत्मा के भेद विज्ञान को बहुत महत्त्व दिया गया है। देह नश्वर है और आत्मा अमर है। इस आधार पर देह की अवहेलना कर आत्मा पर व आत्मदर्शन पर अधिक महत्त्व दिया जाता है। देह पर आसक्ति और मोह न बढ़े, इसलिए देह पर ध्यान न देने की बात कही जाती है। किन्हीं कहानियों और उदाहरणों के माध्यम से देह को चोर की उपमा भी दी जाती है। देह को विभिन्न प्रकार की यातनायें यथा लम्बी तपस्या, अल्पतम भोजन, धूप में बैठना, काँटों की शय्या पर लेटना, आग में तपना आदि उपक्रम किये जाते हैं। देह को आत्मा का दुश्मन तक कह दिया जाता है, क्योंकि देह है तब तक आत्मा को मुक्ति नहीं मिल सकती। देह दुश्मन है तो उसके साथ दुश्मन जैसा ही व्यवहार किया जाता है। परन्तु यह खयाल नहीं है कि यदि देह नहीं है तो आत्मा प्रकट कैसे होगी? शरीर है तो आत्मा प्रकट होकर अपना कर्म कर सकती है। शरीर नहीं है तो तप भी कैसे कर सकते हो। शरीर नहीं है तो साधना भी कैसे कर सकते हो। शरीर हमारा साथी है न कि दुश्मन। इसके सहयोग से हम अपनी कामनाओं को भी पूरी कर सकते हैं, तो जीवन के पुरुषार्थ व लक्ष्य की साधना भी कर सकते हैं। शरीर स्वस्थ है तो साधना भी हो सकती है और यदि यदि शरीर रुग्ण या कमजोर है तो किसी भी प्रकार की साधना असंभव है। शरीर का उपयोग आप कैसे करते हो, यह आप पर निर्भर है। साधन अच्छा या बुरा नहीं होता, साधन का उपयोग करने वाला अच्छा या बुरा होता है। घोड़ा साधन है और उसका उपयोग घुड़सवार करता है। जैसा घुड़सवार होगा वैसा ही घोड़ा काम करेगा। शरीर को हेय या दुश्मन मानकर शरीर से जो उपयोग लेना चाहिए, वह नहीं ले पाते। शरीर है अपनी राग-द्वेष की प्रवृत्ति को समाप्त कर आसक्ति-जनित बन्धनों से मुक्त होने के लिए और मुक्त जीवन का आनन्द उठाने के लिए।

मुक्ति अथवा मुक्त जीवन-मरने के बाद मुक्ति या स्वर्ग मिले न मिले, इसी जीवन को मुक्त और आनन्दमय तरीके से जीना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। मुक्ति किसी स्थान पर जाने से नहीं मिलती। मुक्ति हमारे मन-मस्तिष्क की स्थिति (state of mind) है। जैसी हमारे मन की स्थिति होगी वैसी ही हमारे जीवन की स्थिति होगी। जीवन को सुखमय,

आनन्दमय तरीके से जीना है तो मन को निर्मल व विकार रहित बनाना है और इसके लिए किसी लम्बे तप या कठोर साधना की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है मन को साधने की, मन को विकार रहित बनाने की, जिससे हम कषाय मुक्त हो समता में स्थित हो सकें। यही उच्चस्थ साधना है जो हमें वीतराग, कामना-मुक्त और सिद्ध एवं बुद्ध बना सकती है। जन्म-मरण से मुक्ति मिले या न मिले, जो जीवन हम जी रहे हैं वह उच्चस्थ जीवन होगा और यही उच्चस्थ पुरुषार्थ है।

-सी-1701, लेक प्रिम रोज, लेक होम्स, फेज-IV पवई, मुम्बई-400076 (महा.)

आचार्य हीराचन्द्र दीक्षा अर्द्धशताब्दी विशेषांक हेतु रचनाएँ आमन्त्रित

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, आगमज्ञ, चारित्रनिष्ठ, जिनशासन गौरव, परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी महाराज सा. के संयमनिष्ठ जीवन का यह दीक्षा स्वर्ण-जयन्ती वर्ष चल रहा है। इस अवसर पर हम परमपूज्य आचार्यप्रवर पर जिनवाणी का एक विशेषांक (अक्टूबर-नवम्बर-2013) उनके साधनामय जीवन के वैशिष्ट्य पर प्रकाशित कर रहे हैं, जिसमें आचार्यप्रवर के जीवन के विविध पहलुओं एवं उनकी कृतियों पर प्रेरणाप्रद सामग्री प्रकाशित की जाएगी। एतदर्थ श्रद्धालु श्रावकों एवं विद्वद्जनों से अनुरोध है कि वे आचार्यप्रवर के जीवन से सम्बद्ध किसी एक पक्ष पर अपने आलेख/संस्मरण/ भजन/स्तवन आदि 20 सितम्बर 2013 के पूर्व जिनवाणी पत्रिका के सम्पादकीय कार्यालय, नेहरूपार्क, जोधपुर के पते पर प्रेषित कर अनुगृहीत करें। कतिपय प्रस्तावित विषय इस प्रकार हैं- 1. आचार्य प्रवर का बाल्यकाल एवं वैराग्यमय जीवन, 2. आचार्य हस्ती के सान्निध्य में जीवन का विकास, 3. गुरु-भक्ति के आदर्श, 4. चातुर्मासों की उपलब्धियों के विशेष प्रसंग, 5. प्रभावक प्रवचनशैली, 6. अनुशासन की दृढ़ता, 7. आचारनिष्ठा में अग्रणी, 8. आचार्यश्री के प्रमुख अभियान, 9. कुशल संघनायकत्व, 10. सद्गुणों के पुंज, 11. ध्यान-मौन आदि की साधना, 12. दूरदर्शिता एवं निर्णय-शक्ति, 13. दक्षिण भारत में धर्मप्रचार, 14. आचार्य हीरा की दृढ़ संकल्पशक्ति, 15. आचार्य हीरा की आगम निष्ठा, 16. संस्कार-प्रबोधन, 17. सामायिक-स्वाध्याय की प्रेरणा, 18. व्यसन-फैशन के त्याग की प्रेरणा, 19. आचार्यकाल में नूतन उपक्रम-(अ) आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, (ब) वीतराग ध्यान शिविर, 20. शीलव्रत आराधन, 21. रात्रि-भोजन-त्याग अभियान, 22. प्रतिक्रमण-स्मरण अभियान, 24. सामूहिक सामायिक आराधना।

प्रासङ्गिक

चातुर्मासिक प्रवेश

डॉ. दिलीप धींग

चातुर्मास के एक माह पूर्व ही महाराज का महानगर में प्रवेश हो गया था। उपनगरों में विचरण करते हुए उनके भव्य चातुर्मासिक प्रवेश की तैयारियाँ चल रही थीं। इस क्रम में चातुर्मास समिति के पदाधिकारी महाराज की सेवा में उपस्थित हुए। थोड़ी बात बड़े महाराज से हो गई। बड़े महाराज ने शेष बात छोटे महाराज से करने के लिए बोल दिया। छोटे महाराज ने कहा कि प्रवेश से एक दिन पूर्व दैनिक समाचार-पत्रों में गुरु महाराज के फोटो के साथ फुल पेज का बहुरंगी विज्ञापन लगाना है। विज्ञापन केवल नगर संस्करण में ही नहीं, अमुक-अमुक संस्करणों में भी लगना चाहिये। उन क्षेत्रों में भी गुरु महाराज के खूब भक्तगण निवास करते हैं।

समिति के कोषाध्यक्ष ने साहस करके कहा, "महाराज! इतने संस्करणों में रंगीन विज्ञापन के पूरे ढाई लाख रुपये लगेंगे।"

"इतना बड़ा चौमासा भी करवा रहे हो और ढाई लाख देख रहे हो। आज के समय में ढाई लाख की वैल्यू क्या है। और अभी शुरू में ही डरोगे तो पूरे चातुर्मास में क्या करोगे?" छोटे महाराज ने अपनी बात बताई। उन्होंने गुरुदेव के पिछले चातुर्मास तथा अन्य जगहों पर छोटे-बड़े सन्तों के चातुर्मास में होने वाले बड़े खर्चों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये।

महाराज ने अपनी तैयारी के क्रम में बताया, "एक बड़ा रंगीन विज्ञापन तो पिछले चौमासे में गुरु महाराज से जुड़े भक्तगण ही लगा देंगे। जब बाहर वाले इस चौमासे के लिए इतना लगायेंगे और आप पीछे रहेंगे तो कैसा लगेगा?"

इस जानकारी पर समिति के पदाधिकारी महाराज की बात पर सहमत हो गये। इधर, उसी समय महाराज की सेवा में शास्त्रीजी आ गये। विद्वान् शास्त्रीजी को महीने भर पहले ही महाराज के प्रवचनों का सम्पादन कार्य सौंपा गया था। पारिश्रमिक के लिए उन्हें पूछा गया तो पहले तो शास्त्रीजी ने 'ना' कर दिया। फिर आग्रहपूर्वक पूछने पर उन्होंने दस हजार रुपये के लिए कहा। छोटे महाराज ने विस्मित होकर कहा, "अरे! इतने-से कार्य के इतने! ये तो बहुत ज्यादा होते हैं। फिर यह तो धरम का काम है। कर्म-निर्जरा का काम है। आपको उसी भावना से कार्य करना चाहिये।"

"मैं पहले ही 'ना' कर चुका हूँ। रहने दीजिये महाराज।" यह कहते हुए शास्त्रीजी

उठकर चलने लगे। तभी महाराज के संकेत पर एक पदाधिकारी ने शास्त्रीजी को जबर्दस्ती पाँच हजार का लिफाफा पकड़ा दिया और उनसे प्रवेश कार्यक्रम में आने के लिए आग्रह किया। शास्त्रीजी ने मन-बेमन से 'हाँ' भर ली।

बात-बात में मुनिराज के चातुर्मासिक प्रवेश का दिन नजदीक आ गया। सचमुच! प्रवेश के दो दिन पूर्व मुख्य अखबार के पूरे पृष्ठ पर महाराज के प्रवेश का सचित्र बहुरंगी विज्ञापन देखकर लोग महाराज के प्रभाव और पावर को मान गये। प्रवेश के एक दिन पूर्व स्थानीय संघ की ओर से भी नाम और सेटिंग बदलकर पूरे पृष्ठ का सचित्र रंगीन विज्ञापन देखकर लोग संघ की हैसियत और उदारता पर गर्व कर रहे थे। सवा लाख की बहुरंगी चमचमाती आमंत्रण पत्रिका और पाँच लाख के विज्ञापन, कुल सवा छह लाख का भव्य प्रवेश दूसरे दिन होने जा रहा था।

चातुर्मासिक प्रवेश का चिर प्रतीक्षित दिन उपस्थित हुआ। पादविहारी महाराज के प्रवेश जुलूस में सबसे आगे श्वेत परिधानधारी शताधिक युवा बंधु दुपहिया वाहनों की रैली के साथ धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। उन्हें मानव-कदमों की गति के अनुसार अपने वाहनों की गति नियंत्रित रखनी पड़ रही थी। इससे ईंधन की खपत अधिक होने के साथ ही आवाज और धुआँ भी ज्यादा हो रहा था। फलस्वरूप महाराज के जयकारों की गूंज दबी जा रही थी।

चातुर्मास-स्थल पर पहुँचकर प्रवेश-यात्रा सभा में परिवर्तित हो गई। सत्ता और सम्पत्ति से जुड़े 'बड़े लोग' अतिथियों में शुमार थे। साथ ही, मीडिया से जुड़े वर्माजी को भी विशिष्ट अतिथि बनाया गया था। सबके स्वागत-भाषण हुए। और हाँ! जिस पुस्तक का शास्त्रीजी से सम्पादन करवाया था, अतिथियों के कर-कमलों से उसका विमोचन भी हुआ। सभा में शास्त्रीजी भी उपस्थित थे। उन्हें भी माला पहनाकर शॉल ओढ़ाई गई। फिर महाराज ने अपना ओजस्वी प्रवचन फरमाया। उन्होंने उपस्थित जनों से आह्वान किया कि वे सांसारिक कार्यों में दिखावे व आडम्बर में पैसे का अपव्यय नहीं करें और धर्म के लिए तन-मन-धन से समर्पित होकर चातुर्मास को सफल बनाएँ।

मंगल-पाठ के बाद सभा विसर्जित हो गई। उस समय पुस्तक की एक प्रति शास्त्रीजी ने भी ली। शास्त्रीजी को यह देखकर हैरानी हुई कि सम्पादक के रूप में उनके नाम की बजाय छोटे महाराज का नाम था। उन्होंने छोटे महाराज को पुस्तक दिखाते हुए पूछा, "महाराज! यह कैसे हुआ?"

महाराज ने याद दिलाया कि उस दिन संघ-मंत्री के हाथों पूरे पाँच हजार का लिफाफा.....। शास्त्रीजी ने अपने आपको ठगा-सा महसूस किया। जाते-जाते शास्त्रीजी

को न जाने क्या सूझा, वे संचालक के पास गये और बोले, "संघ का सम्मान तो मैंने ग्रहण कर ही लिया है। ये शॉल और माला रख लीजिये, और किसी का सम्मान करने में काम आयेगी।"

दूसरे दिन महाराज के प्रवेश कार्यक्रम के समाचार को अखबार वालों ने जबर्दस्त कवरेज दिया था। अगले दो-चार दिनों तक फिर अखबारों में विज्ञापनों के माध्यम से भक्तों ने भव्य प्रवेश के लिए महाराज को वन्दना करते हुए संघ के प्रति आभार जताया। अब तो लोगों की तपस्याएँ भी शुरू हो गई थीं। पैसेवाले गुरुकृपा की महिमा का गान करते हुए विज्ञापनों के माध्यम से अपने प्रिय तपस्वियों की सचित्र साता पूछ रहे थे। महाराज अपने व्याख्यानों में धनाढ्य लोगों की धर्म-समर्पण का बखान करना कभी नहीं भूलते थे। सभी लोग चातुर्मास को सफल बनाने में लगे हुए थे! धर्म की प्रभावना हो रही थी!

-निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र,
7, अय्या मुदली स्ट्रीट, साहूकारपेट, चेन्नई-600001

मारवाड़ की तपस्विनी

श्रीमती कमला सुराणा

81 वाँ जन्म-दिवस

मैना सुन्दरी महाराज सा
आप बड़ी विदुषी, आप बड़ी विदुषी
आप मारवाड़ की तपस्विनी
66 वर्ष संयम के पूर्ण
संयम के रंग में रची-पची
दूसरों को खुश रखती हैं, स्वयं भी खुश रहती हैं
अत्यन्त पीड़ा है शरीर में, रात भर वेदना सहती हैं
फिर भी आप सवेरे शास्त्र सुनाती हैं।
जो सान्निध्य में आता आपके
वशीभूत हो जाता आपके
शास्त्र का ज्ञान अपार भरा है, जिसे बाँटती रहती हैं
प्रवचन रूपी मोती बिखेरती हैं, चुनने को भीड़ उमड़ती है
चुन लो भाई, चुन लो बहनों, हम पीछे क्यों रह जाएँ?

-ई-123, नेहरू पार्क, जोधपुर (राज.)

युवा-स्तम्भ

स्वयं की नज़रों में ऊपर उठें

सुश्री शिवानी मेड़तवाल

आज हर व्यक्ति दूसरों के सामने महान् बनना चाहता है, सभी की नज़रों में ऊपर उठना चाहता है। वह चाहता है कि हर व्यक्ति उसके बारे में अच्छा बोले, अच्छा सोचे, लेकिन व्यक्ति कभी भी यह क्यों नहीं देखता कि वह स्वयं की नज़रों में कैसा है? क्योंकि व्यक्ति स्वयं को जितना जान सकता है उतना कोई दूसरा नहीं जान सकता। अगर व्यक्ति बाहर से, दूसरों से मिलने वाली प्रशंसा या बुराई पर कोई प्रतिक्रिया ही न करे, उसे अगर कोई फर्क ही न पड़े, वह तटस्थ रह जाये तो दोषों से, दुःखों से स्वतः ही मुक्ति मिल जायेगी। पर यह होगा कब? जब व्यक्ति स्वयं की नज़रों में ऊपर उठने की फ्रिक करे, न कि दूसरों की नज़रों में ऊपर उठने की। लेकिन आज हर व्यक्ति चाहे वह अपनी नज़रों में कैसा ही हो, किन्तु दूसरों के सामने अच्छा दिखने की होड़ लगी है। बस दूसरों से प्रशंसा प्राप्त करने की इच्छा रहती है।

प्रत्येक व्यक्ति अगर स्वयं को देखना चालू कर दे, स्वयं का न्यायाधीश बनना चालू कर दे तो दूसरों से प्रशंसा प्राप्त करने की अपेक्षा ही नहीं रहेगी और जब अपेक्षा ही नहीं रहेगी तो दुःख ही नहीं होगा। आज अगर हमारी कोई प्रशंसा करता है तो हम फूले नहीं समाते, हम खुशी से झूम उठते हैं, पर कोई हमारी बुराई कर दे तो? तब क्या होता है? खुशी होती है? नहीं, उस वक्त हमें उसे भला-बुरा सुनाने का मन करता है, क्योंकि हमें सिर्फ प्रशंसा सुनना अच्छा लगता है। यही होता है। क्योंकि हम पर हमेशा से दूसरों की नज़रों से फर्क पड़ता आया है। हम सिर्फ दूसरों के सामने उनकी नज़रों में श्रेष्ठ बनना चाहते हैं, चाहे हम अन्दर में कैसे भी हों? पर मैं यही कहना चाहूँगी कि व्यक्ति को सबसे पहले स्वयं की नज़रों में ऊपर उठना चाहिये, श्रेष्ठ बनना चाहिए।

जब भी कोई व्यक्ति कोई कार्य करने जा रहा होता है तो उसका सबसे पहले पता किसको चलता है? माँ-बाप को, गुरु को, पति/पत्नी को? नहीं। सबसे पहले पता चलता है स्वयं को, क्योंकि उन लोगों को तो हम बतायेंगे तब पता चलेगा। यहाँ तक कि कार्य करने के लिये सोचा यह भी सबसे पहले हमें ही पता चलता है। अब जिस कार्य के लिये हमने सोचा, वह कार्य सही है या गलत, यह भी सबसे पहले किसे पता चला? स्वयं को ही न। मान लीजिये हमारा किसी बात पर किसी से झगड़ा हो गया, उस वक्त हमें सामने वाले पर क्रोध का भाव आया, अभी सिर्फ क्रोध आया, हमने क्रोध उस पर किया नहीं है, पर

क्रोध हमारे मन में तो आ गया, इस बात का सर्वप्रथम पता किसे चला? सामने वाले को या स्वयं को? स्वयं को ही ना। अब क्रोध करना गलत है या सही इसका भी सबसे पहले पता किसको चला? स्वयं को ही ना, क्योंकि हमें पता है क्रोध करना गलत है, यानी कोई भी दोष जो हम में है, वह सबसे पहले हमें ही पता चलता है, तो भी उस वक्त हम क्या करते हैं अपने दोष को अनदेखा कर देते हैं। क्यों? क्योंकि हमें अपनी स्वयं की नज़रों से कोई मतलब ही नहीं है, हमें तो दूसरों की नज़रों से मतलब है, हमें अपनी नज़र में नहीं, दूसरों की नज़रों में ऊँचा उठना है ना? ऐसा ही है ना? क्योंकि हम यही करते आ रहे हैं, पर यहाँ कहना है कि जितना हम स्वयं को जानते हैं उतना चाहे हमारे साथ कोई 24 घण्टे भी क्यों न रहा हो, वह भी नहीं जान पाता। क्योंकि हर एक पल हमारे मनोभाव क्या हैं, यह सिर्फ हमें ही पता है, दूसरे को नहीं।

जब हमारे पास इतनी बड़ी ताकत है कि हम स्वयं के दोषों को देख सकते हैं तो भी हम उन दोषों को जानने से दूर भागते रहते हैं, छिपते रहते हैं। जैसे ही हमें हमारे दोष नज़र आते हैं, उन दोषों को निकालने का हम प्रयास क्यों नहीं करते? आज अगर हमारे घर में चोर घुस आये और हम जगे हुए हैं तो हम उसे अपने घर से निकालेंगे या उसे चोरी करने देंगे? उत्तर आपका, सभी का यही होगा कि घर से निकालेंगे। तो फिर हमारी आत्मा में दोष रूपी चोर घुसे हुए हैं, हम उन्हें देख रहे हैं, तो भी उन चोरों को निकाल नहीं रहे हैं, जबकि वे हमारे गुण रूपी धन को लूट रहे हैं। क्या हमें अपनी आत्मा के गुणों की रक्षा नहीं करनी? यदि करनी है तो फिर उन दोषों को निकालो, उन दोषों को हमेशा के लिये अपने से दूर कर दो। यह तो अच्छा है कि अपना दोष स्वयं को दिख गया, किसी और के सामने अगर वह दोष प्रकट होता तो स्वयं की नज़रों में तो गिरते ही, पर दूसरों की नजरों में उठने की बजाय उनके नज़रों में भी हम गिर जाते। पर हम यह नहीं सोचते, जैसे कि मैंने पहले क्रोध का उदाहरण दिया उस वक्त अगर हमने सामने वाले पर क्रोध नहीं किया तो बहुत अच्छी बात है, पर अगर हमने क्रोध यह सोचकर नहीं किया कि यह मेरे बारे में, मेरे क्रोध के बारे में जाकर सबको बता देगा, मैं तो सबकी नज़रों में बुरा बन जाऊँगा....। ऐसा सोचकर हमने उस पर क्रोध नहीं करके क्रोध को दबा दिया तो यह हमारा दोष है, क्योंकि हमने सिर्फ दूसरों की नज़रों में गिरने के डर से क्रोध निकाला नहीं, पर मन में तो उस व्यक्ति को 100 गालियाँ बक रहे होंगे। पर हम क्यों अपने दोष से भागें? दूसरों की नज़रों में उठने की फ्रिक करने की बजाय अपनी नज़रों में उठने की फिक्र करो। और जैसे-जैसे आप अपने दोष निकालने लगें एवं गुण भरने लगें तब भी अपने गुणों को मत देखो, गुण तो हमें दूसरों के देखने हैं ताकि वे गुण हममें भी आ सकें। हमें तो सिर्फ अपने दोष देखने हैं। अगर हम सिर्फ अपने गुण देखेंगे

तो हममें अहंकार रूपी दोष आ जायेगा और अगर अहंकार रूपी दोष ने हमें जकड़ लिया तो वह एक दोष ही हमारे गुणों को नष्ट कर देगा तथा सभी दोषों को भीतर में भर देगा।

-सुपुत्री श्री नरेन्द्रकुमार जी मेड़तवाल, 32 (2), पाण्डुक शिला के पीछे, बोहरा कॉलोनी, पटेल स्कूल के सामने वाली गली, केकड़ी-305404, अजमेर (राज.)

बड़ी धर्म में शक्ति है

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

जीवन का सफर सूना, सूनी है पगडंडियाँ,
जो साथ बिताये दिन, याद आती हैं वो घड़ियाँ,
कभी दिल को दुःखाया हो, जाने-अनजाने में,
कई भूलें हुई होंगी, जीवन के व्यवहारों में,
हम माफी चाहते हैं, तुम दूर बसे हमसे,
हम माफी मांग रहे, प्रभु वीर के चरणों में।
दिन जितने होते हैं, अपनी इस उमरिया के,
उतने ही साथ चलते, जीवन की डगरिया में।
सुख शांति मिले तुमको, हम हिम्मत साधेंगे,
नहीं आर्त्तध्यान करके, बस धर्म को पालेंगे।
जब याद सताती है, जब रोता है यह मन,
तब याद धर्म को हम, कर लेते हैं तत्क्षण।
मन ढाढस मिलता है, मन शांति मिलती है,
पा धर्म का आलम्बन, कम हो जाता है गम।
दुःख को सहने की कला, बस धर्म सिखाता है,
दुःख दर्द की घड़ियों में, रखो धर्म से नाता है।
जब-जब आए दुःख दर्द, धर्म विचारेंगे,
कर्मों की पीड़ा से, नहीं हिम्मत हारेंगे।
बड़ी धर्म में शक्ति है, सम्बल मिल जाता है,
कर्मों के बंधन से, मन यह बच जाता है।
लो करके यह चिंतन, कदम आगे बढ़ाना है,
समभावों में जीकर, बस फर्ज़ निभाना है।

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छतीसगढ़)

श्रद्धार्पण

आगमादर्श मेरे आराध्य देव!(3)*

महासती श्री यशप्रभा जी म.सा.

इस प्रकार
प्रत्येक प्राणी की व्यथा से व्यथित हो
उनकी रक्षा की कथा करने वाले आप
ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्र की प्रत्येक कथा हो
आपकी धर्मकथा
''महं संवेगं जणइत्ता''
महान संवेग जगाने वाली होने के साथ
''सव्वविसएसु विरज्जइ''
इन्द्रियों के समस्त विषयों से विरक्ति दिलाने वाली है
स्वमत का संरक्षण करने के साथ
परमत का निरसन करने वाली है
मैंने सुना है
बिना प्रतिपालन के
प्रतिपादन नहीं हो सकता
कथा का प्रतिपादन करने से पहले
आपने स्वयं उसका प्रतिपालन किया
फिर लोगों से कहा-
आहार शुद्ध है तो विचार शुद्ध रहते हैं
अन्न का मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है
इसलिए आत्मोत्थान के लिए
व्यसन मुक्ति आपका संदेश बन गया
विकारों की शांति

* पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष पर महासतीवर्या द्वारा अभिव्यक्त भावों का कृत संकलन।

विचारों की शुद्धि
वैराग्य की वृद्धि और
वीतरागता की पुष्टि के लिए
व्यसन-मुक्ति का आपने नारा दिया,
क्योंकि
व्यसन ही समस्त दोषों का मूल है
दुःख और दुर्गति का जनक है
इस धर्मकथा का एक ही उद्घोष है
मुझे यथाकार बनना है
व्यथाकार नहीं
मुझे तथाकार बनना है
कथाकार नहीं
यथाकार और तथाकार बनाने वाली धर्मकथा करने वाले आप

उपासकदशा की प्रत्येक उपासना हो

उपासना अनुभव का अर्क है
आत्मविश्वास का रसायन है
तर्क और बुद्धि के उस पार का सत्य है
उपासना से ही उपास्य की प्राप्ति होती है
साधना के प्रारम्भिक काल में
आपने देव-गुरु-धर्म को
अपना उपास्य मान कर
उनकी उपासना की और आज
उस देव और धर्म तत्त्व को
अपने जीवन में आत्मसात् कर
जन-जन के उपास्य बन गये
गुरु द्वारा प्रदत्त आचार्य का
गुरुतर पद
आपको गुरु रूप में पाकर धन्य हो गया

गुरु के **पाँचों भेद** आपमें समाहित हो गये
अरिहंत भगवान् के अभाव में
मोक्षमार्ग की निरंतर प्रेरणा देते रहने से
आप **प्रेरक गुरु** हो
आपकी उपस्थिति हमें
वीतराग बनने की सूचना देती है
इसलिए आप **सूचक गुरु** हो
समझ दान, सद्गुण दान और समाधिदान करके
बोहिदयाणं पद को अलंकृत करने वाले
आप **बोधक गुरु** हो
सिद्धांत रक्षण
सहयोग रक्षण और
व्यवहार रक्षण के द्वारा
संघ रूपी बगीचे को हरा-भरा रखने वाले
आप **पाठक गुरु** हो और
धर्म में अस्थिर बने साधकों को
"धम्मे ठिओ ठावयइ परं पि" से
धर्म में स्थिर करने वाले
आप **सहायक गुरु** हो
आपकी मौन मुद्रा
देवत्व का अनुभव कराती है और
आपकी दिव्य देशना
धर्म के मर्म को प्रकाशित करती है
इस तरह देव-गुरु और धर्म तीनों उपास्य तत्त्वों का
दर्शन कराकर
आप उपासक से उपास्य बन गये।

(क्रमशः)

गुण-प्रेक्षण

आगमचक्षु संघनायक (3)*

महासती श्री पद्मप्रभा जी म.सा.

जिज्ञासु!
श्रद्धा आज मीरा बन चुकी है,
पागल मीरा,
श्रद्धा से सनी मीरा,
स्नेह और प्रेम के रस में भीगी मीरा,
भक्ति का ज्वार उमड़ पड़ा है।
आज तो मैं गाऊँगी
भक्ति की धुन लगाऊँगी
सुनना, प्रतिपूर्ण चित्त होकर
हृदय की उपस्थिति में सुनना.....

गुरुदेव,
मेरी लेखनी की कल्पना है,
प्रेरणा है।
मेरी गायनकला के स्तंभ है,
जब मेरे गीत-भजन-गायनकला
की कोई सराहना करता तो
पहले पहल मुझे यह अनुभव
बड़ा ही सुखद लगता था।
पर.....
जब मैंने गुरुदेव के
शब्द-गीत-लय-यति
प्रयोग की उठापठक देखी
तो मुझे लगा वस्तुतः
उपासना-आराधना का
ध्रुव तो यह है,
उनका संगीत मेरे जीवन के
हर कण-कण मन वचन पर
गान बनकर,
गूँजने लगा।
वे मेरे मन में उमंग की तरह
समा गए।
पानी में कोई तरंग ढूँढने चले
तो वो मिलेगी नहीं पर,
होती है।
मैंने वह तरंग
अपने भीतर महसूस की।

जिज्ञासु!
परम पुण्य का परमोदय
मेरे भाग्य का स्वर्णिम सूर्योदय,
प्रशस्त दिनों का प्रवेद्वार बनकर
गुरुदेव क्या मेरी
जिंदगी में आए,
भावप्राण जागृत हो गए,
कृपा का हाथ क्या उठाया
भीतर ही भीतर लगा
जैसे,

* पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष पर महासतीप्रवरा द्वारा अभिव्यक्त भावों का संकलित रूप।

प्रस्तर मूर्तिमान बन गए।
उस सौम्य शशि ने अपनी
शीतल शांत सुधारस झरती
किरणें क्या बिखेरी
तन-मन-जीवन समर्पण
सब कुछ ऊर्जावान बन गए।
और आज सच कहूँ
जिज्ञासु,
वे जीवन के सभी आश्चर्यों के पार
जीवन के परमानंद की
अनुभूति बन गए हैं।
जिज्ञासु! उनके
चेहरे का सौंदर्य,
वाणी का माधुर्य,
हृदय का औदार्य,
बुद्धि का स्थैर्य
आत्मा का ऐश्वर्य
सबकुछ अद्भुत है।
उनमें,
चंद्रमा सी शीतलता
सूर्य सी तेजस्विता
फूल सी कोमलता
शहद सी मधुरता
स्वयमेव ही उद्भूत है।
उनकी,
भाषा में भाव
शब्द में व्याख्या
विचारों में विनय
प्रकृति से ही प्रादुर्भूत है।

जब वे गाते हैं तो,
समा बंध जाता है।
जब वे चलते हैं तो,
मस्ताना पवन झूमने लगता है।
जब वे देखते हैं तो,
दृश्य का सौंदर्य बढ़ जाता है।
जब वे बोलते हैं तो,
मौसम-मंजर भी सजदा करता है।
सचमुच जिज्ञासु,
'वे न जाने कौनसी
आराधना के पुण्य हैं,
जो मिले हमें धरा पर देह धरकर
भगवान की,
वे न जाने कौनसी
मंगल घड़ी की सर्जना है
जो हमें उपहार लगते हैं
आज अरिहंत के'
जब मैंने उनके दर्शन नहीं किए थे,
केवल सुना ही सुना था
तब मन में कल्पनाओं की
उधेड़-बुन चलती रहती थी
कि,
वे ऐसे होंगे, वे वैसे होंगे
पर जब वास्तविकता में देखा तो,
सारी कल्पनाएँ व्यर्थ लगीं,
सुना था उनका नाम
कइयों की जुबान से,
बनी तस्वीर दिल में
कल्पना के अनुमान से
कल्पना लगी बेजान,

जब हकीकत में देखा
सिर ऊँचा हुआ तब
फक्र से अभिमान से,
और सुनो,
जिज्ञासु.....
ऐसा सद्गुणों से
शोभित, सुरभित,
विभूषित, आलोकित
तेजस्वित जीवन है मेरे
भगवन्त का जीवन।
प्रथम दर्शन में ही मन कह उठा
'स्वामिन् त्वमेव भुवनेऽत्र
भवान्तरेऽपि'
सतीवर, आपने तो मेरे
नीरस जीवन को प्रेम के रस
से पूर्ण सरस बना दिया है।
आपके कथन से
मेरे भीतर एक विशिष्ट
प्रेम ने जन्म लिया है,
पूर्ण निश्चल और निःस्वार्थ प्रेम ने।
मेरी श्वास की माला में अब
गुरुदेव के नाम की मणि
सदा पिरोई रहती है।
आपके सान्निध्य में,
आपसे श्रवण कर ही मैं यह
जान पाया हूँ कि प्रेम क्या है?
प्रेम!
यह गहरी समझ
और आनन्द से भरा एक तत्त्व है,
जो हृदय से परखता है तर्क से नहीं,
जो लेने से अधिक देता है
लेने की भावना के बगैर देता है
देता है और भूल जाता है,
यह बिना भय के
अपना हृदय खोलता है,
और आक्रामक हुए बिना ही
हृदय के भीतर प्रवेश करता है
यह एक ही साथ मृदु और
बलवान होता है।
यह जीवन को अधिक
जीवन्त बनाता है।
और, किसी भी परिस्थिति में
साथ नहीं छोड़ता है।
जहाँ प्रेम है, जीवन बहते
झरने की तरह प्रवाहित
और मधुर बन जाता है।
यह सामान्य क्षणों को
आलोकित करता है और
सामान्य बातों को भी
सोने जैसा मूल्यवान बनाता है।
महासती! आपने
प्रेम करना सिखाकर
मेरे मूल्यहीन जीवन को
मूल्यवान बना दिया है।
अब यह मूल्यवान जीवन
अमूल्य बने इस हेतु
गुरुदेव के सद्गुणों का
समुत्कीर्तन कीजिए।

(क्रमशः)

नारी-स्तम्भ

परिवार : जीवन-निर्माण का आधार (2)

उपाध्याय श्री प्रवीणऋषि जी

रिश्तों में जब पारस्परिक विश्वास और समर्पण नहीं होता है तो धर्म की अनुभूति बहुत दूर की चीज़ है। आज के परिवारों की स्थिति के बारे में मुझसे अधिक आप जानते हैं। क्योंकि मैं तो सिर्फ देखता, सुनता व पढ़ता हूँ और आप तो उसे जीते हैं। एक शहर में चातुर्मास चल रहा था। दोपहर के वक्त एक बहन मेरे पास आकर बोली, "महाराज साहेब! मैं क्या करूँ ?"

मैंने पूछा, "क्या हुआ ?"

वह बोली, "इतने दिनों से मारते थे, मैं सहन कर लेती थी। अब बेटा बड़ा हो गया है, ये शराब पीकर आते हैं और उसके सामने भी मुझे मारते हैं। और कल तो हद हो गई महाराज! बेटे ने भी मेरे ऊपर हाथ उठा दिया!"

जिसको बाप मारता है, उसे बेटे को मारने में कितनी देर लगेगी? यह घटना मैं ओसवाल परिवार की बता रहा हूँ। मैं जब सुनता हूँ कि पति, पत्नी को मारता है तो मुझे बहुत हैरानी होती है। यह कल्पना में भी अमानवीय है कि जिसके साथ सात फेरे लिए हैं, उसको कोई पति मारता होगा। लेकिन कुलीन माने जाने वाले परिवारों में भी ऐसी घटनाएँ जानने-सुनने को मिलती हैं तो मन अकथ व्यथा से भर उठता है।

प्रयोगधर्मिता आवश्यक

इन स्थितियों की चर्चा करने का मेरा मकसद यह है कि यदि वैज्ञानिक बंजर धरती को उपजाऊ बनाने में कामयाब हो सकते हैं तो हम क्यों नहीं कोई ऐसा प्रयोग करें कि परिवार जीवन-निर्माण की पाठशाला बन जाए। कम से कम इतना तो हो कि उपजाऊ धरती बंजर नहीं होने पाए। रेगिस्तान को नन्दनवन बनाने वाले का अभिनन्दन है। लेकिन कम से कम इतना तो होना ही चाहिये कि अब तक जो नन्दनवन हरा-भरा था, वह कहीं उजड़ नहीं जाए। ऐसी साधना और ऐसे प्रयोग होने चाहिये।

अब तक समाज में सन्तों का कार्य प्राय: व्याख्यान सुनाने तक सीमित रहता है और श्रावक-श्राविकाओं का कार्य व्याख्यान सुनने तक सीमित रहता है। समाज में प्रयोगधर्मिता का नितान्त अभाव है। मैं मेरे लिए बताऊँ कि मुझे व्याख्यान से विशेष प्यार नहीं है। आज व्याख्यान को प्रयोगधर्मी और व्याख्यान-स्थल को प्रयोगशाला बनाने की आवश्यकता है,

जहाँ व्यक्ति और समाज की समस्याओं का पूर्ण एवं मैत्रीपूर्ण समाधान हो सके।

बदलाव का हौसला

वस्तुतः आजकल स्थितियाँ बहुत विकट हो चली हैं। लेकिन निराश नहीं होना है। जूझने का हौसला रखना है। आप और हम उन श्रमण भगवान महावीर के पुत्र हैं, पुत्रियाँ हैं, जिन्होंने चण्डकौशिक को भी अमृतकौशिक बना दिया, अर्जुनमाली जैसे हत्यारे को भी भगवान बना दिया। जिसने नरक का बंध कर लिया था, उस राजा श्रेणिक को भी तीर्थंकर का पुण्य बँधवाने वाले परमपिता की हम सन्तान हैं। इसी हौसले, तमन्ना और अरमान के साथ नज़ारे बदलने का पुरुषार्थ किया जाना चाहिये।

विपरीत स्थितियों पर टिप्पणियाँ करना, किसी को कटघरे में खड़ा करना बहुत आसान है। समाज की कमियों की चर्चा करने के लिये साढ़े तीन इंच की जुबान भी साढ़े तीन हाथ की बन जाती है। लेकिन समाज का सुधार करने के लिए साढ़े तीन हाथ का शरीर काम के लिए आगे नहीं बढ़ता है। समाज-सुधार के लिए हौसला चाहिये कि "मैं इन हालातों को मंजूर नहीं करूँगा, मैं इन हालातों को बदलने का प्रयत्न करूँगा।" ऐसा संकल्प जिनके मन में होता है, वे सकारात्मक परिवर्तन करने में सक्षम बनते हैं।

दुआ की शक्ति

लोग आशीर्वाद लेने के लिए, मंगलपाठ सुनने के लिए, दुआ लेने के लिए बहुत जगह जाते हैं। लेकिन सप्रसंग एक बात कहना चाहूँगा। इन्दौर का एक परिवार। दो समर्थ बेटे हैं। इतने समर्थ व पढ़े-लिखे कि उन्होंने निर्यात-उद्योग शुरू किया। इसके लिए उन्होंने बैंक व बाज़ार से करोड़ों का कर्ज लिया। बाप की इज्जत थी, इस कारण लोगों ने बेटों को कर्ज दिया। लेकिन उनका उद्योग चल नहीं पाया। कारखाने पर ताले लग गये। लेनदार वसूली के लिए आने लगे। परन्तु हालत यह हो गयी थी कि सारी ज़ायदाद बेचने पर भी ऋण नहीं चुकाया जा सकता था। ऐसी हालत में बेटों ने सोचा कि देश छोड़कर भाग जाना चाहिये। इस बीच एक परिवार के कहने पर वे मेरे पास आये। मैंने उनको उत्तराध्ययन सूत्र का प्रयोग दिया। दो महीने के बाद मैंने उनका हालचाल पूछा तो बोले, "महाराज साहेब! हालत वैसी की वैसी है।"

प्रयोग सफल नहीं होने का कारण जानने के लिए मैं उस कॉलोनी में गया। उनके पिताजी मुझे मिले। मैंने उनके पिताजी से बात की। मैंने उनके बच्चों का हालचाल पूछा। उनके पिताजी ने अपने अंदर की पीड़ा व्यक्त की, "महाराज! ऐसे बच्चे जन्मे कि मेरी सारी इज्जत मिट्टी में मिला दी।"

तब मुझे रहस्य का पता चला कि काम क्यों नहीं हो रहा है। मैंने उनके पिताजी से कहा,

"एक छोटी-सी बात सुनिये, एक संकल्प लीजिये कि आप अपने बच्चों को कभी बद्दुआ नहीं देंगे। जब तक आपकी बद्दुआ बेटों को मिलेगी, तक तक बेटों की तकदीर नहीं सुधर सकती। कोई गुरु, कोई भगवान, कोई धर्म किसी व्यक्ति की तकदीर नहीं बदल सकता है, जब तक कि व्यक्ति के माता-पिता उन्हें बद्दुआ देते हैं।"

वह व्यक्ति बोला, "महाराज साहेब! दिल बहुत दुःखी है।" मैंने कहा, "बद्दुआ देने से सुखी हो जाओगे ? और आप किसको बद्दुआ दे रहे हैं ?"

यह बात उनके समझ में आ गई। मैंने उन्हें ज्ञाताधर्मकथा सूत्र के एक प्रयोग के साथ झाव दिया कि वे रोज सुबह उठने के बाद अपने बेटों के पास जाएँ। उन्होंने वैसा ही किया। ाज वह परिवार बुलंदी पर है। कोई मंत्र, तंत्र और यंत्र नहीं। पिता की दुआ मिले और पुत्र ी तकदीर नहीं बदले, ऐसा नहीं हो सकता है। लेकिन पिता को दुआ देना सीखना चाहिये। जिस घर की छत गाली देती है, उस घर में सुख कैसे रहेगा। छत के तप जाने पर कितने ही खे चला लेने पर भी ठण्डक नहीं आ सकती है। इसके विपरीत यदि छत ठण्डी हो तो बाहर की गर्मी बेअसर हो जाती है। छत यदि दुआ दे दे तो घर का सारा दुर्भाग्य सौभाग्य में बदल जाता है। और छत यदि बद्दुआ देती है तो घर के चिराग से घर में आग लग जाती है।

इसलिए देखिये कि क्या आपके दादा-दादी, माँ-बाप आपको आशीर्वाद देते हैं? सास बहू को आशीर्वाद देती है या केवल उलाहना ही देती है। सास यदि बहू को केवल उलाहना ही देती रहेगी तो वह चाहे जितनी माला गिन ले, उसे शांति नहीं मिल सकती। क्योंकि बहू निरन्तर अपनी सास को मन में गाली देती रहेगी। जुबान की गाली कान तक पहुँचती है, जबकि दिल की गाली अंदर तक पहुँचती है। इसी प्रकार जुबान से प्रदत्त आशीर्वाद कानों तक रह जाते हैं और दिल से निकली दुआएँ जिंदगी में खुशियाँ भर देती हैं। बहू को बेटी बनाने के लिए दुत्कार की बजाय दुलार देना होगा।

सद्भावपूर्ण वचन

चेन्नई में रायपुरम् निवासी लक्खु सेठ मेरे पास आये। उन्होंने अच्छे-अच्छे नुस्खे दिये और बोले, "महाराज साहेब! मैं अपनी बहू से कहता हूँ कि जनम देने वाली माँ तो गुजर गयी, अब तो तुम्हें ही मेरी माँ का दायित्व निभाना है। अब जिंदगी तेरे भरोसे चलेगी।" जो श्वसुर अपनी बहू से ऐसा कहता हो, उसकी बहू कभी ससुर की थाली में ठण्डी रोटी नहीं परोसेगी। उन्होंने एक और बात बताई। बोले, "जब कभी कँवरसाहब घर आते हैं तो मैं उन्हें कहता हूँ कि मेरी बेटी तो कुलक्षणी है। आप धन्य हैं कि आपने मेरी बेटी को सुलक्षणी बना दिया।"

ऐसे श्वसुर से किसी जमाई की कोई अपेक्षा नहीं रह जाती है। जब सद्भावों के साथ

सकारात्मक बोला जाता है तो परिणाम सुन्दर ही आयेंगे।

तलाक का अभिशाप

आजकल समाज में एक बात बहुत चर्चा का विषय बनी हुई है, वह है – तलाक। बड़ी संख्या में विवाह के कुछ ही समय पश्चात् तलाक। विवाह-विच्छेद की ऐसी स्थितियाँ क्यों बन रही हैं और कौन इन स्थितियों के लिए जिम्मेदार हैं ? माँ-बाप जिम्मेदार हैं! पहले बहू घर में आती थी। वह घर की बहू होती थी तथा बहू कहलाती थी। अब जो लड़की शादी करके घर में आती है वह किसी की पत्नी बनकर आती है, घर की बहू बनकर नहीं आती है। इसलिए वह पत्नी बनकर ही जीती है। घर की बहू बन ही नहीं पाती है। और फिर करेला नीम पर चढ़ा दिया जाता है। शादी हुई नहीं कि मधुमास (हनीमून) का टिकट तैयार है। बहू घरवालों से मिलीजुली नहीं, जुड़ी नहीं और सीधा उसे हनीमून के लिए भेज दिया जाता है। अलगाव की व्यवस्था कर दी जाती है। ये व्यवस्थाएँ पारिवारिक मूल्यों के लिए खतरनाक साबित हो रही हैं।

ये कैसी आजादी

एक बेटी का रिश्ता तय हो गया, रविवार को वह अपने मंगेतर के साथ घूमने के लिए गई। सोमवार को मैं वहीं पर था। इससे पहले जब मैं उस गांव में गया था, तब वह बेटी गोचरी के लिये घर बताने आती थी। लेकिन उस सोमवार को वह न तो गोचरी में, न व्याख्यान में और न ही प्रार्थना में आई। मैंने उसकी माँ को पूछा, "बिटिया कहाँ है?" वह बोली, "सो रही है।" मैं अचरज में था कि 11 बजे तक सो रही है। फिर वह दोपहर में दर्शन के लिये आयी। मैंने पूछा, "क्या बात है इतनी देर तक सो रही थी?" वह बोली, "महाराज साहेब! कल घूमने के लिये गये थे।" मैंने पूछा, "दिन में गयी थी या रात में ?" वह बोली, "दिन में गयी थी।" मैंने पूछा, "फिर।" उसने बताया, "महाराज साहेब! देर रात तक मोबाइल पर बातें होती रहीं। जब तक बेटरी डाउन नहीं हो गयी, तब तक बातें चलती रहीं।"

जब सारा बोलना शादी के पहले ही हो जायेगा तो शादी के बाद क्या बचेगा? शायद सारा प्यार शादी के पहले ही पूरा हो जाता है और बाद में खार ही बचा रहता है! इसलिए फिर एकाकी परिवार और तलाक जैसे मामले बहुत जल्दी शुरू हो जाते होंगे! इसलिए आधुनिक जीवन शैली में जो नई किस्म की आजादियाँ आई हैं, वे पारिवारिक जीवन में बर्बादियाँ ला रही हैं।

कुटुम्ब जागरिया

इन व्यवस्थाओं को बदलने के लिए व्याख्यान अपर्याप्त लगता है। फिर भी व्याख्यान

जब देना है तो मजबूरी से नहीं, मजबूती से ही देना चाहिये। श्रोता जब प्रेम से सुनने वाले हों तो वक्ता भी पूरे मन से व्याख्यान देता है। सामने वाला जब अंगुलियाँ चाट-चाट कर खाता हो तो परोसने का मन होता ही है। फिर यह नहीं देखा जाता है कि पीछे बचता है या नहीं।

आचार्य श्री आनन्दऋषिजी की उपस्थिति में सन् 1982 में 'कुटुम्ब जागरिया' कार्यक्रम शुरू हुआ था। उस कार्यक्रम के लिए एक छोटी-सी प्रार्थना बनायी थी। घर-घर में वह प्रार्थना शुरू करवाई। उस समय वह कार्यक्रम सफल एवं प्रभावी रहा। लेकिन अब तीन दशकों में इतने परिवर्तन आ चुके हैं कि तीनों पीढ़ियों को साथ में बिठा करके बखाण दे दूँ तो भी वांछित असर नहीं दिखाई पड़ता है।

इसलिये दो सालों से हैप्पीहोम ट्रेनिंग शिविर के माध्यम से एक प्रयोग शुरू किया है। परिवार प्रशिक्षण शिविर में सबसे पहले दादा-दादी को बुलाया जाता है। दादा-दादी यदि अपने अनुभव और वरिष्ठता के अनुसार सही भूमिका निभा ले तो परिवार में एक अनुकूल वातावरण बन जाता है। जैसे पत्ता पकने पर पीला हो जाता है, वैसे ही शायद उम्र पकने पर मन हठीला हो जाता होगा। इसीलिए सबसे पहला प्रशिक्षण शिविर है दादा-दादी का। दादा और दादी को दादा और दादी बनकर कैसे जीना ? जिस घर में दादा-दादी है तो उस घर को किसी अन्य का आशीर्वाद लेने की आवश्यकता नहीं रहती है।

दूसरा प्रशिक्षण माता-पिता के लिए है। माता एवं पिता की सही भूमिका के लिए उन्हें कैसे रहना एवं जीना चाहिये, जिससे वे बुजुर्गों और बच्चों के मध्य की प्रभावशाली भूमिका निभा सकें। बच्चों को सबसे आखिर में प्रशिक्षण दिया जाता है। क्योंकि बच्चों को सिखाना, सुधारना एवं परिवर्तित करना बहुत आसान है। बच्चों को जो बात एक बार सिखा दी जाती है, वह वे हमेशा ध्यान में रखते हैं।

ये तीनों शिविर हो जाने पर पुनः दादा-दादी को बुलाया जाता है। उनके बाद फिर मम्मी-पापा को और फिर बच्चों को बुलाया जाता है। अन्त में सातवाँ सत्र संयुक्त रूप से लिया जाता है। जो परिवार इन सातों ही शिविरों में जीने की कला सीख लेते हैं, वे परिवार सुखों का सर्जन करते हैं तथा समाज को शक्तिशाली बनाते हैं। ऐसे ही भाग्यशाली परिवारों में युग-प्रवर्तक महान व्यक्तियों का जन्म हुआ करता है।

(साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई द्वारा सम्पादित)

साधना में बाधक और सहायक

जो कर्म आत्मसाक्षीपूर्वक सम्पादित किया जाता है, वह कर्म ही साधक को साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ने में सहायक होता है। जो कर्म स्व-दोषों को छिपाने के लिए किये जाते हैं, वे साधना में बाधक होते हैं।

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः83)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

श्री धर्मचन्द जैन

(गमा का थोकड़ा-5)

जिज्ञासा- तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में कौन-कौनसे जीव आते हैं ?

समाधान- तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में निम्नांकित जीव आते हैं-

भवनपति से लेकर आठवें देवलोक तक के (10+1+1+8=20) **20 जीव**

5 स्थावर, 3 विकलेन्द्रिय, संख्यात वर्ष की आयु वाले सन्नी तिर्यंच, असंज्ञी तिर्यंच,संख्यात वर्ष की आयु वाले संज्ञी मनुष्य तथा असंज्ञी मनुष्य **12 जीव**

7 नारकी के **07 जीव**

इस प्रकार कुल (20+12+7)= **39 जीव**

अर्थात् असंख्यात वर्षायुष्क सन्नी तिर्यंच तथा असंख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य, दूसरे शब्दों में दोनों प्रकार के युगलिक को छोड़कर शेष सभी मनुष्य व तिर्यंच गति के जीव, तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में आते हैं। देवगति की अपेक्षा से विचार किया जाय तो ज्ञात होता है कि नवें देवलोक एवं उससे ऊपर के सभी देवों को छोड़कर अर्थात् आठवें देवलोक तक के देवता तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में आते हैं।

जिज्ञासा- असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय मरकर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में आते हैं, उनकी क्या-क्या प्रमुख विशेषताएँ हैं ?

समाधान- तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में आने वाले असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की प्रमुख विशेषताएँ निम्नांकित हैं-

1. असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय पर्याप्त तथा अपर्याप्त दोनों ही प्रकार के जीव तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में आ सकते हैं। अर्थात् लब्धि अपर्याप्त, करण अपर्याप्त, लब्धि पर्याप्त तथा करण पर्याप्त असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में आ सकते हैं।
2. अपर्याप्त अवस्था में काल करने वाले असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय यदि तिर्यंच

पंचेन्द्रिय के घर में जाते हैं तो अधिक से अधिक एक करोड़ पूर्व तक की आयु प्राप्त कर सकते हैं, उससे अधिक नहीं। अर्थात् अपर्याप्त में मरने वाले युगलिक नहीं बन सकते।

3. पर्याप्त अवस्था में काल करने वाले असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में आये तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त से लेकर उत्कृष्ट पल्योपम के असंख्यातवें भाग तक की ही आयु प्राप्त कर सकते हैं। अर्थात् उत्कृष्ट स्थिति वाले तिर्यंच युगलिक नहीं बन सकते हैं।
4. अपर्याप्त अवस्था में काल करने वाले असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की वर्तमान भव में अवगाहना उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवें भाग की ही होती है तथा वह तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में उत्पन्न होने पर 1000 योजन तक की अवगाहना भी प्राप्त कर सकता है।
5. पर्याप्त अवस्था में काल करने वाले असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की वर्तमान भव में अवगाहना उत्कृष्ट 1000 योजन तक हो सकती है। आगामी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के भव में भी इतनी अवगाहना प्राप्त कर सकते हैं।
6. जो पर्याप्त असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय मरकर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में आते हैं तो वे असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के भव में सम्यग्दृष्टि अथवा मिथ्यादृष्टि हो सकते हैं, किन्तु जो अपर्याप्त अवस्था में काल करके आते हैं वे नियमा मिथ्यादृष्टि ही होते हैं।
7. पर्याप्त असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय यदि तीसरे व नवें गमे से तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में आते हैं तो नियम से युगलिक बनते हैं। युगलिक वापस असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय नहीं बनते, इस कारण से दो ही भव करते हैं तथा शेष सात गमों से आते हैं तो अधिकतम चार बार आ सकते हैं अर्थात् अधिक से अधिक आठ भव कर सकते हैं।

जिज्ञासा– सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय यदि काल करके सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में आता है तो उसमें क्या-क्या प्रमुख विशेषताएँ होती हैं ?

समाधान– सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय यदि मरकर सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के रूप में उत्पन्न होते हैं तो उनकी विशेषताएँ निम्नांकित हैं–

1. सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय यदि अपर्याप्त अवस्था में काल करे तो अवगाहना जघन्य-उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवें भाग की तथा स्थिति जघन्य-उत्कृष्ट

अन्तर्मुहूर्त की ही होती है।

2. सन्नी तिर्यंच यदि पर्याप्त अवस्था में काल करें तो अवगाहना अंगुल के असंख्यातवें भाग से लेकर 1000 योजन तक की हो सकती है, तथा स्थिति अन्तर्मुहूर्त से लेकर तीन पल्योपम तक की हो सकती है।
3. सन्नी तिर्यंच यदि तीसरे, नवें गमे से सन्नी तिर्यंच के घर में उत्पन्न होता है तो अवश्य ही युगलिक बनता है। शेष सात गमों से लगातार 8 भव कर सकता है। युगलिक बनने पर उसकी स्थिति क्रोड़ पूर्व झाझेरी से लेकर तीन पल्योपम तक की हो सकती है।
4. अपर्याप्त अवस्था में मरने वाले सन्नी तिर्यंच मिथ्यादृष्टि तथा पर्याप्त अवस्था में मरने वाले सन्नी तिर्यंच अपने वर्तमान भव में तीनों दृष्टि वाले हो सकते हैं।
5. पर्याप्त अवस्था में काल करने वाले सन्नी तिर्यंच जो कि सन्नी तिर्यंच के रूप में उत्पन्न होंगे, वे तीन ज्ञान अथवा तीन अज्ञान वाले वर्तमान भव में हो सकते हैं। अपर्याप्त अवस्था में मरने वालों में तो दो अज्ञान ही होते हैं।
6. सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की ऐसी विचित्रता होती है कि एक करोड़ पूर्व की आयु वालों की अवगाहना भी अंगुल के असंख्यातवें भाग की ही रह सकती है तथा अधिकतम 1000 योजन की अवगाहना भी हो सकती है। अर्थात् सन्नी तिर्यंच में श्रावक-श्राविकाओं की अवगाहना अंगुल के असंख्यातवें भाग से लेकर एक हजार योजन तक की हो सकती हैं।
7. सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जो तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में आकर युगलिक बनता है तो उसकी अवगाहना कम से कम पृथक्त्व धनुष तथा अधिक से अधिक 6 गाउ की हो सकती है।

-रजिस्ट्रार, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

क्षमा-याचना

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका के समस्त लेखकों एवं पाठकों से हमारा नियमित सम्बन्ध रहता है। न चाहते हुए भी हमारी किसी भूल से आपके हृदय को ठेस पहुँचना स्वाभाविक है। पर्वाधिराज सम्वत्सरी महापर्व पर हम निर्मल हृदय से अपनी भूल का परिमार्जन करते हुए आपसे हार्दिक क्षमायाचना करते हैं। आशा है आप क्षमा कर मैत्री को प्रगाढ़ बनायेंगे।

-सम्पादक, सहसम्पादक एवं जिनवाणी परिवार

स्वास्थ्य-विज्ञान

बिना दवा हृदय रोगों का प्रभावशाली उपचार

डॉ. चंचलमल चोरडिया

मानव शरीर दुनिया की सर्वश्रेष्ठ मशीनरी है। यदि शरीर के किसी भी भाग में कोई तीक्ष्ण कांटा, सुई अथवा पिन चुभ जाए तो उस समय न तो आंख को अच्छे से अच्छा दृश्य देखना अच्छा लगता है और न कानों को मन पसन्द गीत सुनना। दुनिया भर में चक्कर लगाने वाला हमारा चंचल मन क्षण मात्र के लिए अपना ध्यान वहां केन्द्रित कर देता है। जिस शरीर में इतना समन्वय, तालमेल और अनुशासन हो, क्या उस शरीर में अकेला हृदय रोग उत्पन्न हो सकता है? मानव शरीर अपने आप में परिपूर्ण होता है। इसमें अपने आपको स्वस्थ रखने की पूर्ण क्षमता होती है। आवश्यकता है अपनी क्षमताओं को पहचानने की, समझने की तथा आवश्यकतानुसार उसका सही उपयोग करने की।

हृदय के कार्य एवं बनावट

हृदय हमारे शरीर में माँसपेशियों से निर्मित एक लचीला चार प्रकोष्ठों वाला अंग होता है जो वक्षस्थल के बांयी तरफ तीसरी से छठी पसली के बीच में होता है। उसका आकार स्वस्थ व्यक्ति की अपनी बंद मुट्ठी के समान होता है। स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों में इसका आकार प्रायः बड़ा होता है। इसके मुख्य दो भाग होते हैं- बांया और दांया। जो फिर दो भागों में विभाजित होता है। ऊपरी भाग को एट्रियम (आलिन्द) एवं निचले भाग को वेन्ट्रिकल (निलय) कहते हैं। इस प्रकार दो आलिन्द और दो निलय मिलकर इसके चार प्रकोष्ठ होते हैं। हृदय का कार्य शरीर के दूषित रक्त को लेकर फेंफड़े में भेजना तथा वहाँ से शोधित शुद्ध रक्त को पुनः सारे शरीर में वितरण कर, रक्त की आवश्यकता की पूर्ति करने का होता है। हृदय में खुलने वाली सभी नाड़ियों के मुँह पर वाल्व होते हैं। इन वाल्वों की संरचना ऐसी होती है कि रक्त का बहाव एक ही तरफ हो सकता है। हृदय अपना कार्य बिना किसी विश्राम के दिन-रात करता रहता है। हृदय के धड़कन की गति स्वस्थ व्यक्ति के प्रति मिनट 70 से 75 के लगभग होती है। निद्रा और आराम के समय इसकी गति कम हो जाती है, जबकि आवेग में इसकी गति बढ़ जाती है। हृदय में दो पंप होते हैं। एक की सहायता से रक्त को फेंफड़ों में प्रवाहित किया जाता है और दूसरे से रक्त को शरीर के अन्य भागों में भेजा जाता है।

हृदय को दो कोरोनरी धमनियों में प्रवाहित रक्त से पोषण प्राप्त होता है। ये धमनियाँ

(आर्टरी) छोटी-छोटी शाखाओं वाले वृक्ष की तरह होती हैं, जिसका एक तना होता है। धमनियाँ ही हृदय का सर्वाधिक संवेदनशील भाग होती हैं। इसमें किसी प्रकार का रोग मृत्यु का कारण भी बन सकता है।

धमनियों में अपचित वसा (कॉलेस्ट्रोल)के जमने के कारण धीरे-धीरे इसमें रक्त का प्रवाह अवरुद्ध होने लगता है। धमनी में कभी-कभी वसा का डॉट भी बन सकता है। हृदय रोग की गंभीरता धमनी में अवरोध के आकार तथा धमनी में उसके स्थान पर निर्भर करती है।

रक्त परिभ्रमण पर हृदय की पम्पिंग का जो दबाव पड़ता है उसे रक्तचाप (Blood Pressure) कहते हैं। सामान्य दबाव एक स्वाभाविक क्रिया होती है, परन्तु जब यह दबाव असामान्य हो जाता है तो रोग बन जाता है। जब किसी कारण से रक्त का दबाव बढ़ जाता है तो उसे उच्च रक्तचाप (High Blood Pressure) और जब रक्त का दबाव सामान्य से कम हो जाता है तो उसे निम्न रक्तचाप (Low Blood Pressure) का रोग कहते हैं।

जब हृदय अपने पास एकत्रित हुए रक्त को शरीर में भेजने के लिये सिकुड़ता है तो उस समय जो अधिकतम दबाव बनता है उसे सिस्टोलिक दबाव (Systolic Pressure) अर्थात् उच्च रक्तचाप कहते हैं। इसी समय शरीर में वापिस लौटे रक्त को ग्रहण करने के लिये हृदय ढ़ीला (Relex) होता है, उस समय जो रक्त का दबाव होता है, उसे डायस्टोलिक दबाव (Diastolic Pressure) अर्थात् निम्न रक्तचाप कहते हैं। रक्तचाप के दबाव की निम्न सीमा उच्च रक्तचाप की सीमा से अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण होती है।

हृदय संबंधी रोग

रक्त प्रवाह में किसी कारण अवरोध आने से हृदय को अपना कार्य पूर्ण क्षमता से करने में कठिनाई होती है। स्वयं हृदय की मांसपेशियाँ भी रक्त से पुष्ट होती हैं। परन्तु जब उन धमनियों में रुकावट पैदा हो जाती है तो, हृदय की मांसपेशियाँ क्षतिग्रस्त हो जाती हैं। हृदय कमजोर हो जाता है जिसके कारण हृदय की धड़कन आवश्यकता से कम अथवा अधिक हो जाती है तथा कभी-कभी धड़कन बंद भी हो जाती है। रक्तचाप कम अथवा ज्यादा रहने लगता है। अचानक सीने में दर्द होने लगता है। श्वास लेने में कठिनाई होने लगती है। व्यक्ति को थकान और चक्कर आने लगते हैं। हृदय और छोटी आंत मेरेडियन के मार्ग में आने वाले शरीर के भागों में दर्द होने लगता है। ये सब हृदय रोग के लक्षण होते हैं।

धड़कन एवं रक्तचाप के असंतुलन के अतिरिक्त रक्त वाहिनियों का कड़ा पड़ जाना (Arterio Sclerosis) वाल्व का खराब हो जाना (Valvular Disorders), रक्त शिराओं का फूल जाना (Varicose Veins) रक्त संचार की कमी से हृदय में तीव्र वेदना

होना (Angina Pectoris), हृदय का आकार बढ़ जाना (Heart Enlargement) हृदय के आसपास तरल पदार्थों का एकत्रित हो जाना (Pericardial Infusion) हृदय की मांसपेशियों का सिकुड़ना (Articular Fibrillation), हृदय की क्रिया की गति तीव्र होना (Articular Flutter), हृदय के अवरोध (Heart Block), हृदय की एक या अधिक धमनियों में अवरोध (Coronary Thrombosis), दिल का दौरा पड़ना (Heart Attack), हृदय की धड़कन बंद होना (Heart Failure) आदि रोग हृदय के रोगों के अन्तर्गत आते हैं।

हृदय रोग के प्रमुख कारण

हमारी अप्राकृतिक असंतुलित, असंयमित, अनियमित,तनावमय, जीवन शैली हृदय रोग का मुख्य कारण होती है। जैसे गलत खान-पान, मादक दुर्व्यसनों का सेवन, भोजन, पानी और हवा के सेवन के सनातन नियमों का पालन न करना, आवश्यक परिश्रम न करना अथवा क्षमता से अधिक शारीरिक अथवा मानसिक श्रम करना। काम, क्रोध, चिन्ता, भय, शोक, मोह, लोभ आदि मानसिक तनावों से ग्रस्त रहने से हृदय रोग होने की संभावना बढ़ जाती है। मानसिक आवेग के समय मस्तिष्क को अत्यधिक रक्त की आवश्यकता होती है। गलत खान-पान से आमाशय को पाचन हेतु अधिक रक्त की आवश्यकता होती है। क्षमता से अधिक कार्य करने से भी हृदय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। हृदय हमारे भावों का प्रतिनिधित्व करता है। अत: नकारात्मक सोच से हृदय की ऊर्जा का अपव्यय होता है। हृदय का संबंध ताप ऊर्जा से होता है। जिसकी अभिव्यक्ति वाणी के माध्यम से होती है। अत: अधिक तेज अथवा बिना मतलब अधिक बोलना हृदय के लिये हानिकारक होता है।

हृदय में प्राण ऊर्जा का प्रवाह हृदय मेरेडियन से संबंधित होता है। जब तक यह प्रवाह संतुलित और आवश्यकता के अनुरूप रहता है, तब तक रक्त नलिका में विजातीय तत्त्वों की उपस्थिति प्रभावहीन रहती है। परन्तु निरन्तर अधिक प्राण ऊर्जा की मांग के कारण हृदय मेरेडियन के मार्ग में आने वाले शरीर के अवयवों को अधिक कार्य करना पड़ता है। जिससे उनमें दर्द और पीड़ा की अनुभूति होने लगती है। अत: हृदय मेरेडियन के किसी भी भाग में किसी भी कारण से दर्द होने की स्थिति में रोगी को अधिक सजग और सतर्क रहना चाहिये।

यिन-यांग के सिद्धान्तानुसार हृदय और छोटी आंत जोड़ों में कार्य करते हैं और दोनों का संबन्ध ताप ऊर्जा से होता है। अत: जब दोनों अंगों की ऊर्जाओं में असंतुलन हो जाता है तो हृदय रोग के लक्षण प्रकट हो जाते हैं। जैसे गैस के ऊपर आने से हृदय में होने वाले दर्द अथवा छोटी आंत के मेरेडियन के क्षेत्र में आने वाले शरीर के भाग पर होने वाले दर्द को हृदय रोग का कारण समझ लिया जाता है। सही समय पर सात्त्विक भोजन करने तथा पाचन

के नियमों का पालन करने से इस प्रकार होने वाले हृदय रोगों से सहज ही बचा जा सकता है।

चीनी पंच तत्त्व के सिद्धान्तानुसार हृदय का नियन्त्रण गुर्दे से होता है और हृदय फेफड़े को नियन्त्रित रखता है। अत: जब गुर्दे अथवा फेफड़ों में गड़बड़ी हो जाती है तो भी उसका प्रभाव हृदय पर पड़े बिना नहीं रहता। जैसे कभी-कभी अकारण पसीना अधिक आने की स्थिति को हृदय रोग का कारण बतला दिया जाता है, परन्तु पसीना अधिक आने का कारण फेफड़े, बड़ी आंत अथवा गुर्दे-मूत्राशय में असंतुलन भी हो सकता है।

लीवर, हृदय का मातृ अंग और तिल्ली हृदय का पुत्र अंग होता है अर्थात् हृदय ऊर्जा के उत्पादन में लीवर तथा तिल्ली की प्राण ऊर्जा के उत्पादन में हृदय का योगदान होता है। लीवर और तिल्ली की गड़बड़ी का भी हृदय पर प्रभाव पड़ता है। अत: रोगी को हृदय रोगी घोषित करने से पूर्व चिकित्सक को समग्र दृष्टिकोण से निदान करना चाहिये तथा रोग से विभिन्न अंगों पर पड़ने वाले प्रभावों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। सहयोगी अंगों में प्राण ऊर्जा का संतुलन कर हृदय के विभिन्न रोगों का उपचार बिना शल्य चिकित्सा के प्रभावशाली ढ़ंग से किया जा सकता है।

हृदय शरीर का प्रमुख अंग है तथा उसके कार्य न करने पर मृत्यु हो जाती है। जिस प्रकार परिवार के किसी सदस्य के असाध्य रोग से पीड़ित होने पर अभिभावक चिन्तित रहता है तथा दूसरा व्यक्ति अपने स्वयं के रोग से पीड़ित होने के कारण चिन्तित रहता है। बाह्य रूप से दोनों चिन्तित रहते हैं, परन्तु दोनों की चिन्ता का कारण और निवारण का उपाय अलग-अलग होता है। ठीक उसी प्रकार शरीर के अन्य महत्वपूर्ण अंगों में खराबी के कारण हृदय पर पड़ने वाले अतिरिक्त कार्यभार तथा हृदय के अवयवों में गड़बड़ी होने से उत्पन्न स्थिति का अलग-अलग विश्लेषण और उपचार आवश्यक होता है। समस्या का मूल कारण मालूम करना जरूरी होता है। अत: जब तक समग्र दृष्टिकोण से हृदय रोग के लक्षण प्रकट न हों तो रोगी को बाह्य लक्षणों की रिपोर्ट के आधार पर हृदय रोगी घोषित करना न्याय संगत नहीं कहा जा सकता।

हृदय रोगों में विविध सुरक्षात्मक उपचार

आधुनिक विज्ञान ने हृदय रोग में राहत हेतु बाईपास सर्जरी, वाल्व परिवर्तन, पेसमेकर जैसी अनेक अत्यन्त खर्चीली सुविधाएँ उपलब्ध करायी हैं, परन्तु उनका उपयोग साधारण रोगी नहीं कर सकता। साथ ही शल्य चिकित्सा के पश्चात् सदैव दवाइयों की दासता और उनसे पड़ने वाले दुष्प्रभावों के कारण अन्य रोगों का सामना भी करना पड़ सकता है। अत: स्वावलंबी प्रभावशाली चिकित्सा आधुनिक युग की सर्वाधिक

आवश्यकता है। जब आवश्यकतानुसार अनेक स्वावलम्बी उपचार एक साथ किए जायें तो रोग तुरन्त नियन्त्रित हो जाता है। लेखक ने स्वयं हृदय रोग से पीड़ित होने पर, बिना किसी दवा स्वावलम्बी चिकित्साओं द्वारा अपने आपको स्वस्थ करने का अनुभव किया है।

शरीर में किसी भी रोग का एक प्रमुख कारण होता है आवश्यक प्राण शक्ति का अभाव। अत: रोगी को अनावश्यक कार्यों में अपनी प्राण ऊर्जा व्यय नहीं करनी चाहिए। वीर्य आरोग्य का मूल आधार होता है। अत: संयमित जीवन शैली अपनाकर उसकी सुरक्षा करनी चाहिए। स्वाध्याय, ध्यान, मंत्र, जप, तप, भक्ति एवं प्रार्थना द्वारा भी प्राण ऊर्जा प्राप्त होती है। शरीर का आभामण्डल शुद्ध होता है एवं हृदय रोग ठीक होता है।

1. **सूर्य मुखी तेल द्वारा गंडूस–** सूर्यमुखी तेल में रक्त के विकारों को रक्त से अलग करने की क्षमता होती है। अत: एक चम्मच सूर्यमुखी तेल को मुंह में भरकर 15-20 बार घुमाने से चेहरे की समस्त मांसपेशियाँ सक्रिय होने लगती हैं। जब रक्त मुंह की नाड़ियों से होकर गुजरता है तो तेल उसमें उपस्थित रोगाणुओं एवं विकारों को अपनी तरफ आकर्षित कर लेता है और रक्त शुद्धि में सहयोग देता है। 15-20 मिनट गंडूस के पश्चात् तेल को थूककर मुंह एवं उस स्थान को साफ कर लेना चाहिए। रोग की स्थिति अनुसार यह प्रक्रिया दिन में एक से अधिक बार की जा सकती है। रक्त विकार हृदय रोगों का प्रमुख कारण होता है एवं उसकी शुद्धि होते ही हृदय संबंधी रोग ठीक होने लगते हैं।

2. **दाणा मैथी स्पर्श द्वारा उपचार–** दाणा मैथी रक्त शोधक, पित्त नाशक तथा कफ और वात की शामक है। अत: हृदय में जिस स्थान पर दर्द अथवा भारीपन हो उस स्थान पर कागज की टेप पर मेथी दाणा चिपका कर लगा दें। अत: जिस स्थान पर मैथी का स्पर्श किया जाता है, वहां वात और कफ विरोधी कोशिकाओं का सृजन होने लगता है, शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ने लगती है। दर्द वाले अथवा कमजोर भाग में विजातीय तत्त्वों की अधिकता के कारण शरीर के उस भाग का आभा मंडल विकृत हो जाता है। मैथी अपने गुणों वाली तरंगें शरीर के उस भाग के माध्यम से अन्दर भेजती है, जिसके कारण शरीर में उपस्थित विजातीय तत्त्व अपना स्थान छोड़ने लगते हैं और प्राण ऊर्जा का प्रवाह संतुलित होने लगता है। फलत: रोगी स्वस्थ होने लगता है।

3. **स्वमूत्र चिकित्सा–** हृदय रोगियों को स्वमूत्र का पान अवश्य करना चाहिए क्योंकि शिवाम्बु में शरीर के लिए सैकड़ों उपयोगी रसायन होते हैं, जो रक्त के शुद्धीकरण, भोजन के पाचन एवं श्वसन क्रियाओं को सुव्यवस्थित, नियंत्रित और संतुलित रखने

के साथ-साथ शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। आधुनिक चिकित्सकों द्वारा हृदय घात के समय दिया जाने वाला युरोकाइन इंजेक्शन भी मानव मूत्र से ही बनता है। शिवाम्बु के सेवन से रक्त वाहिनियों की सफाई हो जाती है और बहुत बार शल्य चिकित्सा की आवश्यकता नहीं होती।

4. **चुम्बक चिकित्सा–** हृदय पर कुछ समय के लिए जब तक सिर में भारीपन अथवा चक्कर न आयें चुम्बक का दक्षिणी ध्रुव को स्पर्श करना चाहिए, जिससे हृदय ताकतवर होने लगता है। साथ ही हृदय बियोल मेरेडियन में प्राण ऊर्जा बढ़ाने से हृदय शक्तिशाली होता है।

5. **एक्युप्रेशर–** हृदय रोगियों को पगथली और हथेली में हृदय, छोटी आंत, तिल्ली, गुर्दो, फेफड़ों, यकृत, मेरुदण्ड, मस्तिष्क एवं सभी अन्तःस्रावी ग्रन्थियों के मुख्य प्रतिवेदन बिन्दुओं पर नियमित दबाव देने के साथ अन्य पीड़ा ग्रस्त प्रतिवेदन बिन्दुओं पर भी एक्युप्रेशर करना चाहिए। साथ ही हाथ एवं पैर की अंगुलियों के अंतिम सिरे पर दर्दस्थ प्रतिवेदन बिन्दुओं पर भी दबाव देने से सभी अंगों की मेरेडियनों में प्राण ऊर्जा संतुलित होने लगती है।

6. **स्वर परिवर्तन से उपचार–** हृदय रोगियों को कार्य के अनुरूप स्वर संचालन हेतु विशेष सजगता रखनी चाहिये। अचानक हृदय घात होते ही, जो स्वर चलता है उसमें परिवर्तन करने से तुरन्त लाभ होता है।

7. **उषापान–** उषापान से आमाशय और आंतों की सफाई होती है। जिससे पाचन तंत्र बराबर कार्य करने लगता है एवं हृदय को आवश्यकता से अधिक कार्य नहीं करना पड़ता।

8. **मौन हँसी एवं मुस्कान का अभ्यास–** प्रातः 15-20 मिनट मुस्कुराता हुआ चेहरा रखने एवं मौन हँसी हँसने का अभ्यास करने से मानसिक तनाव, आवेग, अधीरता, भय, चिंता आदि दूर होते हैं। सकारात्मक सोच विकसित होता है। अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ सक्रिय होती है जिससे शुद्ध हारमोन का निर्माण होता है, मानसिक संतुलन बना रहता है। दुःखी, चिन्तित, तनावग्रस्त, भयभीत, निराश, क्रोधी आदि मुस्करा नहीं सकते और यदि उन्हें किसी भी कारण से चेहरे पर मुस्कराहट आती है तो तनाव, चिंता, भय, दुःख, क्रोध आदि उस समय उनमें रह नहीं सकते, क्योंकि दोनों एक दूसरे के विरोधी स्वभाव के होते हैं। हैं। अतः किसी भी आकस्मिक स्थिति में रोग सहनशक्ति के बाहर हो तथा दवा लेना आवश्यक हो उस समय चन्द मिनटों तक मुस्कराता चेहरा बनाने मात्र से तुरन्त राहत मिलती है। नाक में शुद्ध देशी गाय के घी

की बूँदें डालने से श्वसन क्रिया में लाभ होता है।

9. **सूक्ष्म अंग व्यायाम–** शरीर के प्रत्येक अंग, उपांग एवं जोड़ों को जितना संभव हो आगे-पीछे, दांये-बांये, ऊपर-नीचे घुमाने, खींचने, दबाने, सिकोड़ने, फैलाने अथवा हथेली से मसाज करने से संबंधित मांसपेशियों एवं जोड़ों में जमा विजातीय तत्त्व दूर होने से रक्त परिभ्रमण नियमित होने लगता है।

10. **सूर्योदय दर्शन–** सूर्योदय के समय वायुमण्डल में अदृश्य परा बैंगनी किरणों (Ultra Violet Rays) का विशेष प्रभाव होता है, जो विटामिन डी का सर्वोत्तम स्रोत होती हैं। ये किरणें रक्त में लाल और श्वेत कणों की वृद्धि करती हैं। श्वेत कण बढ़ने से शरीर में रोग प्रतिकारात्मक शक्ति बढ़ने लगती है। जिससे सभी आवश्यक तत्त्वों का पोषण होता है एवं हृदय रोग ठीक होने लगता है।

11. **एकाग्रता से रोगोपचार–** प्रात:काल जितना जल्दी उठ सकें, निद्रा त्यागकर शांत एकान्त खुले स्वच्छ वातावरण में आंखें एवं मुंह बंद कर हृदय पर मसाज करने से सारी चेतना वहाँ पर केन्द्रित होने लगती है, जिससे हृदय शक्तिशाली होने लगता है।

12. हृदय और छोटी आंत बियोल मेरेडियन में ऊर्जा के प्रवाह को संतुलित रखना चाहिए। जिससे हृदय की कार्य क्षमता बढ़ती है। शरीर के अन्य भागों में सहयोगी रोगों के लक्षण प्रकट होते हों, उसके अनुरूप उस भाग से प्रवाहित होने वाली मेरेडियन की संबंधित असंतुलित ऊर्जा का संतुलन करने से हृदय रोग के दुष्परिणामों से सहज बचा जा सकता है।

13. यदि हृदय और धमनियों में अवरोध आ गया हो तो, हृदय बियोल मेरेडियन की नमी ऊर्जा को बटन चुम्बक का दक्षिणी ध्रुव स्पर्श कर बढ़ानी चाहिए, जिससे रक्त पतला होने लगता है।

14. हृदय रोगियों का नाभि केन्द्र प्राय: विकार ग्रस्त हो जाता है। स्पन्दन केन्द्र में नहीं रहता। अत: नाभि केन्द्र को स्वस्थ रखना आवश्यक होता है। जब तक नाभि ठीक न हो जाए, नियमित नाभि का संतुलन करना चाहिए।

15. हृदय संबंधी रोगियों को अपने पैरों, गर्दन और मेरुदण्ड का संतुलन नित्य परीक्षण कर ठीक रखना चाहिए।

16. हृदय रोगियों को नियमित शुद्ध हवा में टहलना, विभिन्न प्राणायाम करना, पर्यावरण एवं प्रदूषण रहित वातावरण में रहना अति आवश्यक होता है। विशेषरूप से नाड़ी शोधन एवं कपालभांति प्राणायाम नियमित करना चाहिए।

17. हृदय पर कपिंग द्वारा कुछ समय सहनीय खिंचाव चिकित्सा करनी चाहिये।

18. हृदय रोगियों को चिंता, तनाव, भय, क्रोध जैसे आवेग पैदा करने वाली परिस्थितियों से यथा संभव बचना आवश्यक है। अत्यधिक खुशी और दु:ख के समाचार उन्हें तुरन्त नहीं बतलाने चाहिये। अत्यधिक भावुक एवं अधीर होने के कारण ऐसे समाचार सुनते ही कभी-कभी हृदयघात हो सकता है। इस हेतु नियमित संयमित जीवनशैली, आत्म-चिंतन, स्वाध्याय, ध्यान, सद्साहित्य का अध्ययन, प्रेरणात्मक भजनों का गायन एवं श्रवण, सकारात्मक सोच, सप्ताह में एक उपवास करना चाहिए। तुरन्त प्रतिक्रिया करने से यथा संभव बचना चाहिए।

19. हृदय रोगियों को अपान वायु मुद्रा एवं नमस्कार मुद्रा का अधिक से अधिक अभ्यास करना चाहिए।

20. हृदय रोग का वाणी से सीधा संबंध होता है। अत: कम बोलना, मौन रखना हृदय रोगियों के लिए बहुत आवश्यक है।

हृदय रोग का दौरा पड़ने पर क्या करें ?

हृदय रोग के कारण अचानक हृदय की धड़कन बंद हो जाये तो प्रारम्भिक चन्द मिनटों की सजगता से किया गया उपचार रोगी का जीवन बचा सकता है। सर्व प्रथम रोगी का मुँह खोलकर जीभ को खींचकर सीधा करें। फिर मुख पर हलका कपड़ा रख अपने मुँह को रोगी के मुँह से हाथ के सहारे सटा दें और मुँह में श्वास भरकर जोर से फूंकें। साथ ही दूसरे व्यक्ति से रोगी के सीने पर दोनों हाथों से दबाव देकर कृत्रिम श्वास हेतु पम्पिंग करें तथा दोनों हथेलियाँ एवं पगथलियाँ जो ठण्डी हो जाती हैं उन पर तेज गति से मसाज करें। यह प्रक्रिया तब तक करें जब तक रोगी की श्वसन क्रिया पुन: प्रारम्भ न हो जाए।

इस प्रक्रिया से हृदय मेरेडियन में प्राण ऊर्जा का प्रवाह नियमित होने लगता है और रोगी की श्वसन क्रिया यानी हृदय का धड़कना प्रारम्भ हो जाता है। उसके पश्चात् रोगी को चन्द दिनों तक पूर्ण आराम और मौन में रहकर आवश्यक उपचार करने से भविष्य में हृदय रोग होने की संभावना कम हो जाती है।

यदि हृदय रोगी उपर्युक्त बातों का पालन कर अनावश्यक कार्यों एवं चिन्तन में ऊर्जा का अपव्यय न करें, खाने, पीने व वाणी का संयम रखें, वाणी का प्रयोग कम से कम करें, अधिक समय मौन में रहें, तनाव, चिन्ता, भय दूर करने वाले सद्-साहित्य का अध्ययन करें, प्रेरणात्मक भजनों अथवा गीतों का श्रवण या गायन करें तो, हृदय रोग तुरन्त ठीक हो सकता है। हृदय रोगी बिना शल्य चिकित्सा स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं। अत: हम

दवाओं और शल्य चिकित्सा द्वारा जीवन भर परावलम्बी जीवन जीएं अथवा प्रभावशाली स्वावलम्बी जीवन जीएं, यह हमारे स्वयं के विवेक पर निर्भर करता है। विस्तृत एवं अधिक जानकारी हेतु लेखक द्वारा लिखित पुस्तक ''आरोग्य आपका'' का अध्ययन करें, जो **Website** पर उपलब्ध है।

-चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003 (राज.)

फोनः 0291-2621454, 94141-34606

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com,

Website: www.chordiahealthzone.com, www.chordiahealthzone.in

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

जिनवाणी के इस अंक में प्रकाशित 'स्वास्थ्य-विज्ञान' स्तम्भ पर कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं, आप इनका उत्तर 15 अक्टूबर 2013 तक श्री चंचलमल जी चोरडिया के उपर्युक्त पते पर अपने फोन नं., ई-मेल एवं पते सहित सीधे प्रेषित कर सकते हैं। इस प्रतियोगिता में किसी भी वय का व्यक्ति भाग ले सकता है। सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ताओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के अन्तर्गत 1000/-, 750/- एवं 500/- की राशि प्रेषित की जाएगी।

1. हृदय का एक चित्र बनाकर उसके भागों के नामांकन कीजिए एवं कार्यप्रणाली लिखिए।
2. उच्च रक्तचाप और निम्न रक्तचाप किसे कहते हैं?
3. हृदय-रोग के कोई पाँच कारण लिखिए।
4. हृदय-रोग से मुक्त रहने के लिए कैसी जीवन शैली होनी चाहिए?
5. घर में अचानक किसी को हार्ट-अटैक आ गया, तो आप तुरन्त कौन-कौनसे इलाज करेंगे?

स्वास्थ्य-आलेख प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का परिणाम

जिनवाणी के जुलाई 2013 के अंक में 'स्वास्थ्य-विज्ञान स्तम्भ' के अंतर्गत 'बिना दवा मधुमेह का प्रभावशाली उपचार' के प्रश्नों के उत्तर 55 प्रतियोगियों से प्राप्त हुए। उनमें से निम्नांकित तीन प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया जा रहा है-

पुरस्कार एवं राशि-	**नाम**
प्रथम पुरस्कार (1100/-रु.)	Jenitha Vickle Mehta-Beawar
द्वितीय पुरस्कार (750/-रु.)	श्री लक्ष्मीचन्द जी जैन-छोटी कसरावद
तृतीय पुरस्कार (500/-रु.)	श्रीमती शान्ता जी सुराणा-जयपुर

अन्य प्रतियोगी अपने अंक मालूम करना चाहें तो चंचलमल चोरड़िया-94141-34606 (मो.) से सम्पर्क कर सकते हैं। प्रतियोगी अपना नाम व पूरा पता उत्तरपुस्तिका एवं लिफाफे पर अवश्य लिखें।

बाल-स्तम्भ

कर्मफल-भोग

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के व्यक्ति 15 अक्टूबर 2013 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003(राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

वसुमती नगरी का वणिक् धनमित्र एक छोटी-सी दुकान करके अपनी आजीविका चलाता था। उसकी दुकान पर प्रायः भोले-भाले ग्रामीण स्त्री-पुरुष सौदा लेने आते थे। एक दिन एक भोली-भाली ग्वालिन धनमित्र की दुकान पर आयी और उसके हाथ में दो रुपये देते हुए कहा-"मुझे दो रुपये का कपास दे दीजिए।" धनमित्र ने दो रुपये लेकर उसे एक रुपये का कपास दो बार तौलकर दे दिया। भोली-भाली ग्वालिन धनमित्र वणिक् की इस चालाकी को समझ न सकी। उसने समझा कि 'बनिये ने कपास दो बार तौला है, इसलिए मुझे दो रुपये का ही कपास दिया है।" वह कपास लेकर घर चली आयी।

उसके चले जाने पर वणिक् ने सोचा- 'आज का दिन मेरे लिए बहुत ही भाग्योदय का है कि मुझे मुफ्त का एक रुपया मिला है। अतः आज मैं इस रुपये का उत्तम भोजन बनवाकर उपभोग करूँगा।' उसने उस एक रुपये से घी, शक्कर आदि सामग्री लेकर अपने घर भेजी और अपनी पत्नी को कहलाया कि- "आज इस सामग्री से घेवर बनाना।" पत्नी ने घेवर तैयार कर दिये। इतने में उसका दामाद अपने मित्रों के साथ किसी कार्यवश उसके यहाँ आ गया। वणिक्-पत्नी ने अपने दामाद तथा उसके मित्रों की थाली में घेवर परोस दिये। दामाद और उसके मित्र घेवर का भोजन करके तुरन्त वहाँ से चले गये।

यथासमय धनमित्र वणिक् अपने घर भोजन के लिए आया। वह रसोईघर में भोजन की थाली पर बैठा तो पत्नी ने उसकी थाली में प्रतिदिन की तरह साधारण भोजन परोस दिया। यह देखकर वणिक् ने पूछा- "क्या आज घेवर नहीं बनाए?" उसकी पत्नी ने कहा- "बनाये तो थे, किन्तु दामाद अपने इष्ट मित्रों के साथ आ गये थे, उन्हें तत्काल जाना था,

इसलिए मैंने उनकी थाली में सभी घेवर परोस दिये थे।'' यह सुनकर धनमित्र ने सोचा- ''अरे! व्यर्थ ही मैंने उस ग्वालिन को ठगा। मुझे तो उसका कुछ भी लाभ नहीं हुआ। मैंने तो दूसरों के लिए यह पापकर्म किया, किन्तु इस वंचन के पाप का फल तो मुझे ही भोगना पड़ेगा।'' उसके चिन्तन की धारा आगे बढ़ी- ''ओ हो! मैं कितना मूर्ख हूँ कि मैंने यह सोचकर वंचन का पाप किया था कि चलो, इस मुफ्त में आये हुए रुपये का माल उड़ाऊँगा। परन्तु मुझे तो कुछ भी हाथ न लगा, सिर्फ पाप ही मेरे सिर चढ़ा, जिसका फल उदयकाल में मुझे भोगना पड़ेगा, उसमें दूसरा कोई भी हिस्सेदार नहीं होगा। संसार में वे लोग मूढ़ हैं, जो स्त्री, पुत्र आदि के निमित्त पापकर्म कमाते रहते हैं।''

यों चिन्तन करता-करता वणिक् धनमित्र घर से बाहर निकल गया। ग्रीष्मऋतु का समय था, मध्याह्नकाल था। बहुत तेज धूप पड़ रही थी। वह शरीर चिन्ता से निवृत्त हुआ और गर्मी से घबराकर वहीं एक वृक्ष की ठंडी छाया में विश्राम पाने के लिए बैठ गया। इसी समय एक मुनि वहाँ से होकर जा रहे थे तो वणिक् ने उनसे कहा- ''मुनिवर! थोड़ी देर इस वृक्ष की छाया में बैठकर विश्राम ले लीजिए।'' मुनि ने कहा-''मुझे अपने एक आवश्यक कार्य के लिए शीघ्र जाना है, इसलिए मैं विश्राम नहीं लूँगा।'' मुनिराज के वचन सुनकर वणिक् ने पूछा- ''मुनिवर! दुनिया में क्या कोई व्यक्ति पर-कार्य के लिए भी जाता है। (अर्थात् उद्यम करता है)?'' ज्ञानी मुनिराज ने कहा- ''हाँ, संसार में अनेक जीव ऐसे हैं, जो पर के निमित्त से नाना दुःख उठाते हैं। तुम भी अपने स्वजनों के लिए जो दुःख उठा रहे हो, वह सब पर का ही तो कार्य है।''

मुनिराज के ये मार्मिक वचन सुनकर धनमित्र वणिक् के हृदय की आँखें खुल गयी। वह प्रतिबुद्ध हो गया।

उसने मुनिवर से कहा-''पूज्यवर! आप कहाँ ठहरे हैं?'' मुनि ने कहा- ''यहीं निकटवर्ती उद्यान में।'' यह कहकर मुनिराज आवश्यक कार्य से निवृत्त होकर वापस लौटे तब वणिक् उनके साथ-साथ उद्यान में पहुँचा। वहाँ मुनिराज से उसने धर्मोपदेश सुना तो उसका अन्तःकरण वैराग्य से परिपूर्ण हो गया। उसने मुनिराज से कहा- ''गुरुदेव! मुझे अब संसार से, स्वजन-धन एवं भोग साधनों से विरक्ति हो गयी। मुझे आपके चरणों में दीक्षित होना है। अतः मैं अपने स्वजनों की अनुमति लेकर आता हूँ, तब तक आप यहीं विराजे रहें।''

घर आकर धनमित्र वणिक् ने अपनी पत्नी और स्वजनों से कहा- ''मुझे यहाँ इस दुकान से बहुत ही थोड़ा लाभ हो रहा है, अतः परदेश जाकर कोई बड़ा व्यापार करना चाहता हूँ ताकि मुझे विशेष लाभ हो। यहाँ मुझे दो सार्थवाह मिले हैं। उनमें से एक सार्थवाह

तो ऐसा है, जो हमें मूल पूँजी देता है, और यथेच्छ स्थान पर पहुँचा देता है तथा उस पूँजी से व्यापार करने पर जो लाभ होता है, उसमें से कुछ भी नहीं लेता। जबकि दूसरा सार्थवाह ऐसा है, जो हमें मूल पूँजी नहीं देता तथा साथ में रहकर समस्त उपार्जित द्रव्य को वही हड़प जाना चाहता है। अब आप सब बताएँ कि मुझे इन दोनों सार्थवाहों में से किस सार्थवाह के साथ जाना चाहिए?" सबने एक स्वर में कहा-"इसमें पूछने की क्या बात है? आपका पहले सार्थवाह के साथ जाना ही उचित है।"

इस पर वह वणिक् समस्त स्वजनों को लेकर उस उद्यान में आया, जहाँ मुनि विराजमान थे। उसने मुनि को बताकर स्वजनों से कहा- " देखो, ये मुनिराज मुक्तिपुरी के सार्थवाह हैं। ये अपना धर्मरूप मूलधन देकर मुमुक्षु मनुष्यों से धर्म का व्यापार करवाते हैं और मुक्तिपुरी को ले जाते हैं। ये उपार्जित धर्मधन में से कुछ भी हिस्सा नहीं माँगते, न लेते हैं। अतः मैं इन्हीं के साथ सिद्धपुरी जाना चाहता हूँ। दूसरे सार्थवाह- ये स्त्री-पुत्रादि स्वजन हैं जो पूर्वोपार्जित धर्मधन का भी हरण कर लेते हैं तथा अपना कुछ भी नहीं देते। आप सबने मुझे पहले सार्थवाह के साथ जाने की अनुमति दे दी है। अतः मैं आप सबके कथनानुसार अपने स्वजनों के मोह-ममत्व को त्यागकर इन मुनिरूप मुक्तिपुरी के सार्थवाह का आश्रय लेता हूँ।"

इस प्रकार धनमित्र वणिक् ने स्वजनों की अनुमति पाकर उक्त मुनिवर से मुनिधर्म की दीक्षा ग्रहण करके स्व-पर कल्याण किया।

जिस प्रकार धनमित्र वणिक् ने बन्धु-बान्धवों के मोह का परित्याग कर मुनिधर्म अंगीकार करके दोनों लोकों में स्वाधीन आत्मसुख प्राप्त किया, उसी प्रकार प्रत्येक विवेकशील व्यक्ति को स्वजन-मोह परित्याग करके शुद्ध-धर्म की आराधना करके परमसुख को प्राप्त करना चाहिए।

- उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 4, गाथा-4 के कथा भाग
(सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल) से संकलित

प्रश्नः-

1. धनमित्र ने ग्वालिन को किस प्रकार ठगा?
2. क्या अनीति से पैसा कमाना भाग्योदय है?
3. धनमित्र के मन में वैराग्य आने का क्या कारण बना?
4. क्या दूसरों के निमित्त से पाप करना उचित है?
5. सच्चा सार्थवाह किसे कहा गया है एवं क्यों?
6. इस कथा को कोई अन्य शीर्षक दीजिए।

(बाल-स्तम्भ जुलाई-2013 का परिणाम पृष्ठ संख्या 37 पर देखें।)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

जैन चरणानुयोग- साध्वी डॉ. विजयश्री 'आर्या', ***प्रकाशक***- श्री दिवाकर प्रकाशन, ए-7, अवागढ़ हाउस, अंजना सिनेमा के सामने, एम.जी.रोड़, आगरा-282002, फोन-0562-2851165 ***पृष्ठ***- 208, ***मूल्य***-250 रुपये मात्र, सन् 2012

जैन धर्म आचरण प्रधान धर्म है। यह मात्र ज्ञान से मोक्ष नहीं मानता, इसमें ज्ञान के साथ क्रिया अथवा आचार को भी आवश्यक माना गया है। धर्म के दो प्रकार स्वीकार किए गए हैं- श्रुतधर्म और चारित्र धर्म। चारित्र जब श्रुतपूर्वक या सम्यग्ज्ञान पूर्वक होता है, तभी वह मोक्ष का उपाय बनता है। विदुषी साध्वी डॉ. विजयश्री आर्या ने जैनागमों तथा उपाध्यायप्रवर मुनि कन्हैयालाल जी कमल द्वारा संकलित 'चरणानुयोग' को आधार बनाकर हिन्दी में 'जैन चरणानुयोग' का लेखन किया है, जो साधुओं, श्रावक-श्राविकाओं एवं जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी है। जैन परम्परा में आचार के पाँच प्रकार निरूपित हैं- ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार एवं वीर्याचार। ज्ञान प्राप्ति के लिए किस प्रकार का आचार आवश्यक है, उसका निरूपण ज्ञानाचार में हुआ है। सम्यग्दर्शन की प्राप्ति एवं उसकी संरक्षा के लिए किस प्रकार का आचार अपेक्षित है, उसका वर्णन दर्शनाचार में हुआ है। सामायिकादि पंचविध चारित्र में चरण बढ़ाने के लिए किस प्रकार का आचरण होना चाहिए उसका कथन चारित्राचार में हुआ है। तपाचार में तप के बारह भेदों के आचरण को समझाया गया है। वीर्याचार के अन्तर्गत पंचविध व्यवहार, उपसर्ग भेद, सम्यक्त्व पराक्रम के 73 बोल आदि का प्रतिपादन है। पंचविध आचार से सम्बद्ध सभी आवश्यक जानकारी इस ग्रन्थ में उपलब्ध है।

अर्थशास्त्र-अपरनाम-राजसिद्धान्त-आचार्य कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र एवं उसके द्वितीय अधिकरण पर नीतिनिर्णिति नामक टीका, ***प्रधान-सम्पादक***-आचार्य जिनविजयमुनि, ***प्रकाशक***- (1) प्राकृत भारती अकादमी, 13-ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.), फोन-0141-2524827 (2) श्रीमती अंगूरी सिंघी, 18 कापसहेड़ा एस्टेट, नई दिल्ली-110037, ***पृष्ठ***- 16+72, ***मूल्य***-300 रुपये मात्र, सन् 2011 (पुनर्मुद्रण)

विष्णुगुप्त चाणक्य का अर्थशास्त्र राजनीति का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। कौटिल्य अथवा कौटल्य उनका गोत्र है। उनके इस गोत्र के नाम पर इस ग्रन्थ का नाम कौटिलीय अथवा कौटलीय अर्थशास्त्र हो गया। यद्यपि इस अर्थशास्त्र के अब हिन्दी, अंग्रेजी आदि भाषाओं में संस्करण उपलब्ध हैं, किन्तु प्रस्तुत संस्करण का अपना वैशिष्ट्य है। यह सिंघी जैन ग्रन्थमाला

में भारतीय विद्या भवन, मुम्बई से सन् 1959 में प्रकाशित संस्करण का पुनर्मुद्रण है। मूलतः अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण एवं लगभग 150 प्रकरण हैं, किन्तु प्रस्तुत प्रति में मात्र 2 अधिकरण हैं, जिनमें भी दूसरा अधिकरण अत्यन्त अपूर्ण है। किन्तु ये दोनों अधिकरण किसी अज्ञातकर्ता के टिप्पनकों के साथ है। इस कृति की दूसरी विशेषता यह है कि इसके दूसरे अधिकरण पर योग्घम उर्फ मुग्धविलास कृत नीतिनिर्णीति नामक टीका प्रकाशित है, जो अन्यत्र दुर्लभ है। ग्रन्थ पर दामोदर धर्मानन्द कोसम्बी ने अंग्रेजी में उपयोगी प्रस्तावना लिखी है। प्राकृत भारती के पुनर्मुद्रण का कार्य सराहनीय है।

दार्शनिक समन्वय की जैनदृष्टि (नयवाद), डॉ. अनेकान्तकुमार जैन, ***प्रकाशक***-प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली, बासोकुण्ड-844128, मुजफ्फरपुर (बिहार), ***पृष्ठ***- 26+214, ***मूल्य***-200 रुपये मात्र, सन् 2011

नयवाद जैन दर्शन का विशिष्ट सिद्धान्त है, जो ज्ञान की प्रक्रिया एवं कथन शैली दोनों में उपयोगी है। ज्ञाता के अभिप्राय एवं वक्ता के अभिप्राय को नय कहा जाता है। जितने वचन पथ हो सकते हैं उतने ही नयमार्ग हो सकते हैं, फिर भी जैन दर्शन में प्रमुखतः द्रव्यार्थिक एवं पर्यायार्थिक नय का प्रतिपादन हुआ है। कहीं नय को शब्दनय एवं अर्थनय के रूप में भी विभक्त किया जाता है। नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र, शब्द, समभिरूढ तथा एवम्भूत- ये सात नय प्रसिद्ध हैं। डॉ. अनेकान्त कुमार जैन ने प्रस्तुत शोधकृति के आठ अध्यायों में नय सिद्धान्त का व्यापक विवेचन किया है। प्रथम अध्याय में नयों के उद्भव एवं विकास को आगम साहित्य के आधार पर प्रतिपादित किया गया है जिनमें प्रमुख रूप से भगवतीसूत्र, कसायपाहुड, षट्खण्डागम, अनुयोगद्वार सूत्र एवं आचार्य कुन्दकुन्द के ग्रन्थों का समावेश हुआ है। द्वितीय अध्याय में दार्शनिक ग्रन्थों में हुए नय-विकास का स्वरूप प्रस्तुत किया गया है, जिसमें उमास्वामी से लेकर उपाध्याय यशोविजय के ग्रन्थों को आधार बनाया गया है। तृतीय, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ एवं सप्तम अध्यायों में क्रमशः नैगमनय, संग्रहनय, व्यवहारनय, ऋजुसूत्रनय तथा शब्दनय का निरूपण करने के साथ विभिन्न भारतीय दार्शनिक मान्यताओं का इन नयों के द्वारा समन्वयात्मक समीक्षण किया गया है। डॉ. जैन ने न्याय-वैशेषिक दर्शनों को नैगमनयाभास में, वेदान्त तथा सांख्यदर्शन को संग्रह नयाभास में, चार्वाक दर्शन को व्यवहार नयाभास में, बौद्धदर्शन को ऋजुसूत्र नयाभास में तथा व्याकरण दर्शन को शब्द नयाभास में रखकर जैनदृष्टि से उनकी समीक्षा की है। अष्टम अध्याय उपसंहार के रूप में हैं। वस्तुतः नय सिद्धान्त जैन परम्परा का मौलिक अवदान है, जो अन्य किसी दर्शन में प्राप्त नहीं है तथा प्रमाणमीमांसा की अपेक्षा नय मीमांसा प्राचीन है। डॉ. जैन का कथन है कि "यदि जैनेतर आचार्य भी नयों की मीमांसा में भाग लेते तो भारतीय दर्शन का स्वरूप और अधिक निखर कर सामने आता।" पुस्तक ख्यात विद्वान् डॉ. दयानन्द भार्गव की भूमिका से सुशोभित है।

समाचार-विविधा

सवाईमाधोपुर चातुर्मास बन रहा दीप्तिमान

225 तेले, 109 अठाई एवं 2 मासखमण तप की आराधना

ज्ञानाराधन एवं संवरसाधना में उल्लेखनीय उत्साह

आगममर्मज्ञ, जिनशासन गौरव, जन-जन की आस्था के केन्द्र **परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा.**, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 7 तथा **व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा.** आदि ठाणा 10 के पावन सान्निध्य में सवाईमाधोपुर चातुर्मास ज्ञान, भक्ति, तप एवं संवर-साधना के रंग में निखरता जा रहा है।

पोरवाल क्षेत्र पर अनन्त उपकार कर भक्ति से जोड़ने वाले अखण्ड बाल ब्रह्मचारी, इतिहास मार्तण्ड, सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. तथा देश-विदेश से आये भक्तों को पोरवालों द्वारा रात्रि-भोजन त्याग वाली प्रथा से परिचय दिलाकर पोरवाल क्षेत्र को महिमा मण्डित करने वाले आगम मर्मज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की असीम अनुकम्पा से आज सवाईमाधोपुर को भक्ति वाले क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। इस सवाईमाधोपुर की श्रद्धाभक्ति को प्रत्यक्ष से दृष्टिगोचर करने अब तक चेन्नई, कोयम्बतूर, वेल्लूर, बैंगलोर, मैसूर, पल्लीपट, ईरोड, हैदराबाद, औरंगाबाद, अमरावती, माण्डल, जबलपुर, कटंगी, कलकत्ता, दिल्ली, इन्दौर, भोपाल, सिरपुर, चांगोटोला, अहमदाबाद आदि स्थानों से भक्तजन पधारे हैं। अभी तो चातुर्मास काल का प्रथम चरण (प्रथम मास) ही पूरा हुआ है। सवाईमाधोपुर संघ अहोभाव से आगत दर्शनार्थी बन्धुओं की सेवा में हर समय समुद्यत है।

सवाईमाधोपुर में पदार्पण समय से ही इधर महावीर भवन में परमाराध्य पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पावन मुखारविन्द से वीतरागमय वाणी गुंजायमान होकर बरस रही है। उधर प्रकृति भी विशेष मेहरबान होकर वर्षा का वर्षण कर रही है और श्रद्धालु भक्तजन इस प्रशान्तमय वातावरण में तप-साधना में विशेष पुरुषार्थ कर रहे हैं यानी तप की वर्षा हो रही है, तपस्या की सुन्दर झड़ी लगी हुई है। त्रिवेणी का अद्भुत संयोग बना हुआ है। जहाँ पहले तेले व पचौले तक की तपस्या ही अधिक होती थी, अठाई की तपस्या भी मुश्किल से हो पाती थी, आज की स्थिति उससे सर्वथा भिन्न है। 26 अगस्त तक 225 से

अधिक तेले एवं 109 अठाई तप सम्पन्न हो चुके हैं। 4 चौले, 13 पचौले, 21 नौ , 22 ग्यारह एवं 2 मासक्षपण तप सम्पन्न हो चुके हैं। 20 वर्षीतप, 19 दो माह के एकान्तर, 8 एकाशन के मासखमण, 1 आयम्बिल का एकान्तर, 1 एकाशन का एकान्तर तप चल रहा है। प्रवचन सभा में जो प्रत्याख्यान होते हैं, उनके नाम तो निगाह में आ जाते हैं पर कई भाई/बहिन पूज्य आचार्य भगवंत के पावन मुखारविन्द से ऊपर प्रत्याख्यान लेकर सीधे घर चले जाते हैं, उनके द्वारा की जा रही तपस्या का पता तक नहीं चल पाता। तपाराधना की शृंखला में समूचे नगरपालिका क्षेत्र का महनीय योगदान रहा है एवं रहेगा, ऐसी अपेक्षा है। समीपस्थ **कुस्तला गाँव** से रोजाना श्रावक-श्राविका पूज्य गुरुदेव की सेवा में प्रवचन श्रवण के लक्ष्य से पधार रहे हैं और तप-त्याग में पूरा सहयोग कर चातुर्मास को दीप्तिमान करने में सुन्दर सहकार कर रहे हैं। कुश्तला से पन्द्रह की एक तपस्या, नौ की एक तथा तेरह अठाइयों की तपस्या का तप रूपी अर्घ्य पूज्यप्रवर के पावन चरणों में समर्पित हुआ है, जो उल्लेखनीय है। दयाव्रत की शृंखला को अनवरत बनाये रखने में **हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी** वालों की अच्छी भूमिका है।

रात्रि में अच्छी संख्या में संवर-आराधना के साथ उभयकालीन प्रतिक्रमण हो रहे हैं। उपवास-तपस्या वाले पौषध का लक्ष्य रखते हैं। रविवारीय अवकाश के दिन उपस्थिति बहुत अच्छी रहा करती है। **अलीगढ़-रामपुरा** संघ हर रविवार को प्रवचनामृत का बराबर लाभ ले रहा है। अन्य समीपस्थ क्षेत्रों व नगरपालिका क्षेत्र से भी रविवार के दिन प्रवचन समय भक्तों के आने का लक्ष्य रहता है। परम श्रद्धेय पूज्य आचार्य भगवंत पर्व तिथियों, संघों के आगमन व रविवार के दिन प्रवचानमृत फरमा रहे हैं। शेष दिनों में प्रत्याख्यान करवाने व मांगलिक प्रदान करने पधारते हैं। पूर्व विधायक श्री हंसराज जी शर्मा प्रवचन-श्रवण का नित्य लाभ ले रहे हैं। इन दिनों प्रातःकाल प्रायः प्रतिदिन अच्छी वर्षा होने का प्रसंग रहा, पर भक्तों की चातुर्मास में निम्नानुसार गतिविधियाँ प्रवाहमान हैं-

प्रातः प्रार्थना- श्रद्धेय श्री आशीषमुनि जी म.सा.। प्रार्थना के पश्चात् **सामायिक साधना पर युवाओं के लिए विशेष कक्षा** श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.। **प्रवचन प्रातः 8.30 से-** पूज्य आचार्य भगवंत, महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा. एवं महासती मण्डल फरमाते हैं। **सीखने-सिखाने का कार्यक्रम 2 से 3 बजे तक** रहता है, जिसमें सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. एवं महासती मण्डल ज्ञानार्जन कराते हैं। **3 से 4 बजे तक** प्रज्ञापनासूत्र की **वाचना** पूज्य आचार्य भगवंत एवं महान्

अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. फरमाते हैं। **ज्ञानचर्चा**- देवसिय प्रतिक्रमण के पश्चात् रात्रि 10 बजे तक चलती है।

विशेष- (1) बालकों का धार्मिक संस्कार-शिविर हर रविवार को आयोजित किया जा रहा है। (2) समूचे नगरपालिका क्षेत्र की श्राविका मण्डल की बैठक महीने में एक बार होती है। मण्डल की गत बैठक में लगभग 85 श्राविकाएँ थीं। (3) 2 से 6 अगस्त तक 2 पचरंगी की आराधना की गई। महापुरुषों की पुण्य तिथि पर पंचरंगी करवाने की प्रेरणा महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. की रही। (4) 10 व 11 अगस्त को स्वाध्यायियों की गुणवत्ता में वर्धापन आये, इस भावना से दो दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में आये संभागियों को डॉ. श्री धर्मचन्द जी जैन व श्री राजेश जी लुंकड़-इरोड के अनुभवों का लाभ मिला।

दर्शन-वन्दन- (1) वीर परिवार से जोधपुर के श्री धनपतचन्द जी सेठिया, श्री अमरचन्दजी लोढ़ा, श्री इन्दरचन्द जी गाँधी, चेन्नई से श्री पवन जी बोहरा, श्री बुधमल जी बाघमार, श्री आर. नरेन्द्रजी कांकरिया, इन्दौर से श्री अभय जी चौहान, हैदराबाद से श्री सुकनराज जी गुगलिया, दिल्ली से श्री प्रेमचन्द जी गाँधी, माण्डल से श्री विजयराज जी खींवसरा डॉ विमलचंद जी जैन, अलीगढ़-रामपुरा से श्री बंशीलाल जी जैन ने दर्शन-वन्दन का लाभ लिया।

(2) संघ-समूह में गंगापुर संघ, देवली संघ, निमाज संघ, सिरपुर संघ, हिण्डौन संघ उपस्थित हुए। जयपुर से श्री विनय जी बम्ब व श्री राजेन्द्र जी पटवा, चेन्नई से श्री धर्मचंद जी, फूटरमलजी अपने समस्त परिवार जनों के साथ गुरु चरणों में पधारे एवं पावन सन्निधि का लाभ लिया। छोटे समूह एवं अपने हिसाब से परिवार के साथ आगतों के आने का क्रम बना हुआ है।

(3) पदाधिकारी एवं अन्य- संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना, निवर्तमान अध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, शासन सेवा समिति के सह संयोजक श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, चेन्नई से श्री धर्मेशजी लोढ़ा, श्री झूमरमल जी बाघमार, श्री प्रेमचन्द जी कवाड़, श्री महेन्द्र जी कांकरिया (संघाध्यक्ष), श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल, श्री गौतम जी बाघमार-क्षेत्रीय प्रधान, श्री हरीश जी कवाड़ (सह संयोजक-छात्रवृत्ति योजना), श्री सूरज जी भण्डारी, श्री मांगीलाल जी चोरड़िया, श्री देवराज जी नाहर, बैंगलोर से श्री यशवन्तराज जी सांखला (संघाध्यक्ष) श्री गौतम जी भण्डारी, श्री शांतिलाल जी डूंगरवाल, श्री हुक्मीचन्द जी डोसी, श्री निर्मल जी बम्ब, मैसूर से- श्री रिखब जी धोका, श्री सुभाष जी धोका, जयपुर से- श्री

प्रतापसिंह जी लोढ़ा, श्री विनोद जी लोढ़ा, श्री प्रमोद जी लोढ़ा, श्री प्रेमचन्द जी चपलोत, श्री विमलचन्द जी डागा, श्री विमल जी सुराणा, श्री गौतम जी सुराणा, श्री तेजराज जी भण्डारी, अहमदाबाद से- श्री कन्हैयालाल जी हिरण, नवसारी से- श्री ओमप्रकाश जी जैन, मुम्बई से- श्री अनिल जी बावेल, श्री प्रेमचन्द जी जैन, श्री महावीर जी जैन, बीकानेर से- श्री इन्द्रमल जी सुराणा आदि प्रमुख श्रावकों ने लाभ लिया।

विगत 4 वर्षों से सवाईमाधोपुर वासी चातुर्मास पाने वालों की प्रतीक्षा सूची में थे। अहमदाबाद के पश्चात् पोरवाल क्षेत्र में सीधे पधारने की पुरजोर विनति की गई, पर पाली, जोधपुर, जयपुर जैसे बड़े क्षेत्रों को उपकृत कर, सवाईमाधोपुर वालों पर कृपा बरसाई। गुरु भगवन्त की इस महर से गुरुभक्त पुलकित हो धर्माराधना में रत हो गये। संघ के पदाधिकारी अठाई की लड़ी प्रारम्भ करने की योजना बना रहे थे। इधर भक्तों के द्वारा रोजाना विविध तपस्याओं के प्रत्याख्यान का दृश्य अपने आप में अनुपम रहा। एकाशन, उपवास, बेला, तेला की तपस्या के प्रत्याख्यान अच्छी संख्या में होते गए। तेले से ऊपर चौला, पचौला, छः, सात, आठ, नौ तक के प्रत्याख्यान भी रोजाना होने लगे। यह उत्साह निरन्तर बढ़ता ही गया और पन्द्रह तक की कुछ तपस्या के साथ **बहिन श्रीमती संतोषदेवी जी** धर्मपत्नी श्री सुबाहूकुमार जी जैन एवं **बहिन श्रीमती दिलखुश जी जैन** धर्मपत्नी श्री धर्मचन्द जी जैन ने **मासक्षपणोपरान्त 31 दिवसीय तपस्या की** आराधना कर उग्र तप रूपी अर्घ्य अर्पित कर चातुर्मास की दीप्ति को बढ़ाते हुए स्वयं की भी **'तवसा परिसुज्झइ'** वाली भावना को सार्थक किया।

दो मासखमण तप का पूर- उपर्युक्त दोनों तपस्विनी बहिनों के 31 दिवसीय मासक्षपण का प्रत्याख्यान 20 अगस्त 2013 को पूज्य आचार्य भगवंत के पावन मुखारविन्द से सम्पन्न हुआ। तप की अनुमोदना करने अनेक स्थानों से भाई-बहिन पधारे। इस प्रसंग पर श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि- "प्रभु की वाणी पर गौर करो, बाकी सब इग्नोर करो। करोगे तपस्या : मिटेगी समस्या।" महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने फरमाया- "कर्मों का कचरा समाप्त करना है तो तपाराधना इसका प्रमुख साधन है। तप का दूषण क्रोध है तो तप का भूषण क्षमा है। जो तप करने में समर्थ नहीं हैं वे क्षमा धारण कर लें, उनकी यह प्रवृत्ति मासखमण से बढ़कर होगी।"

पूज्य आचार्य भगवंत ने फरमाया- मोक्ष मार्ग के चार चरण हैं- उनमें अन्तिम चरण तप है। तप संचित कर्मों को शुद्ध करने का काम करता है। यदि खारा से मीठा, काला से गोरा, जहर से अमृत, नर से नारायण बनना है तो तप करना सीखें। सागर का खारा जल भी तपकर घर-घर की प्यास बुझाता है। तपने वाला कोयला गोरा हो जाता है। जहरीले

संखिया को तपाकर रसायनशास्त्री पौष्टिक मकरध्वज वटी बनाते हैं। तप करने वालों ने भूखे रहकर जो आज मिलाया है, वे खाने वाले नहीं मिला पायेंगे। गरीब की पीड़ा तप करने वाला जानता है। उसके द्वार से मांगने वाला आस्था वाला ही तप करता है। यदि आप अन्न से लड़ने में समर्थ नहीं हैं तो मैं आपको सरल मार्ग बता रहा हूँ- गम खाना सीख जाओ। इसमें आपका कुछ भी लगने वाला नहीं है।

इस पर धर्मसभा में लगभग 250 से अधिक भाई-बहिनों ने गम खाने के अर्थात् क्रोध नहीं करने के नियम पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से किये। तप की अनुमोदना पर लगभग 75 एकासन, 110 उपवास व अन्य विविध तप के प्रत्याख्यान हुए।

धर्मसभा का संचालन संघमंत्री श्री पारसचन्दजी बोहरा कुशलतापूर्वक कर रहे हैं। आगतों का बहुमान मात्र शब्दों के द्वारा किये जाने की संघ की परम्परा सदैव से रही है। दीक्षार्थियों, तपस्वियों व ब्रह्मचर्य के खंध लेने वालों का ही बहुमान किया जाता है। सवाईमाधोपुर संघ आतिथ्य सत्कार में उत्साह एवं सद्भावों के साथ तत्पर है।

कोसाना चातुर्मास में धर्ममय वातावरण

शान्त-दान्त-गंभीर, पण्डितरत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 5 के चातुर्मास से कोसाना ग्राम के घर-घर में उत्सव जैसा माहौल बना हुआ है। कोई ज्ञान सीखने की होड़ में लगा है तो कोई तपस्या की साधना में, तो कोई सेवा कार्य में अग्रणी बना हुआ है। कोसाना निवासी श्रावक चेन्नई से आकर धर्माराधन का पूरा लाभ ले रहे हैं। तपस्या की दृष्टि से 3 मासखमण सम्पन्न हो चुके हैं। 15,11 दिवसीय अनेक तपों के साथ अठाइयाँ सम्पन्न हो चुकी हैं। इतना उत्साह बना हुआ है कि जो तपस्याएँ कर चुके हैं, वे फिर से तपस्या करने का संकल्प संजोएँ हुए हैं। तपस्वी परिवार वैभव सम्पन्न होते हुए भी किसी प्रकार के आडम्बर-प्रदर्शन एवं फिजूल खर्ची के आयोजन से दूर हैं। अधिकांशतः तप करने वालों ने आस्रव का त्याग रखते हुए पौषध सहित तपस्याएँ की हैं। जैन परिवारों के साथ जैनेतर समाज के लोग भी पहली बार तपस्याएँ कर अपने आप को धन्य अनुभव कर रहे हैं। जो लम्बी तपस्या करने में अक्षम अनुभव कर रहे हैं उनके लिए सर्वसुलभ नवकारसी आदि 10 प्रत्याख्यान 25 व्यक्तियों के द्वारा 10 दिन में सम्पन्न करवाने का क्रम सुचारु रूप से चल रहा है। जिसमें चार खन्दों का पालन, अधिकतम सामायिक आराधन और संवर-साधना करना अनिवार्य है। 250 प्रत्याख्यानों का यह कार्यक्रम 10 दिनों के लिए बड़े उत्साह के साथ चल रहा है।

श्रावणी अमावस्या पर गुरुओं की पुण्यतिथियों पर दया की पंचरंगी का आयोजन हुआ। पूज्य उपाध्यायप्रवर ने श्री सागरमल जी म.सा. के विशिष्ट जीवन को रेखांकित करते

हुए फरमाया कि पूज्य श्री सागरमल जी म.सा. की विशेषता रही कि उन्होंने अपने गुरु के प्रति विनय, सेवा एवं समर्पण से गुरु के हृदय में स्थान बनाया और वे गुरु के विश्वासपात्र संत के रूप में प्रतिष्ठित हुए। मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने आचार्यश्री शोभाचन्द्र जी म.सा. के पुण्यदिवस पर उनकी विशेषताओं का वर्णन करते हुए फरमाया कि उनकी सेवा रत्नसंघ के इतिहास में एक उदाहरण बन गई।

प्रवचन के समय जैन-जैनेतर तथा दर्शनार्थियों की उपस्थिति से संख्या विशालता लिये रहती है। मध्याह्नकाल के पश्चात् जब आगम वाचनी होती है तो कई ज्ञानवर्धक बातें उभर कर आती हैं और जब जिज्ञासा समाधान का दौर चलता है तो हर किसी का दिल फिर से सुनने के लिए आतुर रहता है। यही कारण है कि आगम-वाचनी का दृश्य ही प्रवचन जैसा प्रतीत होता है। प्रतिक्रमण के समय जब अनेक युवा सम्मिलित होते हैं तो लगता है कि जिनशासन का भविष्य आने वाले समय में अधिक उज्ज्वल होगा।

रात्रिकालीन संवर-साधना में अनेक लोग लाभ ले रहे है। कुल मिलाकर कोसाना चातुर्मास संघ के लिए और आम जनता के लिए वरदान बनकर उभरा है। दर्शनार्थियों का आवागमन निरन्तर बना हुआ है। यहाँ पर चल रही धार्मिक गतिविधियों तथा आतिथ्य सेवा से सभी आगन्तुक अभिभूत रहते हैं।

मदनगंज-किशनगढ़- तत्त्वचिंतक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में मदनगंज-किशनगढ़ का चातुर्मास ज्ञानाराधन एवं धर्माराधन की दृष्टि से आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। यहाँ 9 से 19 अगस्त तक ध्यान-शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें 37 पूर्व ध्यान-साधकों ने ध्यान का अभ्यास किया तथा 4 धर्मसेवकों ने अपनी सेवा दी। प्रार्थना के पश्चात् प्रतिदिन श्री यशवन्तमुनिजी सामायिक सूत्र एवं प्रतिक्रमणसूत्र का विवेचन कर रहे हैं। तत्पश्चात् आधे घण्टे का ध्यान कराते हैं। प्रवचन तत्त्वचिंतक मुनि श्री समरादित्य कथा को आधार बनाकर फरमा रहे हैं। प्रत्येक रविवार को प्रातः 7.30 बजे युवकों की कक्षा होती है, जिसमें 150-200 की उपस्थिति रहती है। यहाँ तेले एवं एकाशन की लड़ी चल रही है। 6 अठाई तप हो चुके हैं। दिन में शास्त्रवाचना होती है। प्रवचन के पश्चात् 10.15 बजे मुनिश्री गुणस्थान के स्वरूप की विवेचना कर रहे हैं। प्रतिदिन रात्रि को संवर-आराधना होती है। श्री पूनमचन्द जी दुगड़ ने 17 की तपस्या के प्रत्याख्यान किए हैं। बैंगलोर निवासी श्री नवरतनजी भंसाली 2.45 बजे पच्चीस बोल का विवेचन करते हैं।

जोधपुर- साध्वीप्रमुखा, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में 2 से 6 अगस्त तक चार पंचरंगियों का आयोजन हुआ। तीन पंचरंगियाँ

बहनों ने तथा एक पंचरंगी भाइयों ने की। दो दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया है- 1. श्री नन्दकिशोर जी सोनी सपत्नीक, राजीव नगर, 2. श्री नेमराज जी-श्रीमती प्रेमलताजी भंसाली। श्री अरुणजी नेमराज जी भंसाली ने द्वितीय विवाह न करने का निर्णयकर आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया है। श्रीमती लीलाबाई धर्मपत्नी श्री भीमराज जी कवाड़ ने 31 दिवसीय मासखमण तप पूर्ण किया है। दया व्रत के दो मासक्षमण सम्पन्न हुए हैं। 25, 24, 21, 20, 15, 11, 9, 7,6,5 दिवसीय तपस्याओं के साथ 6 अठाई तप एवं 30 तेले पूर्ण हो चुके हैं। यहाँ पर 12 माह के शीलव्रत भी अनेक दम्पतियों ने स्वीकार किए हैं। वर्षीतप की साधना अनेक भाई-बहिन कर रहे हैं। एकाशन के तप भी चालू हैं। रविवारीय संस्कार शिविर आयोजित हो रहे हैं।

खेरली- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में धर्माराधना का ठाट लगा हुआ है। यहाँ पर अनेक शीलव्रत अंगीकार किये गये हैं- 1.श्री हरीशचन्द्र जी जैन-श्रीमती तारा जी जैन, 2. श्री रामदयाल जी जैन-श्रीमती माया जी जैन, 3. श्री जिनेशचन्द्र जी जैन-श्रीमती शकुन्तला जी जैन, 4. श्री कस्तूरचन्द जी जैन-श्रीमती रेशमादेवी जी जैन, 5. श्री राधेश्याम जी जैन-श्रीमती रामकली जी जैन, 6. श्री सुभाषचन्द जी जैन-श्रीमती चन्दाबाई जी जैन, 7. श्री धर्मचन्द जी जैन-श्रीमती तारादेवी जी जैन दांतिया वाले, 8. श्री बाबूलालजी जैन-श्रीमती पिस्तादेवी जी जैन, 9. श्री महावीर प्रसादजी जैन-श्रीमती विमलादेवी जी जैन, 10. श्री रोशनलाल जी जैन-श्रीमती पुष्पादेवी जी जैन। यहाँ एकाशन, बियासन, आयंबिल, उपवास व तेले की लड़ी चल रही है। इसके अतिरिक्त दो अठाई हो चुकी है। 190 एकाशन, 35 आयंबिल, 20 उपवास एवं 10 तेले की तपस्या हो चुकी है। अनेक बालक-बालिकाओं ने महासती जी की प्रेरणा से चार माह तक टी.वी. देखने का त्याग, रात्रिभोजन त्याग, जमीकंद का त्याग किया है। युवकों ने गुटखा एवं शराब के व्यसन का त्याग जीवन भर के लिए स्वीकार किया है। श्री सागरमल जी म.सा. की पुण्यतिथि, चतुर्दशी एवं आचार्यश्री शोभाचन्द्र जी म.सा. की पुण्यतिथि पर 4 तेले एवं 51 एकाशन के तेले हुए हैं।

गोपालगढ़ (भरतपुर)- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में जप-तप की लहर छाई हुई है। चातुर्मास का प्रारम्भ धर्म चक्र से हुआ। श्रावण कृष्णा एकादशी से अमावस्या तक पचरंगी कार्यक्रम में दया-एकाशन उपवास आदि की साधनाएँ हुईं। 8, 9,11 की तपस्या की लड़ी लग रही है तथा तप के साथ जाप का आयोजन भी अनवरत जारी है, जिसमें बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएँ भाग ले रहे हैं। साथ ही बच्चों और युवाओं में भी बेला,तेला का उत्साह बना हुआ है। श्रावकों एवं छोटे

बच्चों ने अलग-अलग भिक्षु दया की आराधना की। 4 अगस्त को राष्ट्रीय संघाध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना महासती जी के दर्शनार्थ पधारे। 6 अगस्त को श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा पधारीं। श्री बाबूलाल जी जैन-श्रीमती आशाजी जैन तथा श्री ओमप्रकाश जी जैन-श्रीमती बीना जी जैन ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया है एवं 3 दम्पत्तियों ने एक वर्ष के लिए शीलव्रत अंगीकार किया। 22 अगस्त को महासती जी वासन गेट पधार गये है। यहाँ पर भी तपस्या की लड़ी चालू है। नया सम्पर्क सूत्र- 1. श्री धर्मेन्द्र जी जैन-9414023534, 2. श्री सुमेरचन्द जी जैन-9314537204, 3. श्री अशोक जी जैन-9414376868

जामोला- व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा.आदि ठाणा के सान्निध्य में जामोला के श्रावक-श्राविका, युवा-युवतियाँ, बालक-बालिकाएँ उत्साह से धर्माराधना का लाभ ले रहे हैं। यहाँ 35 वर्षों के पश्चात् चातुर्मास हुआ है। 11,9,5,3 आदि की अनेक तपस्याएँ हुई हैं तथा कुछ तपस्वी तपस्या में आगे बढ़ रहे हैं। धार्मिक पाठशाला प्रतिदिन चल रही है। बच्चे प्रतिक्रमण सीख रहे हैं। व्याख्यान में जैन-अजैन आदि सभी की उपस्थिति रहती है।

मानसरोवर, जयपुर- व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में एकाशन एवं उपवास की तपस्या प्रतिदिन हो रही है। 26 अगस्त तक 3 अठाई एवं 11 तेले की तपस्या सम्पन्न हुई है। प्रत्येक रविवार को सामूहिक एकाशन एवं 5-5 सामायिक की साधना सम्पन्न हो रही है। इस दिन बालकों का संस्कार शिविर भी आयोजित होता है, जिसमें 60-70 बच्चों की उपस्थिति रहती है। रविवार को प्रवचन के पश्चात् ''जैन धर्म का मौलिक इतिहास'' पर आधारित परीक्षा होती है। श्री रघुवीर जी जैन 'समीधि वाले' महारानी फार्म ने सपत्नीक आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया है। रक्षाबंधन के लौकिक पर्व को लोकोत्तर पर्व के रूप में मनाते हुए शताधिक श्रावक-श्राविकाओं ने वर्ष भर ब्रह्मचर्य पालन, महीने में 15 दिन ब्रह्मचर्य पालन, 15 दिन रात्रिभोजन त्याग, 10 दिन स्नान के त्याग, 10 दिन जमीकंद के त्याग आदि नियम स्वीकार किये हैं। बालकों ने प्रतिदिन 21 नवकार मंत्र गिनने, बड़ों को प्रणाम करने, टी.वी. देखते हुए भोजन नहीं करने, जूठन नहीं छोड़ने आदि के नियम लिए हैं।

पीपाड़ शहर- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में श्रीमती लीलाबाई जी धर्मपत्नी श्री मांगीलाल जी कटारिया एवं श्रीमती कस्तूरचन्द जी बागमार ने मासक्षपण की तपस्या की है। अभी 20, 18 एवं 15 की तपस्याएँ भी चल रही हैं। पाँच अठाई तप हुए हैं। तेले, उपवास एवं एकाशन तप चल रहे हैं। गुरुद्वय दीक्षा-

अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष्य में महासती जी की प्रेरणा से सिद्धि एकाशन तप 51 श्रावक-श्राविकाओं के चल रहा है, जिसमें युवा रत्न बड़े उत्साह के साथ भाग ले रहे हैं। श्री सुगनचन्द जी कर्णावट अरटिया वाले ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया है।

अयनावरम्- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि महासतीवृन्द के सान्निध्य में चातुर्मास ज्ञान की गरिमा, दर्शन की दीप्ति तथा चारित्र की चमक से ऐतिहासिकता की ओर बढ़ रहा है। तप-त्याग की मानों लड़ी लग गई है। दान-पुण्य की प्रेरणा मिल रही है। 'एक कदम धर्म की ओर' कक्षा के माध्यम से युवा शक्ति में नई आशा का संचार हुआ है। प्रवचन हॉल खचाखच भरा रहता है। महासती भाग्यप्रभाजी के अमृत प्रवचनों का प्रभाव श्रोताओं के हृदय पर अंकित हो जाता है। प्रतिमाह दो दिन कर्मग्रन्थशाला की कक्षा लग रही है जिसमें लगभग 100 व्यक्तियों की उपस्थिति रहती है। स्वाध्यायियों का 'आओ स्वाध्यायी बनें' शिविर सफल रहा। श्री सागरमल जी महाराज एवं आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज का पुण्य-दिवस तथा श्रमण सूर्य श्री मरूधर केसरी जी म.सा. का जन्मदिवस तप-त्याग के साथ मनाया गया। आयंबिल, तेले एवं बियासना की लड़ी चल रही है। महासती श्री नव्यप्रभाजी ने सिद्धितप की आराधना की। विरक्ता बहिन सुश्री शिल्पा जी सुराणा ने अल्पवय में 31 दिवसीय मासखमण तप पूर्ण किया। आपकी तपस्या अभिग्रह फलित थी। यहाँ पर चातुर्मास प्रारम्भ से ही जाप चल रहा है। प्रत्येक रविवार को बालक-बालिकाओं का शिविर आयोजित हो रहा है। पूज्य महासतीजी के मुखारविन्द से 33 दिवसीय, 31 दिवसीय तप के साथ 29, 22, 17, 16, 15, 10, 9 दिवसीय तप भी हुए हैं। 12 अठाई एवं 41 तेले सम्पन्न हुए हैं।

आवड़ी (चेन्नई)- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा 5 के मंगल प्रवेश के साथ ही तपस्या का क्रम प्रारम्भ हो गया। यहाँ आचार्यप्रवर की अष्ट सम्पदा आराधना 4 से 11 अगस्त तक सम्पन्न हुई, जिसमें 12 श्रावकों एवं 55 श्राविकाओं ने तप-आराधना की। 33 की तपस्या का एक मासखमण तथा 21, 16, 11, 9,8 आदि की अनेक तपस्याएँ सम्पन्न हुई हैं। श्रीमती सुआबाई बोहरा के 27 अगस्त को 37 तथा श्रीमती मदनलाल जी बोहरा के 15 की तपस्या चल रही थी। 3 श्रावक-श्राविकाओं ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया है। लगभग 55 बहनों ने एकाशन के तेले सम्पन्न किए हैं। प्रत्येक रविवार को बालक-बालिकाओं का संस्कार शिविर चल रहा है। अनेक भाई-बहिनों ने आजीवन रात्रिभोजन, जमीकंद एवं सौन्दर्यप्रसाधन के त्याग किये हैं। उपवास, तेला एवं आयंबिल की लड़ी चल रही है। 5 बहनों के एकाशन मासखमण सम्पन्न हुए हैं।

निफाड़ (नाशिक)- व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 के

चातुर्मास से स्थानीय संघ प्रसन्न है। सौ. प्रभा विनोद जी फोफलिया के 31 दिवसीय मासखमण की तपस्या 26 अगस्त को पूर्ण हुई है। 15, 9,8,7 आदि की तपस्याएँ चल रही हैं। 3 अठाई पूर्ण हो गई है। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने प्रथम बार तपस्याएँ की है। आयंबिल एवं तेले की लड़ी नियमित चल रही है। एकाशन एवं उपवास के एकान्तर तप 43 तपस्वियों के चल रहे हैं। एक घण्टे का नियमित जाप चल रहा है। हर रविवार को बच्चों का शिविर चल रहा है। प्रातःकाल महावीर कॉलेज में श्री दीपिकाश्रीजी म.सा. युवकों की कक्षा ले रही है। 4 से 8 अगस्त तक दो पंचरंगी एक साथ पूर्ण हुई। आचार्य आनन्दऋषि जी म.सा. की जन्म-जयन्ती तथा आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. की एवं श्री सागरमलजी म.सा. की पुण्यतिथि पर 36 बेले की तपस्या सम्पन्न हुईं। सौ. शान्तिबाई रमणलाल जी दुधेड़िया ने शीलव्रत अंगीकार किया। महासती श्री निःशल्यवती जी जम्बू स्वामी का चरित्र रोचक ढ़ंग से प्रस्तुत कर रही हैं।

नदबई- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. का चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश 14 जुलाई को हुआ। चातुर्मास प्रारम्भ से ही संवर, बियासन, एकाशन, आयंबिल, उपवास, तेला एवं अठाई की लड़ी चल रही है। धर्म ध्यान का अपूर्व ठाट लगा हुआ है। 11-12 अगस्त को पल्लीवाल स्वाध्यायियों का क्षेत्रीय शिविर आयोजित हुआ। पूज्यश्री शोभाचन्द्र जी के म.सा. के पुण्य-स्मृति दिवस पर बियासन, एकाशन, आयंबिल, उपवास, तेला, अठाई एवं 17 दिवसीय तपस्या सम्पन्न हुई। लगभग 51 दयाव्रत सम्पन्न हुए। यहाँ बालक-मण्डल एवं बालिका मण्डल का गठन हुआ है। प्रत्येक रविवार को बच्चों का शिविर एवं प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। मूर्तिपूजक, अग्रवाल भाई-बहिन भी प्रवचन श्रवण एवं सभी कार्यक्रमों में उत्साह से भाग ले रहे हैं। महासती मुक्तिप्रभाजी की प्रेरणा से दीक्षा-अर्द्धशती वर्ष में 125 दम्पतियों ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया है, जिसकी सूची आगामी अंक में प्रकाशित की जाएगी।

बीकानेर- व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा., साध्वी श्री मुदितप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 की सन्निधि में स्वाध्याय भवन बीकानेर में प्रथम चातुर्मास के अवसर पर आबाल-वृद्ध, युवा, महिलाओं में अपूर्व उत्साह देखा जा रहा है। अभी तक 11, 10 एवं 9 की तपस्याएँ सम्पन्न हुई हैं। अठाइयों की होड़ सी लगी हुई है। चोला, तेला, बेला व आयंबिल, एकाशन आदि की तपस्याएँ गतिशील हैं। आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. की पुण्य तिथि पर दया एवं उपवास की पचरंगी सम्पन्न हुई। 3 दिन का धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 45-50 श्रावक-श्राविकाओं ने जैन तत्त्व दर्शन की जानकारी प्राप्त की। श्री धर्मचन्द जी जैन की अध्यापन-सेवाएँ प्रशंसनीय रहीं। प्रत्येक

रविवार को बालक-बालिकाओं में सुसंस्कारों का बीजारोपण किया जा रहा है। स्थानक में रात्रि संवर की लड़ी निरन्तर चल रही है। नूतन ज्ञानार्जन का क्रम बना हुआ है। तीन साध्वियों के एकान्तर तप तथा महासती श्री सुमति प्रभाजी के बेले-बेले की तपस्या चल रही है। बीकानेरवासी पूर्ण तन्मयता के साथ चातुर्मास का लाभ उठा रहे हैं।

-नवीन डागा, बीकानेर

मण्डावर महुआ रोड- विदुषी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 5 की सन्निधि में चातुर्मास प्रवेश से ही आयंबिल एवं तेले की लड़ी चल रही है। एकाशन, उपवास, तेला, चोला, पचोला एवं कुछ अठाई तप हुए हैं। 11 अगस्त को सामूहिक दया का आयोजन किया गया। ज्ञान-ध्यान सीखने वाले भाई-बहिनों में उत्साह है। महासती मण्डल के एकान्तर तप चल रहा है। जैन एवं जैनेतर बन्धु जिनवाणी श्रवण का लाभ ले रहे हैं। चोला, पचोला, अठाई आदि की तपस्या चल रही है। अर्चना जैन के14 की तपस्या चल रही है तथा आगे बढ़ने की भावना है। हर रविवार को बालकों का शिविर तथा नियमित पाठशाला चल रही है। दोपहर में बहनों का नियमित रूप से धर्म-ध्यान एवं स्वाध्याय चल रहा है। अनेक युवक-युवतियों ने चार माह तक के लिए शीलव्रत का एवं रात्रि-भोजन त्याग का नियम स्वीकार किया है।

प्रतापनगर-जयपुर- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 5 की प्रेरणा से एकासन, आयम्बिल, उपवास, तेला, अठाई एवं संवर की लड़ियाँ चल रही हैं। चातुर्मास काल में तीन प्रतियोगिताएँ आयोजित की जा रही हैं- 1. उत्तराध्ययनसूत्र का 29 वां अध्ययन कण्ठस्थ, 2. जैनागम के स्तोत्र रत्न पर आधारित खुली पुस्तक प्रतियोगिता, 3. प्रतिक्रमण कण्ठस्थ। यहाँ दस अठाई तप सम्पन्न हो चुके हैं। पर्युषण एवं सितम्बर माह में अनेक योजनाएँ प्रस्तावित हैं। लगभग 600 धार्मिक प्रश्नों पर एक प्रतियोगिता तीन चरणों में पूरी होगी।

पाली- व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में चातुर्मास में उत्साह बना हुआ है। आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी से पंचरंगी तप प्रारम्भ हुआ, जिसमें 2 पचरंगियाँ हो गई। 11, 8, 5 आदि की तपस्याएँ चल रही हैं। प्रत्येक रविवार को विभिन्न विषयों पर धार्मिक परीक्षाएँ सम्पन्न हो रही हैं। 1 अगस्त से बहुओं के लिए धार्मिक शिक्षण शिविर प्रारम्भ हुआ। श्रावण वदि ग्यारस को तीसरी पचरंगी प्रारम्भ हुई। श्रावण-अमावस्या पर सामूहिक तेले की तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। कृष्ण जन्माष्टमी के दिन 55 सामूहिक एकाशन तप हुए हैं।

आचार्यप्रवर की दीक्षा अर्द्धशती की सम्पन्नता पर आयोज्य विविध कार्यक्रम

जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशताब्दी के मंगलमय अवसर पर पूज्य गुरु भगवन्तों के पावन अतिशय, पूज्य संत-भगवन्तों एवं पूज्या महासतीवृन्द की पावन प्रेरणा से देश के विभिन्न ग्राम-नगरों में श्रद्धालु भक्तजन एवं संघ सदस्यगण व्रत-नियम, त्याग-तप के साथ श्रद्धाभिव्यक्ति कर रहे हैं, यह हर्ष का विषय है। परम पूज्य आचार्य भगवन्त के उज्ज्वल-विमल यशस्वी निरतिचार संयम जीवन के 50 वर्ष 08 नवम्बर 2013 को परिपूर्ण हो रहे हैं। बन्धुओं! यह हम-सबके लिए एक ऐतिहासिक स्वर्णिम अवसर तो है ही, अपने जीवन को श्रद्धा-भक्ति, व्रताराधन व प्रत्याख्यान के साथ सुरभित करते हुए ज्ञान-दर्शन-चारित्र की अभिवृद्धि का पावन प्रसंग भी है।

परम पूज्य आचार्यप्रवर की दीक्षा अर्द्धशती सम्पन्न होने के अवसर पर निम्नांकित कार्यक्रम प्रस्तावित हैं-

आचार्यप्रवर के सान्निध्य में कार्यक्रम-

1. 8 नवम्बर, 2013 कार्तिक शुक्ला 6 को परम पूज्य आचार्यप्रवर के दीक्षा दिवस पर देश के विभिन्न क्षेत्रों से सवाईमाधोपुर में उपस्थित भक्त समुदाय में से कम से कम 2500 व्यक्ति व्रताराधन (एकाशन, आयंबिल, उपवास, दया, संवर) करें।
2. 8 नवम्बर, 2013 को सवाईमाधोपुर में उपस्थित श्रद्धालुजनों में कम से कम 2500 व्यक्ति 5-5 सामायिक करें।

संघ स्तर पर सवाईमाधोपुर में आयोज्य कार्यक्रम (8-9 नवम्बर, 2013)-

(दिनाँक 8 नवम्बर 2013, अपराह्न 12.30 बजे)

1. गुणी-अभिनन्दन समारोह
2. परम पूज्य आचार्यप्रवर के जीवन-वृत्त का विमोचन।
3. जिनवाणी द्वारा प्रकाशित आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के व्यक्तित्व एवं कृतित्व विशेषांक का विमोचन।

(दिनाँक 9 नवम्बर 2013)

1. दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के उपलक्ष में एकान्तर तप करने वाले तप-साधकों का सामूहिक पारणक। (नवकारसी पश्चात्)
2. संघ व सहयोगी संस्थाओं की संयुक्त साधारण सभा की वार्षिक बैठक अपराह्न

12.30 बजे।

3. अखिल भारतीय श्री जैन रत्न बहू-बालिका मण्डल का गठन एवं कार्यकर्त्ताओं द्वारा शपथ ग्रहण।

दीक्षा-अर्द्धशताब्दी की पूर्णता पर देश के विभिन्न ग्राम-नगरों व संघ शाखाओं में स्थानीय स्तर पर आयोज्य कार्यक्रम-

1. व्रत, एकाशन, नींवी, आयंबिल, उपवास, दया, संवर।
2. पाँच सामायिक
3. व्रत के तेले (एकाशन, नींवी, आयंबिल, उपवास, दया, संवर या मिश्रित)
4. बारह व्रत
5. सामूहिक रात्रि भोजन में भाग लेने का त्याग।
6. एक वर्ष तक रात्रि भोजन का त्याग
7. एक वर्ष तक जमीकन्द का त्याग
8. एक वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन
9. आजीवन शीलव्रत ग्रहण
10. 'स्वप्निका' के अनुसार विभिन्न संकल्प/प्रत्याख्यान ग्रहण
11. स्वप्निका पर आधारित परीक्षा का आयोजन। (10 नवम्बर, 2013)

आप सब बन्धुओं व बहिनों से विनम्र अनुरोध है कि इस मंगलमय अवसर पर अधिक से अधिक भाई-बहिन सवाईमाधोपुर में परम पूज्य आचार्य भगवन्त की चरण-सन्निधि में व्रत-प्रत्याख्यान ग्रहण कर श्रद्धाभिव्यक्ति करें।

जो भाई-बहिन सवाईमाधोपुर नहीं पधार सकें, वे अपने यहाँ स्थानीय स्तर पर दीक्षा अर्द्धशती के अवसर पर उपर्युक्त कार्यक्रमों में अपनी सहभागिता निभाएँ एवं व्रताराधन के साथ कोई न कोई प्रत्याख्यान अवश्य ग्रहण करावें।

आप सब स्वयं उपर्युक्त कार्यक्रमों में भाग लें, सभी संघ सदस्यों व श्रद्धालु भक्तों को प्रेरित करें, इसी अनुरोध के साथ....।

-ज्ञानेन्द्र बाफना, अध्यक्ष, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

संघ की साधारण सभा का आयोजन नवम्बर में

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की वार्षिक साधारण सभा 9 नवम्बर, 2013 को मध्याह्न 12.30 बजे सवाईमाधोपुर (राज.) में रखी गई है।

कार्य सूची–

1. मंगलाचरण व सदस्यों का स्वागत
2. गत बैठक की कार्यवाही का वाचन व अनुमोदन
3. संचालन समिति की बैठक के निष्कर्षों एवं कार्यकारिणी द्वारा लिए गये निर्णयों का अनुमोदन।
4. शाखा नियमावली का अनुमोदन।
5. संघ विधान में कार्यकारिणी द्वारा पारित संशोधनों की पुष्टि एवं अनुमोदन।
6. संघ व सहयोगी संस्थाओं की प्रगति की समीक्षा व सदस्यों से प्राप्त सुझावों पर विचार।
7. अन्य कार्य अध्यक्ष महोदय की अनुमति से।

बैठक में पधारने पर आपको सवाईमाधोपुर में विराजित **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा 7 तथा **व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलताजी म.सा.** आदि ठाणा 10 के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण का लाभ भी प्राप्त होगा।

संघ के सभी सदस्यों से विनम्र अनुरोध है कि संघहित में आप बैठक में कोई सुझाव रखना चाहें तो अपने सुझाव लिखित में संघ के प्रधान कार्यालय को 15 अक्टूबर 2013 तक भेजने की कृपा करें। संघहित में उपयोगी सुझावों पर यथोचित विचार व निर्णय करने का हमारा प्रयास रहेगा। आप स्वयं तो साधारण सभा में पधारें ही साथ ही आप अपने क्षेत्र के सभी भाई-बहिनों को इसकी सूचना देने की कृपा करें। *-आनन्द चौपड़ा, महामंत्री*

संघाध्यक्ष का प्रवास-कार्यक्रम

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना संघ के वरिष्ठ पदाधिकारियों के साथ पोरवाल एवं पल्लीवाल क्षेत्र की विभिन्न शाखाओं से प्रत्यक्ष सम्पर्क करने व संघ की गतिविधियों व प्रवृत्तियों के बारे में विस्तृत विचार-विमर्श करने हेतु दिनांक 2.8.2013 से 5.8.2013 तक प्रवास कार्यक्रम के अन्तर्गत सवाईमाधोपुर, गंगापुरसिटी, करौली, मण्डावर, रसीदपुर, खेड़ला, बौंल, बरगमा, हिण्डौनसिटी, वर्द्धमाननगर-हिण्डौनसिटी, गोपालगढ़-भरतपुर, भरतपुर, पहरसर, नदबई, खेरली, सहाड़ी, खोह, हरसाना, बाराभड़कोल आदि ग्राम-नगरों में पधारे। इस प्रवास कार्यक्रम में संघाध्यक्ष महोदय के साथ संघ उपाध्यक्ष श्री हस्तीमलजी डोसी-मेड़तासिटी, संघ महामंत्री श्री आनंदजी चौपड़ा-जयपुर, संघ के अतिरिक्त महामंत्री

श्री मानेन्द्रजी ओस्तवाल-जोधपुर, पल्लीवाल क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रधान श्री राजेशजी जैन-हिण्डौनसिटी, संघ के सहमंत्री श्री मनीषजी जैन-खेरली, संघ कार्यालय प्रभारी श्री प्रकाशजी सालेचा-जोधपुर की भी महनीय सेवाएँ रहीं।

प्रवास कार्यक्रम के दौरान सवाईमाधोपुर में जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 7 एवं व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 10 के, खेरली में परम विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के, गोपालगढ़-भरतपुर में विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा आदि ठाणा के, नदबई में व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के एवं मण्डावर में सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त किया। लगभग सभी स्थानों पर स्थानीय संघ-सदस्यों की बैठक ली गई, जिसमें पदाधिकारियों ने संघ की प्रवृत्तियों के बारे में जानकारी प्रदान करते हुए संघ सदस्यों से संघहित में अनेक सुझाव प्राप्त किए। जहाँ-जहाँ पर रत्नसंघ की सम्पत्ति के रूप में स्वाध्याय भवन एवं अतिथि भवन बने हुए हैं उन सभी सम्पत्तियों का प्रत्यक्ष निरीक्षण किया गया, साथ ही उन भवनों के आवश्यक दस्तावेजों का भी अवलोकन किया गया। दस्तावेजों को सही रूप से व्यवस्थित कर सुरक्षित करने हेतु आवश्यक निर्देश दिये गये। जहाँ कहीं निर्माण कार्य अधूरा है वहाँ शीघ्र ही उस कार्य को पूरा करने हेतु स्थानीय पदाधिकारियों को निवेदन किया गया। प्रवास कार्यक्रम के दौरान ही संघाध्यक्ष व साथी कार्यकर्ताओं ने वीरमाता-पिता के निवास-स्थान पर जाकर उनसे आवश्यक मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त किया। सभी स्थानों पर संघाध्यक्ष सहित सभी पदाधिकारियों का स्थानीय श्रीसंघों द्वारा आत्मीयता के साथ स्वागत-सत्कार किया गया। सभी लोगों की यह भावना थी कि समय-समय पर इस प्रकार के प्रवास कार्यक्रम रखे जायें ताकि संघ की गतिविधियों की जानकारी जन-साधारण को प्राप्त हो सके। प्रवास-कार्यक्रम के प्रति सभी संघ सदस्यों में प्रमोदजन्य भावना देखने को मिली। प्रवास कार्यक्रम के दौरान प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले सभी संघ सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद एवं आभार।

-मानेन्द्र ओस्तवाल, अतिरिक्त महामंत्री

श्राविका मण्डल के तत्वावधान में बैंकॉक में शिविर

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के तत्त्वावधान में श्री माणकचन्दजी कोठारी-जयपुर (हाल मुकाम बैंकॉक) एवं उनके परिवार द्वारा 24-25 अगस्त, 2013 को बैंकॉक में परिवार-संस्कार जागृति शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में संघ के

उपाध्यक्ष डॉ. अशोकजी कवाड़-चेन्नई, श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा-जयपुर, महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता-जोधपुर, श्री तरुणजी जैन-चेन्नई, श्री भरतजी भंसाली-बैंगलोर, श्री राजेन्द्रजी दुधेड़िया-बैंगलोर, श्रीमती अरुणाजी चोरड़िया-बैंगलोर ने अध्यापन एवं प्रशिक्षण संबंधी सेवाएँ प्रदान कीं। शिविर में 125 परिवार सहित 400 सदस्यों ने भाग लिया। इस शिविर में पांच अलग-अलग कक्षाओं को संस्कार, आस्था, सृजन, संवर और साधना आदि नामों से विभक्त कर अध्यापन किया गया। इस शिविर में व्यस्त जीवन को कैसे सरल किया जाए, बच्चों में संस्कार कैसे डाले जायें आदि विषयों के साथ कर्मसिद्धान्त, मनुष्य जीवन की दुर्लभता, सुन्दर दिनचर्या आदि विषयों पर रोचक ढंग से प्रकाश डाला गया। बालक-बालिकाओं ने प्रतिदिन नवकार महामंत्र का जाप करना, भोजन में जमीकन्द का त्याग आदि नियम अंगीकार किए। शिविर में जैन धर्म की सभी सम्प्रदायों के परिवार सम्मिलित थे। श्रावक-श्राविकाओं ने भी जमीकन्द त्याग आदि के नियम स्वीकार किए। भगवान महावीर का जिनशासन आज भी जीवित रहे इस सन्दर्भ में भगवान मल्लीनाथजी पर भजन संन्ध्या प्रस्तुत की गई तथा बालकों ने इस अवसर पर नाटिका का सुन्दर मंचन किया।

श्राविका मण्डल के विविध कार्यक्रम

प्रवास कार्यक्रम- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा जयपुर ने विभिन्न पदाधिकारियों के साथ किशनगढ़, खेरली, नदबई, भरतपुर आदि स्थानों पर संतप्रवर एवं महासतीवृन्द के दर्शनलाभ लेने के साथ श्राविका मण्डल की सदस्याओं को संघ व श्राविका मण्डल की प्रवृत्तियों के बारे में जानकारी प्रदान करते हुए श्राविका मण्डल द्वारा आयोजित प्रतियोगिता स्वप्निका, बनें आगम अध्येता व दशवैकालिक के बारे में जानकारी प्रदान की तथा अधिक से अधिक बहिनें प्रतियोगिता में भाग लेकर श्राविका मण्डल से जुड़े तथा ज्ञानार्जन करें, इसकी महती प्रेरणा की।

बनें आगम अध्येता प्रतियोगिता- अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा दिनांक 14 नवम्बर, 2013 को आयोजित होने वाली दशवैकालिक खुली पुस्तक प्रतियोगिता के आयोजन की तिथि में संशोधन किया गया है। प्रतियोगिता का आयोजन 15 दिसम्बर, 2013 को सभी केन्द्रों पर दोपहर 12 से 2.30 बजे तक होगा।

अध्यात्म चेतना शिविर- दिनांक 20 से 22 सितम्बर, 2013 तक त्रिदिवसीय अध्यात्म चेतना शिविर का आयोजन सवाईमाधोपुर में रखा गया है। अतः सभी श्राविकाएँ 19

सितम्बर, 2013 तक स्वयं शिविर स्थल-सवाईमाधोपुर पहुँचने का लक्ष्य रखावें।

-वीना मेहता, महासचिव

अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् की कार्यकारिणी बैठक व वार्षिक आमसभा कोसाणा में

अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् की केन्द्रीय कार्यकारिणी बैठक एवं वार्षिक आमसभा, कोसाणा जिला जोधपुर में दिनांक **29 सितम्बर, 2013** को आयोजित होने जा रही है। इस आमसभा में श्रावक, श्राविका सहित सभी युवारत्न बन्धु सादर आमन्त्रित हैं।

(अ) वार्षिक सम्मान- आमसभा में इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रदान किए जाएंगे-

1. सर्वश्रेष्ठ शाखा- परिषद् के पाँचों राष्ट्रीय कार्यक्रमों (चतुविर्धसंघ सेवा, सामायिक-स्वाध्याय, धार्मिक-शिक्षण, स्वधर्मी वात्सल्य, स्वरोजगार सेवा एवं श्रुत सेवा) एवं दिवस/ तिथि विशेष राष्ट्रीय-अभियान के तहत उत्कृष्ट व उल्लेखनीय कार्य के लिए **सर्वश्रेष्ठ बड़ी शाखा** (50 से अधिक रत्नसंघीय घरों वाली शाखा।) व **छोटी शाखा** (50 से कम रत्नसंघीय घरों वाली शाखा) को सम्मानित किया जाएगा।

2. परिषद् के निम्न राष्ट्रीय कार्यक्रमों के अन्तर्गत सराहनीय कार्य के लिए शाखा सम्मान

1. चतुविर्धसंघ सेवा-सम्मान 2. सामायिक स्वाध्याय-सम्मान
3. धार्मिक शिक्षण व नैतिक संस्कार सम्मान 4. श्रुतसेवा-सम्मान
5. स्वधर्मी वात्सल्य व स्वरोजगार सेवा सम्मान

3. दिवस विशेष पर उत्कृष्ट कार्य के लिए शाखा सम्मान

1. तपस्या दिवस 2. सामायिक दिवस 3. ज्ञान दिवस
4. संयम दिवस 5. अहिंसा/जीवदया दिवस 6. स्वाध्याय दिवस
7. दया दिवस 8. व्यसनमुक्ति दिवस

4. व्यक्तिगत कार्यक्षेत्र में सराहनीय व प्रशंसनीय कार्य के लिए सम्मान

(अ) तप- कम-से-कम मासखमण

(ब) सन्त-सती श्रावकोचित सेवा

1. युवारत्न द्वारा लगातार 7 दिनों तक विहार-सेवा
2. शाखा द्वारा वर्ष भर में कम-से-कम 200 कि.मी. विहार-सेवा

(स) संयम– ब्रह्मचर्य धारण/बारह व्रत धारण

(द) शिक्षा– अ.भा.,राज्य स्तरीय सेवाओं में चयन तथा परीक्षा में रेंक।

(य) समाज सेवा– जिला, राज्य, राष्ट्रीय स्तरीय पुरस्कार-प्रमाणपत्र प्राप्ति पर ।

5. राष्ट्रीय अभियान तहत– इसके अलावा इस वर्ष 'आओ स्वाध्याय करें' राष्ट्रीय अभियान के तहत जो युवारत्न बन्धु उत्तराध्ययन/दशवैकालिक/ नन्दी सूत्र/ अनुयोग द्वार सूत्र को कंठस्थ करेगा-से सम्मानित किया जाएगा। श्रुत सेवा कार्यक्रम के अन्तर्गत उपासकदशांग सूत्र के नियमित अध्ययन करने वाले युवारत्नों को भी सम्मानित कर उनका बहुमान किया जाएगा।

(ब) **वार्षिक प्रतिवेदन एवं सम्मान**–आमसभा में महासचिव द्वारा परिषद् की गतिविधियों को दर्शाता वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाएगा।

(स) परिषद् के शाखा प्रमुखों से निवेदन है कि आमसभा की जानकारी अपनी शाखा में शाखा कार्यकारिणी बैठक/साधारण सभा आयोजित कर सभी युवारत्नों को दिरावें तथा अधिकाधिक संख्या में सभी शाखा पदाधिकारी, सदस्य युवारत्नों सहित कोसाणा पहुँचना सुनिश्चित करावें तथा वर्षभर की रिपोर्ट तैयार कर भिजवाएं।

कोसाणा पधारने पर परम श्रद्धेय **उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा.** मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-5 के दर्शन-वंदन, प्रवचन-श्रवण व सत्संग सेवा का लाभ प्राप्त होगा।

आपके व सदस्यों के कोसाणा पधारने की सूचना (संख्या, पहुँचने व वापसी की तिथि व समय आदि) अग्रिम रूप से प्रधान कार्यालय व कोसाणा के निम्नांकित सम्पर्क-सूत्र को अवश्य दिरावें, जिससे संबंधित व्यवस्था में सुविधा रहे।

1. आमसभा स्थल– 1.श्री दुलीचन्दजी नाहर-097890-91677, 2.श्री हेमन्तजी बागमार-098415-39029,**2. श्रावक संघ अध्यक्ष**– श्री जी. गणपतराजजी बागमार-077421-00325, **3. श्रावक संघ मंत्री**– श्री लीलमचंदजी बागमार-096607-07771, **4. यातायात**– श्री नितेशजी बागमार-99400-93434, 2. श्री विक्रमजी बागमार-098410-90292, **5. आवास निवास**– 1. श्री ललितजी बागमार-98411-74202, 2. श्री विमलजी बोहरा-95000-93266 ***-श्रेयांस मेहता, महासचिव***

30 ग्राम-नगरों में युवक परिषद् द्वारा पुस्तकालयों का शुभारम्भ

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के द्वारा 'श्रुतसेवा' कार्यक्रम के अन्तर्गत

50 स्थानों पर पुस्तकालयों का शुभारम्भ करने की योजना के प्रथम चरण में 30 स्थानों पर स्वाध्याय योग्य सैकड़ों पुस्तकों एवं 30 अलमारियों की व्यवस्था की गई है। युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री जितेन्द्रकुमार जी डागा ने विभिन्न श्रावकों एवं युवक परिषद् के सदस्यों के सहयोग से इस कार्य को उत्साहपूर्वक मूर्तरूप प्रदान किया है। इन पुस्तकों के पहुँचने से विभिन्न ग्राम-नगरों एवं क्षेत्रों में नियमित सामायिक करने वाले श्रावकों को स्वाध्याय हेतु पुस्तकें उपलब्ध रहेंगी, साथ ही साधु-संतों को भी पदार्पण पर स्वाध्याय हेतु साहित्य सुगम हो सकेगा। युवक परिषद् की इस कार्ययोजना पर सबको हर्ष एवं गौरव का अनुभव हो रहा है। अभी मारवाड़ एवं महाराष्ट्र के 20 स्थलों के पुस्तकालयों की व्यवस्था का कार्य प्रगति पर है।

द्विदिवसीय क्षेत्रीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर

परमपूज्य आचार्यश्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 7 एवं मधुर व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 10 के पावन सान्निध्य में 10 व 11 अगस्त 2013 को द्विदिवसीय स्वाध्यायी शिविर आयोजित किया गया। शिविर के दौरान आचार्यप्रवर, श्री योगेशमुनिजी म.सा., श्री मनीषमुनिजी म.सा. का मार्गदर्शन स्वाध्यायियों को प्रेरणादायक रहा। इसमें सूत्रवाचन, वक्तृत्व कला आदि विषयों पर विशेष ध्यान दिया गया। शिक्षण कार्य में श्री हस्तीमल जी गुलेच्छा-ब्यावर, श्री कुशलजी गोटेवाला, श्री धर्मेन्द्रकुमारजी जैन का सहयोग प्राप्त हुआ। इस अवसर पर श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के निदेशक माननीय श्री राजेन्द्रमल जी लूंकड़ का 'कन्या सक्षमीकरण' विषय पर एवं जिनवाणी के प्रधान सम्पादक तथा जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. धर्मचन्द जी जैन का 'कैसे बढ़े स्वाध्यायियों की गुणवत्ता' विषय पर प्रेरणादायी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

चतुर्थ राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी सवाईमाधोपुर में

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सवाईमाधोपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की दीक्षा-अर्द्धशताब्दी के अवसर पर 30 सितम्बर एवं 1 अक्टूबर 2013 को चतुर्थ राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। संगोष्ठी में देश के प्रमुख विद्वान् ''जैन आगम-साहित्य में ज्ञान-मीमांसा'' विषय पर अपने शोधालेख प्रस्तुत करेंगे।

युवाचार्य श्री मिश्रीमल जी म.सा. एवं उपाध्याय श्री कन्हैयालाल जी 'कमल' का जन्म शताब्दी वर्ष

सम्पूर्ण भारतवर्ष में श्रमण संघीय युवाचार्य श्री मिश्रीमल जी म.सा. 'मधुकर' का

जन्म शताब्दी वर्ष आयम्बिल तप की विशेष आराधना द्वारा मनाया जा रहा है। साथ ही उपाध्याय श्री कन्हैयालाल जी 'कमल' का भी जन्म शताब्दी वर्ष ज्ञानाराधन-तपाराधन के साथ मनाया जा रहा है।

संक्षिप्त-समाचार

जोधपुर- आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशताब्दी के पावन प्रसंग पर श्री वर्द्धमान जैन रिलीफ सोसायटी एवं स्व. श्रीमती बिलमकंवरजी धर्मपत्नी श्री छतरचन्दजी मेहता, जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में 20 सितम्बर, 2013 को प्रातः 10 बजे से निःशुल्क शल्य चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जायेगा। शिविर में अनुभवी एवं ख्याति प्राप्त सर्जन डॉ. राम गोयल एम.एस. (कमला नगर अस्पताल) तथा सर्जन डॉ. गोपालचन्द गाँधी एम.एस. द्वारा हर्निया, हाइड्रोसिल, एपेन्टिक्स, मस्सा, भगन्दर आदि के ऑपरेशन किये जायेंगे। दिनाँक 19 सितम्बर, 2013 को प्रातः 8.30 से 12.30 बजे तक ऑपरेशन किये जाने वाले मरीजों की जाँच की जायेगी। ऑपरेशन के पश्चात् मरीजों को निःशुल्क दवाइयाँ भी उपलब्ध कराई जायेंगी। श्री वर्द्धमान जैन हास्पिटल के प्रथम तल का नवीनीकरण अभी श्री कस्तूरचन्दजी बाफना, भोपालगढ़-जलगांव के सहयोग से पूर्ण हुआ है।

बैंगलोर- आचार्य श्री विजयराज जी म.सा. के मुखारविन्द से मुमुक्षु श्री अशोक जी जैन (गोटावाले), मन्दसौर एवं मुमुक्षु श्री संतोष जी बागमार (कर्नाटक) की भव्य दीक्षा 14 जुलाई 2013 को सम्पन्न हुई। मुमुक्षु के नाम क्रमशः अभिनव मुनि एवं सम्यक्मुनि रखे गए।

जोधपुर- राजस्थान गौ सेवा संघ द्वारा संचालित श्री कन्हैया गौशाला, जोधपुर में 3 से 12 जुलाई तक दस दिवसीय निःशुल्क पंचगव्य केन्सर उपचार शिविर आयोजित हुआ। शिविर में लगभग 100 केन्सर पीड़ितों ने चिकित्सा का लाभ लिया। इस शिविर में वैद्य श्री केशरीचन्द जी मेहता, वैद्य विष्णुभाई रावल, डॉ. बंशीलाल जैन, डॉ. शमा, डॉ. तरुण ने अपनी सेवाएँ दीं।

जयपुर- बाल सम्बल संस्था निराश्रित बालकों को स्वावलम्बी बनाने हेतु औपचारिक व्यावसायिक शिक्षा आदि की सुविधाएँ उपलब्ध करवाती है। इस वर्ष बच्चों को विद्यालय के गणवेश और जूते वितरित किए गए।

विजयवाड़ा- श्री दक्षिण भारत जैन स्वाध्याय संघ, चेन्नई द्वारा विजयवाड़ा श्री संघ की विनति पर चातुर्मास प्रारम्भ से संवत्सरी महापर्व तक विद्वान् एवं विदुषी स्वाध्यायी भाई-बहिनों को भेजा गया।

बधाई

जोधपुर- झारखण्ड उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधिपति एवं राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश माननीय श्रावकरत्न श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया को राष्ट्रपति के आदेश से सशस्त्र सैन्य अधिकरण का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। उन्होंने दिल्ली में पद का कार्यभार सम्हाल लिया है।

परवेणी-अलवर- सुश्री मोनाजी जैन सुपुत्री श्री मुरारीलाल जी जैन का भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ है। उन्होंने 537 वीं रेंक प्राप्त की है। सुश्री मोना धर्मनिष्ठ है तथा पहले इंजीनियरिंग में ग्रेजुएट होकर टी.सी.एस. में सेवाएँ दे चुकी हैं।

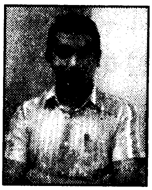

जोधपुर- श्री धीरज डोसी सुपुत्र श्रीमती मीना-नेमीचंद जी डोसी सुपौत्र स्व. श्री लादूराम जी डोसी ने ''बेटी बचाओ, देश बचाओ'' विषयक राज्य स्तरीय निबंध प्रतियोगिता में माननीय मुख्यमंत्री द्वारा द्वितीय पुरस्कार स्वरूप 31000/- की राशि एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त किया।

दिल्ली- श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली में जैन दर्शन

विभाग के सहायक आचार्य एवं युवा विद्वान् डॉ. अनेकान्त कुमार जैन को 'महर्षि वादरायण व्यास राष्ट्रपति सम्मान' से सम्मानित किये जाने की घोषणा स्वतंत्रता दिवस के दिन मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा की गई। 1 लाख रुपये की राशि का यह पुरस्कार उन्हें संस्कृत-प्राकृत भाषा पर महनीय कार्य करने के लिए दिया जायेगा। यह पुरस्कार 30 से 40 वर्ष के युवा विद्वानों को प्रदान किया जाता है।

जयपुर- श्री नरेन्द्रकुमार जैन (स्टेनोग्राफर, राज्य विद्युत प्रसारण निगम), कुण्डेरा वाले को प्रशंसनीय राज्य सेवा एवं कुशल निष्पादन की सराहना में 15 अगस्त 2013 को स्वतंत्रता-दिवस के समारोह में मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार द्वारा योग्यता प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

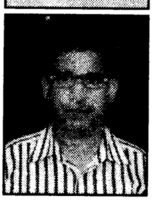

जयपुर- श्री अशोक कुमार जैन, निजी सहायक को उत्कृष्ट कार्यों के लिए 15 अगस्त 2013 को स्वतंत्रता-दिवस समारोह में प्रधान मुख्य वन संरक्षक, राजस्थान द्वारा प्रशंसा-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

जयपुर- संस्कृत शिक्षा निदेशालय, राजस्थान सरकार द्वारा संस्कृत दिवस के अवसर पर 19 अगस्त 2013 को संस्कृत भाषा के अग्रगण्य विद्वान् महोपाध्याय विनयसागरजी को "संस्कृत साधना सम्मान" पुरस्कार से संस्कृत शिक्षामंत्री पं. श्री बृजकिशोर जी शर्मा द्वारा अलंकृत किया गया। महोपाध्याय विनयसागरजी (सम्मान्य निदेशक, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर) ने संस्कृत ही नहीं, अपितु प्राकृत, राजस्थानी, मरुगुर्जर, गुजराती, अपभ्रंश आदि भाषाओं के साहित्य पर शोधपूर्ण कार्य किया है।

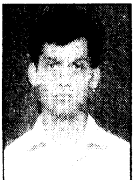

जोधपुर- श्री मोहित सुराणा सुपुत्र श्रीमती सुनीता पारसजी सुराणा (सुपौत्र स्व. श्रीमती लाडकंवरजी-स्व. उम्मेदमल जी सुराणा) ने I.I.T., B.H.U. से बी.टेक किया है।

दूदू- रवि कोठारी सुपुत्र श्रीमती निर्मला-राजेन्द्र जी कोठारी (सुपौत्र श्रीमती उमराव कवंर-गोरधनलाल जी कोठारी) ने IIT-JEE (Advance) 2013 की परीक्षा AIR-839 के साथ प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की। आपने सी.बी.एस.ई. की सी. सैकण्डरी परीक्षा में 91 प्रतिशत एवं PCM में 97 प्रतिशत अंक अर्जित किये।

जयपुर- सुश्री नीतू जैन (सी.ए.) सुपुत्री श्रीमती मधु सुरेश जी जैन (पुसेदा वाले) की कोल इण्डिया लिमिटेड, कोलकाता में M.T. Finance के पद पर नियुक्ति हुई है।

जयपुर- आशीमा जैन सुपुत्री श्रीमती कुमुद-सुरेशचन्द जी जैन एवं प्रपौत्री स्व. श्री भगवान सहाय जैन दातिया (अलवर) ने निरमा यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद से B.Com, L.L.B (Hons.) में गोल्ड मैडल प्राप्त किया है।

सी.ए. में उत्तीर्ण

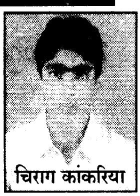
चिराग कांकरिया

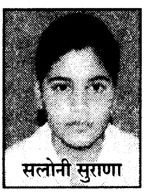
सलोनी सुराणा

क्षितिज कटारिया

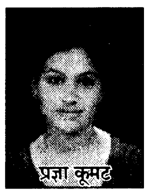
प्रज्ञा कूमट

पलक सुखलेचा

मदनगंज-किशनगढ़- श्री सौरभ जामड़ सुपुत्र श्रीमती मधु-राजकुमार जी जामड़ (सुपौत्र श्रीमती कमलादेवी-भागचन्द जी जामड़) ने सी.ए. प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की।

भोपालगढ़- श्री चिराग कांकरिया सुपुत्र नवीन कांकरिया ने प्रथम प्रयास में सी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

जोधपुर- सुश्री सलोनी सुराणा सुपुत्री श्रीमती सुनीता पारसजी सुराणा (सुपौत्री स्व. श्रीमती लाडकंवरजी-स्व. उम्मेदमल जी सुराणा) ने 21 वर्ष की लघुवय में प्रथम प्रयास में सी.ए. एवं सी.एस. में सफलता प्राप्त की है। आपकी सामायिक स्वाध्याय में नियमित रुचि व धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा है।

अजमेर- श्री क्षितिज कटारिया सुपुत्र श्री अजीत कुमार जी कटारिया (हाल निवासी उदयपुर) ने 18 वर्ष की आयु में IPCC परीक्षा के दोनों ग्रुप में प्रथम प्रयास में सफलता प्राप्त की। एकाउन्ट्स में आपने सर्वाधिक 95 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। आप श्रद्धेया महासती श्री कौशल्यावती जी म.सा. के सांसारिक पक्षीय भाई हैं।

ब्यावर- सुश्री प्रज्ञा कूमट सुपुत्री सुनीता-त्रिलोकचन्द कूमट एवं सुपौत्री स्व. श्री पारसमल जी कूमट ने IPCC की परीक्षा प्रथम प्रयास में अखिल भारतीय स्तर पर 36 वें स्थान से उत्तीर्ण की।

जयपुर- सुश्री पलक सुपुत्री श्रीमती इन्दुजी-श्री रिखबचन्द जी सुखलेचा (सुपौत्री स्व. श्री दीपचंद जी सुखलेचा) ने प्रथम प्रयास में IPC (C.A.) की परीक्षा उत्तीर्ण की। C.P.T. परीक्षा में भी अखिल भारतीय स्तर पर 200 में से 175 अंक प्राप्त कर 22 वीं रेंक प्राप्त की है।

श्रद्धाञ्जलि

चेन्नई- अनन्य गुरुभक्त संघ-सेवी, संत-सेवी,दृढ़धर्मी सुश्राविका श्रीमती सुन्दरबाईजी

कवाड़ धर्मपत्नी श्रद्धानिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ, संघसमर्पित श्रावकरत्न स्व. श्री पृथ्वीराज जी कवाड़ का 28 अगस्त 2013 को 98 वर्ष की वय में समाधिमरण हो गया। सुश्राविका श्रीमती सुन्दरदेवी जी कवाड़ का गृहस्थ-जीवन एक आदर्श जीवन रहा। वे विगत 50 वर्षों से श्रमण-श्रमणी जैसा उत्कृष्ट जीवन जी रही थीं। विवेकशीला श्राविका पाप-प्रवृत्ति से बचे रहने तथा सम्मूर्च्छिम जीवों की उत्पत्ति न हो, इस हेतु सजग रही। वृद्धावस्था में अशक्तता के रहते भी प्रतिवर्ष आचार्यप्रवर के दर्शन-वन्दन हेतु उपस्थित होती रही। आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा भक्ति थी। उनका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि सद्गुणों से युक्त था। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाली चिन्तनशील श्राविका थीं। इस अवस्था में भी नित्यप्रति 13-14 सामायिक करती थीं। ध्यान, मौन, स्मरण, भजन, जप-तप में लीन श्राविकारत्न व्रत-प्रत्याख्यानों में भी सजग थीं। संत-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में श्राविकारत्न की भावना सदा प्रशस्त रही। विगत कुछ वर्षों से वृद्धावस्था व शारीरिक कमजोरी के कारण मुनि-दर्शन-वन्दन हेतु उनकी जाने

की स्थिति नहीं थी, फिर भी हर पल देव-गुरु-धर्म का स्मरण, सामायिक-स्वाध्याय की क्रमबद्धता एवं संवर-साधना की तत्परता से वे विशिष्ट श्राविका के रूप में जानी जाती थी। सन्त-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में उनकी प्रगाढ़ भावना स्तुत्य रही है। पूनमल्ली संघ में वे 'अम्मा' के नाम से प्रसिद्ध थीं। पीपाड़ एवं चेन्नई में सम्पन्न धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में आप सदैव सक्रिय रहीं।

आप स्वयं ने संस्कारी जीवन जीते हुए अपने पारिवारिकजनों को भी धार्मिक संस्कार देने का महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाया, जिसके फलस्वरूप कवाड़ परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। स्वधर्मि-वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी कवाड़ परिवार सदैव समर्पित रहा है। रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों में कवाड़ परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहा है। दृढ़धर्मी सुश्रावक श्री पृथ्वीराज जी कवाड़ रत्नसंघ के प्रमुख स्तम्भ श्रावक थे। संघ को पल्लवित एवं पुष्पित करने में आपने हमेशा उदार भावना का परिचय दिया था। विरक्त-विरक्ताओं के प्रति आत्मीयता एवं उनके प्रति स्नेह, सहयोग व सम्बल प्रदान करने की भावना रहती थीं। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की दीक्षा में भी कवाड़ परिवार का महनीय सहयोग रहा था। आपके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री दलीचन्द जी कवाड़ त्यागानुरागी भाई-बहनों की सार-संभाल करने में सजग हैं। आपके मझले सुपुत्र स्व. श्री मांगीलाल जी कवाड़ की संघ-सेवा में उदारता बेमिसाल रही। आपके छोटे सुपुत्र श्री प्रेमकुमार जी कवाड़ की गुरु भक्ति, संघनिष्ठा और सेवा के प्रति समर्पण को अनूठे आदर्श के रूप में देखा जा सकता है। आपके पौत्र डॉ. अशोक जी कवाड़ वर्तमान में अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के उपाध्यक्ष (शिक्षा)' पद के दायित्व का कुशलता पूर्वक निर्वहन करने के साथ ही पूज्य संत-सतीवृन्द, मुमुक्षुजनों, स्वाध्यायी बंधुओं एवं युवा बंधुओं के ज्ञानार्जन व शिविर संचालन, शिक्षण-प्रशिक्षण में अपना महनीय योगदान कर रहे हैं। आपके दूसरे पौत्र श्री हरीश जी कवाड़ संघ-सेवा, साहित्य-सेवा, श्रुत-सेवा में उदारता के साथ सहयोग के लिए तत्पर रहते हैं एवं आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना के सह संयोजक के रूप में अपनी महनीय सेवाएँ दे रहे हैं।

जोधपुर- दृढ़धर्मी सुश्रावक श्री सुकनराज जी कवाड़ सुपुत्र स्व. श्री गुमानमल जी कवाड़

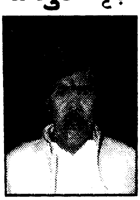

(खाराबेरा वाले) का 79 वर्ष की वय में 21 जून, 2013 को देहावसान हो गया। आप रत्नसंघ के प्रबुद्ध एवं तप-त्याग में अग्रणी श्रावक थे। वे प्रतिदिन 8-9 सामायिक करने के साथ प्रतिक्रमण, दया-संवर, उपवास-पौषध की साधना एवं त्याग-तप में सदा सक्रिय रहते थे। आपके परिवार

के सदस्य भी धर्मकार्य में सदैव सक्रिय हैं। श्री सुकनराज जी कवाड़ श्रद्धेया महासती सुश्रीप्रभाजी एवं महासती श्री शारदाजी के सांसारिक मामा जी थे।

जोधपुर- संघ-सेवी सुश्रावक श्री प्रेमकुमारजी सिंघवी का 10 अगस्त 2013 को

देहावसान हो गया। सिंघवी परिवार रत्नसंघ का समर्पित परिवार रहा है। श्रद्धेय श्री कैलाशमुनिजी म.सा. की दीक्षा के पश्चात् तो समूचे सिंघवी वीर परिवार की सेवा-भक्ति के साथ संघ की प्रवृत्तियों व गतिविधियों में गहरी अभिरुचि रही। बारनी में रहते हुए सुश्रावक जी ने वर्षों तक संघ के सहमंत्री पद का दायित्व बखूबी निभाया एवं गाँव की सभी जातियों से मधुर सम्बन्ध रखकर सभी सदस्यों में गुरुभक्ति की भावना भरने का कार्य बड़ी कुशलता से किया।

जोधपुर- सुज्ञ सुश्राविका श्रीमती सूरजदेवीजी मूथा धर्मपत्नी स्व. श्री माणकचन्द जी मूथा का 16 अगस्त 2013 को स्वर्गारोहण हो गया। संघनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ विविध गुणों से युक्त सुश्राविका का जीवन संघ व समाज सेवा में समर्पित रहा। आपकी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा व भक्ति थी। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाली श्राविका थीं। अपने सम्पर्क में आने वाली श्राविकाओं को आप ज्ञान-ध्यान सिखाने में कुशल थीं। आपने अपने जीवन में अनेक त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किए। पीपाड़ महिला मण्डल की आप वर्षों तक अध्यक्ष रहीं तथा पीपाड़ में सम्पन्न धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में आप सदैव सक्रिय रहीं। मूथा परिवार संघ-सेवा, स्वधर्मि-वात्सल्य, आतिथ्य-सत्कार एवं समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है।

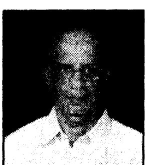

जोधपुर- संघ समर्पित सुश्रावक श्री महावीरचन्द जी भण्डारी पुत्र स्व. श्री होशियारचन्द जी भण्डारी का 21 अगस्त 2013 को देहावसान हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता, सेवाभावना आदि गुणों से युक्त था। आपने महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. से शीलव्रत के नियम लिए। आपकी इच्छानुसार मरणोपरान्त नेत्रदान किए गए।

सवाईमाधोपुर- सुश्रावक श्री शान्तिलाल जी सोपवाले सुपुत्र स्व. श्री घासीलाल जी का

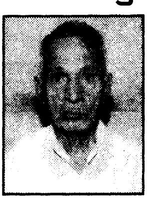

परलोकगमन 18 जुलाई 2013 को 78 वर्ष की वय में हो गया। आपने अंतिम समय में महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से चारों आहार के त्याग किये तथा मांगलिक श्रवण की। आप सरलता एवं सादगी के लिये जाने जाते थे।

अजमेर- धर्मपरायण शान्तस्वभावी सुश्राविका श्रीमती फूलबाई कटारिया धर्मपत्नी स्व. श्री मोतीलाल जी कटारिया का 73 वर्ष की आयु में 11 अगस्त 2013 को स्वर्गवास हो गया।

आपने अपने जीवन काल में अठाइयाँ, तेला, उपवास व एकाशन की कई तपस्याएँ कीं। आपका सारा परिवार रत्नसंघ के सभी संत-सतियों के प्रति समर्पित है। आप महासती श्री कौशल्यावती जी म.सा. की सांसारिक पक्ष में चाची जी थीं। नेत्रदान करने की भावना के अनुरूप मरणोपरान्त आपके नेत्र दान किए गए।

जयपुर- सुश्रावक श्री गुलाबसिंह जी दरड़ा (सेवानिवृत्त आई.ए.एस.) का 79 वर्ष की

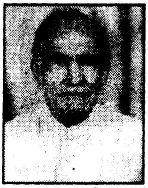

आयु में 28 जुलाई 2013 को स्वर्गारोहण हो गया। आप वर्धमान जैन स्थानकवासी संघ लाल कोठी जयपुर के गरिमामय संरक्षक पद को सुशोभित कर रहे थे। आपका जीवन धर्मनिष्ठा एवं पर्यावरण-संरक्षण के प्रति समर्पित रहा। व्यसनमुक्ति की दिशा में आपने महत्त्वपूर्ण कार्य किए। आप अपने पीछे पुत्री डॉ. प्रियंका का धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गए हैं।

कोलकाता- सुश्रावक श्री कमलकुमार जी कोठारी सुपुत्र स्व. श्री रिखबचंदजी कोठारी,

खुजवाना निवासी का 49 वर्ष की आयु में 29 जुलाई 2013 को स्वर्गवास हो गया। वे श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा के सहमंत्री व धर्म सभा के संयोजक थे। आपके सांसारिक लघु भ्राता श्री समकितमुनिजी आचार्य शुभचन्द्र जी म.सा. की सम्प्रदाय में दीक्षित हैं।

जोधपुर- सुश्राविका श्रीमती शान्तिदेवी जी सुराणा धर्मपत्नी श्री दशरथमल जी सुराणा का 67 वर्ष की आयु में 8 जून, 2013 को स्वर्गवास हो गया। आपने अपने जीवनकाल में कई दयाव्रत, अठाई एवं पन्द्रह की तपस्या की।

जोधपुर- सरलमना सुश्रावक श्री जसवंतराज जी सुपुत्र स्व. श्री सोहनराज जी आंचलिया का स्वर्गवास 15 जुलाई, 2013 को 69 वर्ष की उम्र में हो गया। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता आदि विविध सद्गुणों से युक्त था।

रूपवास (भरतपुर)- धर्मपरायण सुश्रावक श्री महावीर प्रसाद जी पुत्र श्री भौंरीलाल जी जैन का 21 जुलाई 2013 को 66 वर्ष की आयु में देवलोकगमन हो गया। आपकी रत्नसंघीय संत-सतीवृंद के प्रति गहरी निष्ठा थी। किडनी रोग एवं डायबिटीज से पीड़ित होने पर भी आपने नवकार मंत्र का जाप अन्तिम समय तक किया।

शिरपुर- तपाराधक संत-सेवी श्री राजमलजी संकलेचा का 86 वर्ष की आयु में 24 जुलाई 2013 को परलोकगमन हो गया। नित्य सामायिक, जप-माला आदि धर्म क्रियाओं से आपका जीवन अलंकृत था। आठ-नौ इक्कीस की तपस्या भी आपने की और 80 वर्ष की उम्र में मासखमण भी किया। आपके सुपौत्र श्री राकेशकुमार पारसमल जी संकलेचा स्वाध्यायी हैं।

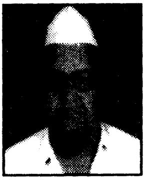

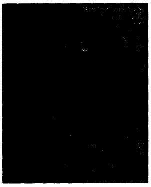

चेन्नई- दयामूर्ति, सौम्यस्वभावी, सुश्राविका श्रीमती मोहनकंवर जी कांकरिया धर्मपत्नी स्व. श्री भंवरलाल जी पीपाड़ शहर का 26 जुलाई, 2013 को स्वर्गवास हो गया। आप संत-सती मण्डल की सेवा में सदैव कटिबद्ध रहती थीं। नित्य 5-7 सामायिक करती थीं तथा पिछले 42 वर्षों से रात्रि-चौविहार त्याग था। बेला, तेला, अठाई, ग्यारह, सोलह तथा वर्षीतप की आराधना के साथ आपने शीलव्रत भी अंगीकार किया।

ईरोड- सुश्रावक श्री परबतराजजी भण्डारी सुपुत्र श्री दौलतराज जी भण्डारी (दुंधाड़ा वाले) का 78 वर्ष की उम्र में 14 जुलाई 2013 को स्वर्गवास हो गया। शान्त स्वभावी सुश्रावक साधु संतों की सेवा में अग्रणी रहते थे। आप प्रतिदिन सामायिक करते थे।

नसीराबाद- सुश्रावक श्री विनोदकुमारजी जैन सुपुत्र श्री ताराचंदजी जैन (मुणोत) का 51 वर्ष की आयु में हृदयाघात से स्वर्गगमन हो गया। मरणोपरान्त आपके नेत्रदान किये गए।

उदयपुर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री अभयसिंह जी बोर्दिया (जाश्मा वाले) का 16 अगस्त 2013 को हृदयाघात से आकस्मिक निधन हो गया।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

जीवन-बोध क्षणिकाएँ

श्री यशवन्तमुनि जी म.सा.

सही अन्दाज

दूसरों के दोष कर
नजर-अन्दाज,
यही है जीवन जीने का
सही-सही अन्दाज।

नियम

आहार और आँख का
न हो असंयम,
ले ले साधक
सबसे पहले यही नियम।

जले पर नमक

जले पर नमक की तरह
लगेगा जब भौतिक-सुख,
तब दूर हो जायेगा
समस्त-दुःख।

-संकलित

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड का परीक्षा परिणाम घोषित

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 30 जून 2013 को आयोजित परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के नामांक (रोल नं.) एवं अस्थायी वरीयता सूची प्रकाशित की जा रही है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के रोल नं. प्रकाशन में यद्यपि सावधानी रखी गई है, तथापि सन्देह होने पर बोर्ड कार्यालय की सूचना को ही प्रमाण माना जाए। इस परीक्षा में 308 केन्द्रों पर 6046 परीक्षार्थियों ने भाग लिया। परिणाम 69.69 प्रतिशत रहा।

यदि कोई परीक्षार्थी पुनर्मूल्यांकन कराना चाहे तो सादा कागज पर प्रार्थना-पत्र व 25 रूपये का शुल्क M.O. द्वारा शिक्षण बोर्ड कार्यालय में दिनांक 15 सितम्बर 2013 तक भिजवा सकते हैं। विलम्ब से प्राप्त आवेदन-पत्र स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

अस्थायी वरीयता सूची

जैन धर्म परिचय (प्रथम कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
90141	मंगल पारख	औरंगाबाद	98.50	प्रथम
89671	सुभांगी चोरडिया	निफाड़	98.25	द्वितीय
88011	कल्पना जैन	विजयवाड़ा	98.00	तृतीय

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
76790	वंदना नाहर	चांगोटोला	99.75	प्रथम
82702	आशा पींचा	सरस्वतीनगर, जोधपुर	99.50	द्वितीय
86129	प्रीतेश जैन	धुलिया	99.50	द्वितीय
75415	सुमन ओस्तवाल	तिरूकोइलूर(चेन्नई)	99.00	तृतीय
90404	नताशा लोढ़ा	परली वैजनाथ(महा.)	99.00	तृतीय

जैन धर्म प्रथमा (तृतीय कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
81344	वर्षा जैन	अडावद (महा.)	99.50	प्रथम
81333	मनीषा जामड़	खामगांव (महा.)	99.00	द्वितीय
79494	कविता बांठिया	गुलाबनगर, जोधपुर	98.50	तृतीय

जैन धर्म मध्यमा (चतुर्थ कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
71694	मंगला बनवट	छनेरा	99.00	प्रथम
71995	सारिका जैन	भटिण्डा	98.50	द्वितीय
76674	सुरुचि जैन	दिल्ली	98.00	तृतीय

78196	लता बाघमार	टी.नगर (चेन्नई)	98.00	तृतीय

जैन धर्म चन्द्रिका (पाँचवी कक्षा)

81552	कोमल भंसाली	शक्तिनगर, जोधपुर	99.50	प्रथम
69004	अरूणा वैद	अमरावती	99.00	द्वितीय
88716	प्रीति छल्लाणी	गंगाखेड़	99.00	द्वितीय
62766	वर्षा भण्डारी	वणी	98.00	तृतीय

जैन धर्म विशारद (छठी कक्षा)

64615	खुशी कटारिया	पीपाड़सिटी	98.00	प्रथम
85444	कुसुम कोठारी	किशनगढ़	97.75	द्वितीय
83022	आरती गाँधी	ताम्बरम् (चेन्नई)	97.50	तृतीय

जैन धर्म कोविद (सातवीं कक्षा)

63502	भारती गाँधी	पुणे	99.00	प्रथम
58909	खुशबू जैन	अलीगढ़ (टोंक)	98.00	द्वितीय
59836	सीमा लुंकड़	वेस्ट सेदापेठ (चेन्नई)	97.50	तृतीय

जैन धर्म भूषण (आठवीं कक्षा)

58594	रेणुका जैन	जम्मू	98.00	प्रथम
65726	आरती चोरडिया	जामनेर	95.50	द्वितीय
63976	चविता जैन	जयपुर	93.50	तृतीय

जैन सिद्धान्त प्रभाकर-पूर्वार्द्ध (नवमीं कक्षा)

68921	चन्दना चोरडिया	जामनेर	94.00	प्रथम
75842	इन्दु कवाड़	सरस्वतीनगर,जोधपुर	93.00	द्वितीय
63406	वैभवी भण्डारी	नाशिक	91.00	तृतीय

जैन सिद्धान्त प्रभाकर-उत्तरार्द्ध (दसवीं कक्षा)

54048	मीना ललवानी	मालेगांव केम्प	98.00	प्रथम
58389	सुशीला समदड़िया	जलगांव	94.00	द्वितीय
57902	नितल नाहर	मालेगांव केम्प	93.50	तृतीय

जैन सिद्धान्त रत्नाकर पूर्वार्द्ध (ग्यारहवीं कक्षा)

74957	आरती चौधरी	गोरेगांव	93.00	प्रथम
75052	अनीता गोलेच्छा	अम्बातूर (चेन्नई)	88.50	द्वितीय
64550	दीपाली श्रीश्रीमाल	जालना	85.00	तृतीय

जैन सिद्धान्त रत्नाकर-उत्तरार्द्ध (बारहवीं कक्षा)

59854	ललिता नाहर	वेस्ट सेदापेठ(चेन्नई)	98.00	प्रथम
72247	मनीषा शाह	नागपुर	97.00	द्वितीय
72027	नीलम जैन	सार्दुलगंज	96.50	तृतीय

शेष परिणाम बोर्ड की वेबसाइट पर देखा जा सकता है-www.jainratnaboard.com

5 जनवरी 2014 को जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ा) की परीक्षा आयोजित होगी।

सुरेश बी. चोरडिया	नवरतन गिड़िया	धर्मचन्द जैन	शिक्षण बोर्ड
संयोजक	सचिव	रजिस्ट्रार	कार्यालय
9444028841	9414100759	9351589694	0291-2630490

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता परिणाम

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आयोजित)

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (38) का परिणाम

जिनवाणी जून, 2013 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 220 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- शकुन्तला जैन-लुधियाना (पंजाब)

द्वितीय पुरस्कार- कल्पना धाकड़-गुड़गांव (हरियाणा)

तृतीय पुरस्कार- अरुणा जैन-होशियारपुर (पंजाब)

सान्त्वना पुरस्कार (5)- 1. मोनिका जैन-इन्दौर (मध्यप्रदेश), 2. सुशीला भण्डारी-बैंगलोर (कर्नाटक), 3. निर्मला भूषणजी लुणावत-पूना (महा.), 4. सुरेश जैन-चेन्नई (तमिलनाडू), 5. शिल्पा पी. सुराणा-जलगांव (महा.)।

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (39) का परिणाम

जिनवाणी जुलाई, 2013 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 194 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्तकर्ता विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- सरोज नाहर-दिल्ली

द्वितीय पुरस्कार- प्रमिला विनोद कुमार जी बोहरा-जैतारण (राज.)

तृतीय पुरस्कार- राजेन्द्रकुमार चौपड़ा-जबलपुर (मध्यप्रदेश)

सान्त्वना पुरस्कार (5)- 1. कविता गादिया-चेन्नई (तमिलनाडू), 2. हीरा रमेश कर्णावट-अहमदनगर (महा.), 3.सौ. सविता पीयूष जी चौरड़िया-परोल (महा.), 4. संगीता प्रवीण रांका-फरीदाबाद (हरियाणा), 5. लीलाबाई ए.कोठारी-अहमदनगर (महा.)।

सूचना:- प्रतिभागियों को सूचित किया जाता है कि वे अपने अंक जानने के लिए अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमा जी लोढ़ा (09829019396) अथवा महासचिव श्रीमती बीना जी मेहता (09772793625) से सम्पर्क करें।

केन्द्रीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर सूचना

स्वाध्यायियों के ज्ञान में उत्तरोत्तर विकास हो, इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा समय-समय पर स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाते हैं। इसी कड़ी में समस्त स्वाध्यायियों को सूचित करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ द्वारा **दिनांक 02 से 06 अक्टूबर 2013 तक 'पंच दिवसीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर' सवाईमाधोपुर (राज.)** में **परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा** के पावन सान्निध्य में आयोजित किया जा रहा है। इस शिविर में निम्नांकित योग्यता में से एक भी योग्यता प्राप्त स्वाध्यायी भाग ले सकेंगे-

1.श्री स्था. जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के स्वाध्यायी हों एवं पर्युषण सेवा देते हों।
2.अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की पंचम परीक्षा उत्तीर्ण हों।
3.सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल कण्ठस्थ हो।

उक्त शिविर में कुशल प्रशिक्षकों द्वारा **अन्तगड़सूत्र वाचन, प्रवचन शैली, भजनकला एवं आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षाओं के पाठ्यक्रम** के साथ ही **आध्यात्मिकता एवं नैतिकता** को पुष्ट करने वाले विविध विषयों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। **विशेषतः इस शिविर में प्रख्यात प्रशिक्षकों द्वारा वक्तृत्व कला विषय का प्रभावी प्रतिपादन किया जाएगा।** शिविर की नियमावली एवं आवेदन पत्र संलग्न है। प्रदत्त आवेदन पत्र पूर्णतः भरकर **25.09.2013** से पूर्व आवश्यक रूप से अधोलिखित पतों में से किसी एक पर यथाशीघ्र प्रेषित करावें तथा स्वीकृति प्राप्त करें। बिना पूर्व आवेदन पत्र व स्वीकृति के शिविर में प्रवेश देना सम्भव नहीं होगा।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ
घोड़ों का चौक,
जोधपुर-342001 (राज.)
फोनः 0291-2624891,2633679,
फैक्स-2636763, मो. 9460081112
E-mail : swadhyaysanghjodhpur@yahoo.co.in

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ
श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ
व्यंकटेश मंदिर के पीछे, गणपति नगर
जलगांव-425001 (महा.)
फोन नं. 0257-2232315
मो. 9422591423

श्री धर्मेन्द्र जी जैन
1/148, पर्ण कुटीर, आवासन मण्डल
सवाईमाधोपुर (राज.)
मो. 9460441678

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दु.नं.182-183 के ऊपर, बापू बाजार
जयपुर-302003(राज.)
फोन नं. 0141-2575997, 2570753

श्री राजेश जी जैन
नई मण्डी, पो. हिण्डौन सिटी-322230
जिला-करौली (राज.)
मो. 9529083690

श्री कन्हैयालाल जी जैन
सत्यम सुटिंग्स, 119, मुरली टैक्सटाईल्स
टॉवर, पूर रोड, भीलवाड़ा (राज.)
फोन नं. 01482-242812, 246028

श्री सुधीर जी सुराणा
C/o Swadhyay Bhawan
No. 24-25, Basin Water Works St.
Sowcarpet, Chennai-600079 (T.N.)
Ph. 044-25295143, 9380997333

श्री विरेन्द्र जी झामड़
म.नं. 5/179, मालवीय नगर
जयपुर (राज.)
फोन नं.0141-2554266,9414888043

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.), फोन-0291-2624891, 2633679

केन्द्रीय स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 02 अक्टूबर से 06 अक्टूबर 2013 तक

आवेदन-पत्र

शिविरार्थी का नाम..

पिता/पति का नाम..

जन्म तिथि......................आयु......................

पत्राचार का पूर्ण पता..

....

टेलीफोन नं.........................मोबाइल............................

फैक्स नं. ....ई-मेल..................................

शैक्षणिक योग्यता(व्यावहारिक)..

धार्मिक योग्यता..

..................शिक्षण बोर्ड की उत्तीर्ण कक्षा............................

पर्युषण सेवा..

शिविरों में सहभागिता..

संघ की गतिविधियों में योगदान..

....

विशेष रुचि..

व्यवसाय/सर्विस..

शिविर में भाग लेने के लिये योग्यता का आधार............................

....

दिनांक..............   **हस्ताक्षर आवेदनकर्ता**

नोट-आवेदन-पत्र 25 सितम्बर तक प्राप्त होने पर स्वीकृति भेजी जाएगी।

नियमावली एवं निर्देश

1. आवेदन पत्र में सारी सूचनाएँ सही एवं स्पष्ट भरें, काँट-छाँट नहीं करें। आवेदन-पत्र की फोटो-प्रति भी भरकर भिजवाई जा सकती है।
2. शिविर में केवल 15 से 60 वर्ष आयु के स्वाध्यायी ही भाग ले सकते हैं।
3. शिविरार्थियों को दिनांक 01.10.2013 को सायंकाल अथवा 02.10.2013 को प्रातः 7 बजे तक शिविर स्थल पर पहुँचना अनिवार्य है।
4. सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल अच्छी तरह से कण्ठस्थ कर पधारें, साथ ही शिक्षण बोर्ड की पिछली उत्तीर्ण कक्षा का पाठ्यक्रम याद करके पधारें।
5. सामायिक की वेशभूषा अनिवार्य रूप से साथ लेकर पधारें।
6. कम से कम प्रातः नवकारसी व्रत का पालन तथा रात्रि में तिविहार का पालन आवश्यक है।
7. 'आओ प्रत्याख्यान करें' को नियमित भरना होगा।
8. शिविरार्थी वे ही माने जायेंगे जो नियमों व दिनचर्या का पालन करते हुए पूर्ण शिविर अवधि पर्यन्त शिविरार्थी के रूप में रहेंगे।
9. महिला एवं छात्रा शिविरार्थी के लिए निर्धारित वेशभूषा (साड़ी/सलवार कुर्ती) रहेगी।
10. शिविर प्रभारी की बिना अनुमति के शिविर स्थल नहीं छोड़ सकेंगे।
11. शिविरार्थी अपने साथ जोखिम का सामान नहीं लावें।
12. आवेदन-पत्र भरकर जोधपुर कार्यालय अथवा पूर्वोक्त पते पर भिजवायें।
13. आपके द्वारा पठित विषयों में जो भी जिज्ञासाएँ हों, उन्हें अलग से नोट करके साथ में लेकर पधारें।
14. शिविर में पधारने वाले शिविरार्थियों को मात्र बस अथवा रेल का द्वितीय श्रेणी का मार्ग व्यय प्रदान किया जायेगा।

शिविर सम्बन्धी जानकारी के लिए निम्नांकित महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं- **1. श्री कुशल जी गोटेवाला, संयोजक-9460441570, 2. श्री राजेश जी भण्डारी, सचिव-94610313878, 3. श्री प्रकाश जी जैन, जलगांव-9370020005, 4. श्री प्रकाश जी सालेचा, जोधपुर-9414126279, 5. श्री मनोज जी संचेती, जलगांव-9422591423, 6. श्री कमलेश जी मेहता, जोधपुर-9414267824**

निवेदक

कुशलचन्द जैन गोटेवाला
संयोजक

राजेश भण्डारी
सचिव

सांवत्सरिक क्षमायाचना

महापर्व पर्युषण आत्मावलोकन, आत्म-आलोचन एवं विगत वर्ष में हुई भूलों के परिमार्जन का मंगलमय अवसर है। हम सर्वप्रथम पूज्य आचार्य भगवन्त, परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर, सभी गुरुभगवन्तों एवं पूज्या महासतीवृन्द के चरणों में नतमस्तक हो विगत वर्ष हमसे हुई अविनय आशातना के लिए क्षमायाचना करते हैं। महापुरुषों की प्रेरणाओं को जीवन में साकार कर हम स्वयं अपने जीवन में एवं संघ-सेवा में रही कमियों के लिये अन्तःकरण से क्षमाप्रार्थी हैं।

हम अपने द्वारा एवं सभी साथी कार्यकर्त्तागण द्वारा अपने प्रदत्त सम्पादन में रही कमियों एवं लिखने, बोलने, सम्पर्क एवं समन्वय करने में सदस्यों की भावनाओं को ठेस पहुँची हो उसके लिये आप सबसे अन्तःकरण से करबद्ध क्षमायाचना करते हैं। हमसे जाने-अनजाने हुई त्रुटियों/भूलों के लिये कृपया स्नेहिल हृदय से क्षमा कर अनुगृहीत करें।

क्षमाप्रार्थी

ज्ञानेन्द्र बाफना	पी.एस. सुराणा	आनंद चौपड़ा	मानेन्द्र ओस्तवाल
अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	महामंत्री	अतिरिक्त महामंत्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

कैलाशमल दुग्गड़	सम्पतराज चौधरी	विनयचन्द डागा
अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	मंत्री

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

पूर्णिमा लोढ़ा	मंजू भण्डारी,मीना गोलेच्छा	बीना मेहता
अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	महासचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर

जितेन्द्र डागा	विक्रम बाघमार, महावीरचन्द बोथरा	श्रेयांस मेहता
अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	महासचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर

कुशल गोटेवाला	राजेन्द्र कुम्भट	राजेश भण्डारी
संयोजक	सह संयोजक	सचिव

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर

सुरेश चोरडिया	राजेश कर्णावट	नवरतन गिड़िया
संयोजक	सह संयोजक	सचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

एवं

समस्त सदस्यगण, संचालन समिति एवं कार्यकारिणी

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावकसंघ व सहयोगी संस्थाएँ

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

21000/- जिनवाणी की स्तम्भ सदस्यता हेतु प्रत्येक

207 Shri N. Rajeshji Munoth, Choolai, Chennai (Tamilnadu)

4000/- मंडल के सत्साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

762 Shri Mahaveer Chandji Dhoka, Chanapatna, Ramnagarm (Knt)

1000/- जिनवाणी पत्रिका की 20 वर्षीय आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15092 से 15108 तक 17 सदस्य बने।

जिनवाणी हेतु साभार प्राप्त

10000/- श्री फुतरमलजी, राजेश कुमारजी, सम्पतराजजी बाघमार, चेन्नई, श्रीमती कुसुमलताजी बाघमार की पुण्य स्मृति में भेंट।

2100/- श्री उत्तमचन्दजी, महावीरचन्दजी, अशोक कुमारजी गाँधी, अजमेर, श्रीमती मैनाजी धर्मपत्नी स्व. श्री कानमलजी गाँधी निवासी खरवा-अजमेर का दिनांक 07 अगस्त 2013 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति भेंट।

2100/- श्री मांगीलालजी, कान्तिलालजी लूंकड़ (दुंदाड़ा वाले), बालोतरा, श्रीमती पुष्पादेवीजी धर्मपत्नी श्री मांगीलाल जी लूंकड़ की पावन स्मृति में।

1602/- श्रीमती ललिताजी महेन्द्रजी गांग, सूरत, स्व. भ्राता श्री सुरेन्द्रमलजी गांग-जोधपुर, के प्रथम पुण्यस्मृति दिवस पर रुपये 1101/- एवं श्रीमती ललिताजी गांग-सूरत के जन्म दिवस पर रुपये 501/- सप्रेम भेंट।

1500/- श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल, बैंगलोर, पूज्य आचार्यप्रवर श्री विजयराजजी म.सा. एवं पूज्य आचार्य श्री ज्ञानचन्दजी म.सा. के पावन सान्निध्य में शालीनता पूर्ण जैन भागवती दीक्षा सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1101/- श्री लल्लूलालजी, गजेन्द्र कुमारजी जैन (पुसेदा वाले), सवाईमाधोपुर, चि. जितेन्द्रजी संग सौ.कां. श्वेताजी (सुपुत्री श्री गौतमचन्दजी जैन-जरखोदा वाले) के शुभविवाहोत्सव की खुशी में सप्रेम भेंट।

1101/- श्री लक्ष्मीनारायणजी, ऋषभचंदजी जैन, सुमेरगंज मण्डी, अपनी सुपुत्री कु. मुदिताजी के प्रथम जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1101/- श्री रमेशचन्दजी, सुरेशचन्दजी जैन, इन्दौर, चि. रोहित संग रानूजी (सुपुत्री श्री कुशलचंदजी गोटेवाला-सवाईमाधोपुर) के शुभविवाहोत्सव की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री गम्भीरमलजी, सागरमलजी जैन (खातौली वाले), बजरिया-सवाईमाधोपुर, चि. अनिलजी जैन के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री नरेशचन्दजी, विनोद कुमारजी जैन (डांगरवाड़ा वाले), इन्दौर, चि. ऋषभ संग दीपिका के शुभ विवाहोत्सव की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री कमलचन्दजी बैद, जयपुर सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती निर्मलाजी राजेन्द्रजी कोठारी, दूदू, चि. रविजी कोठारी सुपौत्र श्रीमती उमरावकँवरजी गोरधनलालजी कोठारी IIT-JEE (Advance) 2013 की परीक्षा AIR 839 के साथ उत्तीर्ण कर IIT कानपुर में प्रवेश होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री राकेश कुमारजी, मुकेश कुमारजी एवं श्रीमती उर्मिलाजी जैन, रूपवास-भरतपुर, सुश्रावक श्री महावीरप्रसादजी सुपुत्र श्री भौंरीलालजी जैन का दिनांक 21 जुलाई 2013 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री विजय कुमारजी ढड्ढा, बीकानेर, श्रीमती मैनादेवीजी ढड्ढा द्वारा 11 की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री बंशीलालजी, भीकमचन्दजी बाघमार (कोसाणा वाले), कानपुर, परम श्रद्धेय पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सवाईमाधोपुर में दर्शन, वन्दन करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री मुकेश कुमारजी, विमल कुमारजी, राजेश कुमारजी जैन, सवाईमाधोपुर, क्षेत्रीय प्रधान श्री मुकेश कुमारजी जैन द्वारा पूज्य आचार्य भगवन्त के सवाईमाधोपुर चातुमार्स में नौ दिवसीय तपस्या पावन सान्निध्य में सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री कमलकिशोरजी, अभय कुमारजी कांकरिया, चेन्नई, सौ.कां. सोनाजी सुपुत्री श्रीमती उर्मिलाजी-कमलकिशोरजी का शुभविवाह चि. विक्रमजी भण्डारी के संग दिनांक 15 जुलाई 2013 को सानन्द सम्पन्न होने एवं पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सवाईमाधोपुर में दर्शन, वन्दन करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री मुरारीलालजी जैन, परवेणी-अलवर, सुश्री मोनाजी जैन का भारतीय प्रशासनिक सेवा में 537वीं श्रेणी प्राप्त करने पर आचार्य श्री के दर्शन, वन्दन करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्रीमती सूरजजी हेमराजजी सुराणा, जयपुर, दौहित्री सुश्री प्रज्ञाजी सुपुत्री श्रीमती सुनीताजी-त्रिलोकचन्दजी कूमट-ब्यावर का आई.पी.सी.सी. प्रथम प्रयास में अखिल भारतीय स्तर पर 36वीं श्रेणी से उत्तीर्ण होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री अमितजी जैन, बैंगलोर, यू.एस.ए. में दो माह के व्यापारिक दौरे के पश्चात् सकुशल स्वदेश लौटने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री दीपक जी, मनीष जी आंचलिया, जोधपुर, श्री जसवंतराज जी आंचलिया सुपुत्र स्व. श्री सोहनराजजी आंचलिया का 18 जुलाई, 2013 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री पी.एम. चौपड़ा, जोधपुर, श्री विजय जी चौपड़ा की पावन पुण्य स्मृति में।

1100/- श्रीमती सौभाग्यकंवर जी गुलेच्छा, ब्यावर, अपनी सुपौत्री सौ.कां. मोनिका सुपुत्री श्रीमती सरला-ललित कुमार जी गुलेच्छा का चिरंजीव अनूप जी लोढ़ा सुपुत्र श्रीमती सरलाजी स्व. श्री जिनेन्द्र जी लोढ़ा के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री प्रकाशकंवर जी मोहनोत, जोधपुर, अपने धर्मसहायक स्व. श्री श्यामसिंह जी मोहनोत की पावन पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/- श्री योगेशकुमारजी-श्रीमती प्रकाश जी सोलंकी, जालोर, पूज्य पिताजी श्री सायरमल जी सोलंकी (पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष) की 42 वीं पुण्य स्मरण तिथि प्र भावांजलि स्वरूप।

1100/- श्री देवेन्द्रनाथ जी मोदी-श्रीमती कमला जी मोदी, लोकेन्द्रजी-ऋतुजी, लोरी मोदी,

जोधपुर, स्व. बहन श्रीमती विमला जी भण्डारी धर्मपत्नी स्व. श्री रणजीत सिंह जी भण्डारी के 24 वें पुण्य स्मरण दिवस पर सादर श्रद्धांजलि स्वरूप भेंट।

1100/- श्री विजयकुमार जी खिंवसरा, माण्डल, जिला-जलगांव, परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत-सती मण्डल के दर्शन लाभ के शुभ प्रसंग पर।

1100/- श्रीमती मंजूजी, संदीपजी, सानू एवं ध्रुव धारीवाल, जोधपुर, स्व. श्री नरेन्द्रकुमार जी धारीवाल की 13 वीं पुण्यतिथि पर भावांजलि स्वरूप।

अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड हेतु साभार प्राप्त

30000/- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई, पुस्तक प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

15000/- श्री नवरतनजी, ललितकुमारजी, हेमन्तकुमारजी, विमलकुमारजी बाफना, चेन्नई, पुस्तक प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

आगामी पर्व

भाद्रपद शुक्ला 8, शुक्रवार	13.09.2013	अष्टमी
भाद्रपद शुक्ला 14, बुधवार	18.09.2013	चतुर्दशी
भाद्रपद शुक्ला 15, गुरुवार	19.09.2013	पक्खी
आश्विन कृष्णा 8, शुक्रवार	26.09.2013	अष्टमी
आश्विन कृष्णा 14, शुक्रवार	04.10.2013	चतुर्दशी, पक्खी
आश्विन शुक्ला 7, शुक्रवार	11.10.2013	आयंबिल ओली प्रारम्भ
आश्विन शुक्ला 8, शनिवार	12.10.2013	अष्टमी
आश्विन शुक्ला 14, गुरुवार	17.10.2013	चतुर्दशी
आश्विन शुक्ला 15, शुक्रवार	18.10.2013	पक्खी, आयंबिल ओली पूर्ण
कार्तिक कृष्णा 8, रविवार	27.10.2013	अष्टमी
कार्तिक कृष्णा 14, शनिवार	02.11.2013	चतुर्दशी, पक्खी
कार्तिक कृष्णा 30, रविवार	03.11.2013	भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक
कार्तिक शुक्ला 4,5, गुरुवार	07.11.2013	ज्ञान पंचमी
कार्तिक शुक्ला 6, शुक्रवार	08.11.2013	आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 51 वां दीक्षा दिवस
कार्तिक शुक्ला 8, रविवार	10.11.2013	अष्टमी
कार्तिक शुक्ला 14, शनिवार	16.11.2013	चतुर्दशी
कार्तिक शुक्ला 15, रविवार	17.11.2013	पक्खी, चातुर्मास पूर्ण, वीर लोंकाशाह जन्मदिवस

जिनवाणी के पाठकों हेतु सूचना

जिनवाणी का आगामी अंक पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को समर्पित होगा, जिसे अक्टूबर-नवम्बर 2013 के संयुक्तांक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। अतः अक्टूबर 2013 जिनवाणी अंक पृथक् रूप से उपलब्ध नहीं हो सकेगा।

-विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

स्वप्निका पर अभिमत

प्रियंका गोगड़, हुबली

स्वप्निका के निमित्त से प्रार्थना का नियम हमारे घर में चल रहा है। सभी घर वाले साथ बैठकर प्रार्थना करते हैं, तो सासू माँ बहुत खुश होती है। परिवार में अपनापन बढ़ रहा है। संक्षेप में मेरा चिन्तन प्रस्तुत है-

आपका ये स्वप्निका का उपहार,
ले आया घर में प्यार-दुलार।
आपका ये स्वप्निका का उपहार,
ले आया घर में त्याग-प्रत्याख्यान।।
होती है जीवों की रोज रक्षा,
व्रत नियमों की रहने लगी पिपासा।।
सुबह होती इसे पढ़कर,
रात होती इसे समझकर।।
करते दिन की शुरुआत का काम,
करके तीर्थंकर और उनकी माता को प्रणाम।।
स्वप्न आँखों में आगे चलते,
जैसे हम भी चौदह स्वप्न के झूले में झूलते।।

आचार्यश्री हीराचन्द्र दीक्षा अर्द्धशताब्दी विशेषांक के प्रकाशन हेतु सबसे हार्दिक सहयोग का आह्वान

परम हर्ष का विषय है कि परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की दीक्षा अर्द्धशताब्दी की पूर्णता के अवसर पर जिनवाणी का विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। अक्टूबर-नवम्बर 2013 में प्रकाश्यमान इस अंक हेतु इस बार विज्ञापन आमन्त्रित न कर 5100/- (पाँच हजार एक सौ रुपये मात्र) की राशि के सहयोग की योजना बनायी गई है, ताकि अधिकाधिक श्रद्धालु अपना श्रद्धापूर्ण सहयोग अर्पित कर सकें। 15 अक्टूबर 2013 तक 5100/- रुपये या उससे अधिक की राशि प्रेषित करने वाले महानुभावों के नाम जिनवाणी के विशेषांक में प्रकाशित किए जायेंगे। आप अपनी राशि जिनवाणी के **SSBJ Bank A/c No. 51026632986, IFSC No.SBBJ 0010843** में सीधे जमा कराकर सूचित कर सकते हैं। 'जिनवाणी' के नाम पर ड्राफ्ट, चैक एवं नकद राशि भी स्वीकार्य है। आप यह राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाज़ार, जयपुर के पते पर प्रेषित करावें।

-विनयचन्द डागा-मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर (राज.)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

क्रोध पर विजय प्राप्त करनी हो तो क्षमा धारण करें।
– आचार्यश्री हस्ती

जोधपुर में प्लॉट, मकान, जमीन, फार्म हाउस खरीदने व बेचने हेतु सम्पर्क करें।

पद्मावती
डेवलपर्स एण्ड प्रोपर्टीज

महावीर बोथरा
09828582391

नरेश बोथरा
09414100257

292, सनसिटी हॉस्पिटल के पीछे, पावटा, जोधपुर 342001 (राज.)
फोन नं. : 0291-2556767

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अहंकार की तुष्टि ही सबसे बड़ी विकृति है।

- आचार्य श्री हीरा

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

 # 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhraj Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurav, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

सामायिक वह महती साधना है, जिसके द्वारा जन्म-जन्मान्तरों के संचित कर्म-मल को नष्ट किया जा सकता है ।

BALAJI AUTOS

(Mahindra & Mahindra Dealers)
618, 619, Old No. 224, C.T.H. Road
Padi, Mannurpet, Chennai - 600050
Phone : 044-26245855/56

BALAJI HONDA

(Honda Two Wheelers Dealers)
570, T.H. Road, Old Washermenpet, Chennai - 600021
Phone : 044-45985577/88
Mobile : 9940051841, 9444068666

BALAJI MOTORS

(Royal Enfield Dealers)
138, T.H. Road, Tondiarpet, Chennai - 600081
Maturachaiya Shelters,
Annanagar
Mobile : 9884219949

BHAGWAN CARS

Chennai - 600053
Phone : 044-26243455/66

With Best Compliments from :

Parasmal Suresh Kumar Kothari
Dhapi Nivas, 23, Vadamalai Street,
Sowcarpet, Chennai - 600079
Phone : 044-25294466/25292727

Gurudev

SURANA TM
yes, the best TMT RE-BARS

DRI Plant

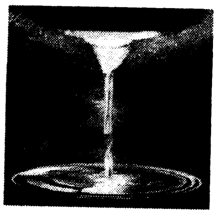
Electric Arc Furnace

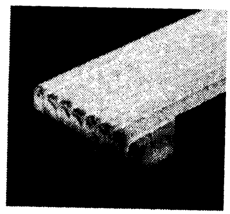
Billets

Rolling Mill

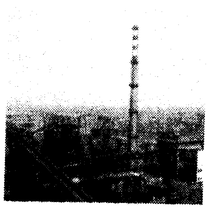
Captive Power Plant

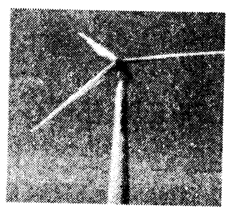
Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय ! हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त
रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल
के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHIVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

आदरणीय रत्नबंधुवर,

रत्न संघ के अष्टम पट्टधर परम पूज्य आचार्य भगवंत 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., पंडितरत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सतीमण्डल की असीम कृपा तथा रत्नसंघ के संघनिष्ठ गुरु भक्तों के पूर्ण सहयोग से गत सात वर्षों से मेधावी छात्र-छात्राओं की शैक्षणिक उन्नति एवं नैतिक व आध्यात्मिक जीवन में अभिवृद्धि करने के लिए छात्रवृत्ति योजना चल रही है। संघ द्वारा इस योजना का विस्तार कर दिया गया है।

निवेदन है कि अपने परिवार में आई खुशियों को मूर्त रूप देने के लिए छात्रवृत्ति योजना में रुपये 3000/-, 6000/- व 9000/- का अर्थ सहयोग करके दिवस विशेषों को चिरस्थायी बनायें एवं पुण्य कमायें।

आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पण्डितरत्न उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दीक्षा अर्द्धशती वर्ष के शुभ अवसर पर छात्रवृत्ति योजना में 50,000/- रुपये या एक छात्र के लिए 12000/- रुपये अथवा उनके गुणक में छात्रवृत्ति राशि का अतिशीघ्र अर्थ सहयोग करावें।

ज्ञान का एक दीया जलाइये, सहयोग के लिए आगे आइए
दीक्षा अर्द्धशती वर्ष में लाभ उठाकर आनन्द पाइये

इस योजना में जो गुरुभक्त अर्थ सहयोग करना चाहते हैं, वे चैक, ड्राफ्ट या नकद राशि जमा करा सकते हैं या भेज सकते हैं। कोष का खाता विवरण इस प्रकार है-

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address- AXIS Bank LTD. Anna Salai, Chennai(T.N.) IFSC Code- UTIB0000168
PAN No.- AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें-

B.Budhmal Bohra
No.-53, Erullappan street, Sowcarpet, Chennai-600079 (T.N.), Telefax No.- 044-42728476

अधिक जानकारी एवं सहयोग करने के लिए सम्पर्क करें-

Name	Place	Contact No.	Name	Place	Contact No.
Ashok Kavad	Chennai	9381041097	Sumtichand Mehta	Pipar	9414462729
Budhmal Bohra	Chennai	9444235065	Manoj Kankaria	Jodhpur	9414563597
Praveen Karnaavat	Mumbai	9821055932	Kushalchand Jain	Sawai Madhopur	9460441570
Mahendra Bafna	Jalgaon	9422773411	Rajkumar Golecha	Pali	9829020742
Ravindra Jain	Sawai Madhopur	9413401835	Harish Kavad	Chennai	9500114455
Suresh Chordia	Chennai	9444028841	Jitendra Daga	Jaipur	9829011589
Vikram Bagmar	Chennai	9841090292	Sheryansh Mehta	Jodhpur	9799506999

जय गुरु हस्ती
जय गुरु हीरा जय गुरु मान

अगर व्यक्ति प्रभु के मार्ग पर चले तो कहीं भी अशान्ति नहीं हो सकती।
- आचार्य श्री हीरा

सांखला परिवार की ओर से निवेदन

हम :

चौबीसों तीर्थंकरों के चरण
कमलों पर मस्तक रखते हैं
और
विनम्रता तथा गौरव के साथ
जाहिर करते हैं कि
"जिनवाणी" के
उत्कर्षदायी तथा पुण्यात्मक कार्यों में
हमारा सहर्ष
सदैव सहकार रहेगा।

मदन मोहन सांखला,
सौ. हेमलता मदन सांखला
मेहुल मदन सांखला
सौ. प्रणिता मेहुल सांखला और
बेबी बुणम मेहुल सांखला

MAXHEAL
MAXHEAL Group of Companies

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

गुरु हीरा- मान का 50 वर्ष का, हुआ अनुभव का दीक्षा पथ,
'स्वप्निका' अपनाकर सब जन, शीघ्र ही पायें मुक्ति रथ।
'धनपत' कहे धन का पत नहीं, मुक्ति का पथ चाहिए
स्वप्निका को सुश्रद्धा भरें, इसमें नहीं विलम्ब चाहिए।
यह कार्य अविलम्ब चाहिए....

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road,
Vile Parle (E), Mumbai - 400 057
Tel. : (O) 26185801 / 32940462
E-MAIL : bhansalidevelopers@yahoo.com

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

दीक्षा अर्द्ध शताब्दी सुनहरी, गुरु हीरा - गुरु मान की,
वन्दना हमारी नित चरणों में, शासन के मतिमान की।
संघ की पहल स्वप्निका मन भाई, 'उम्मीद' को खरा बनाया।
तन-धन को तो सब ही सजाते, इसने तो आतम को सजाया।

With best compliments from

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-21/2012-14
मुद्रण तिथि दिनांक 5 से 8 सितम्बर, 2013
वर्ष : 71 ★ अंक : 09 ★ मूल्य : 10 रु.
डाक प्रेषण तिथि 10 सितम्बर, 2013 ★ भाद्रपद, 2070

।।जय गुरु हीरा।। ।।जय गुरु मान।।

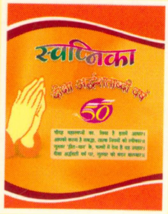

स्वप्निका

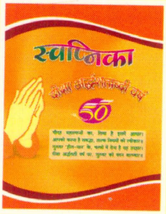

आत्मीय आमंत्रण

आगामी **10 नवम्बर 2013, रविवार** को होने वाली स्वप्निका की **मुख्य लिखित परीक्षा** हेतु परीक्षा में भाग लेकर प्रश्न-पत्र का अनुभव करें एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त कर दीक्षा अर्द्धशताब्दी का स्मृति चिह्न जीवन में संजोयें।

अनिवार्य मंत्र

(ध्यान देने योग्य विशेष बिन्दु)

1. 23 मई, 2013 को हुई परीक्षा के पूर्व किए गए सभी रजिस्ट्रेशन रद्द कर दिए गए हैं, अत: रजिस्ट्रेशन पुन: करवाना अनिवार्य है। रजिस्ट्रेशन अपने केन्द्र प्रतिनिधि के पास अथवा निम्न व्यक्तियों में से किसी एक के पास करवाया जा सकता है :-
   1. उर्मिला जी बोथरा - 9314501856 2. नमन मेहता - 9414116766
   3. डॉ. मंजुला जी बम्ब - 9314292229 4. गजेन्द्र जैन - 7737801643
   5. मीना जी गोलेच्छा - 9314466039
2. रजिस्ट्रेशन 10 अक्टूबर, 2013 तक करवाना अनिवार्य है। इसके पश्चात् रजिस्ट्रेशन मान्य नहीं होगा।
3. परीक्षा दिवस को रजिस्ट्रेशन नं. नहीं दिए जाएँगे, इस बात का विशेष ध्यान रखें।
4. अपने स्थानीय केन्द्र की बजाय किसी अन्य केन्द्र पर परीक्षा देने के इच्छुक-जन प्रतियोगिता समिति को, सदस्यों को पहले अवश्य सूचित करावें। ताकि अग्रिम व्यवस्था को अंजाम दिया जा सके ।
5. मॉडल पेपर हेतु फरवरी-2013 और परीक्षा की नियमावली हेतु जुलाई-2013 की जिनवाणी अवश्य देखें।
6. परीक्षा के परिणाम में कोई फेरबदल नहीं होगा, इसके संबंध में दी गई कोई भी दलील मान्य नहीं होगी। स्वप्निका प्रतियोगिता समिति द्वारा घोषित परिणाम ही अन्तिम माना जायेगा।
7. कृपया नियमों को प्राथमिकता प्रदान करें।

निवेदक : स्वप्निका प्रतियोगिता समिति।

विज्ञापन सौजन्य : कल्पतरू ग्रुप

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डामयण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर - 302003 से प्रकाशित । सम्पादक - डॉ. धर्मचन्द जैन